04 - पाकिस्तान बारूद के ढेर पर!

05 - वकीलों की सेवाएं उपभोक्ता संरक्षण कानून में नहीं

A Daily News Magazine
भोपाल
सोमवार, 27 मई, 2024

06- 70 पटवारियों के 35 दल बनाकर 7 जून तक सीमांकन प्रकरणों का करें...

07- छाया पानी की व्यवस्था करना ही मानव धर्म है

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 259 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

राख समय है
राख ही हाथ आयेगी .
राख की तासीर है जमती
चली जायेगी .
हुकुम बजाता है मौसम
हौल से ओल उठाती है माटी .
नख़रीली अदालत के
फ़ैसले तय करते
कहां जंगल नदी खेत
कौन सी फसल , कौन हरवाहा .
उम्मीद से है जनाना ,
राख के हैं पांव भारी .
आधा अधूरा सतमासा कि ज़िंदा
हराभरा जनमेगा .....
हिचकता सवाल कर ,
शर्माती उम्मीद रख .

- नवल शर्मा

प्रसंगवश

मप्र: ज्यादा एमएसपी के बाद भी किसान निजी मंडियों बेच रहे अनाज

इरम सिद्दीकी

जब मध्य प्रदेश के किसान अशोक लोनवंशी ने मार्च में देवास जिले में अपने 15 एकड़ खेत से 200 क्विंटल गेहूं की कटाई की, तो वह एक प्राइवेट मंडी में पहुंचे और पूरा स्टॉक 2300 रुपये प्रति क्विंटल की बाजार दर पर बेच दिया। आश्चर्य की बात यह है कि मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 125 रुपये के बोनस सहित 2400 रुपये के उच्च न्यूनतम समर्थन मूल्य की पेशकश के बावजूद लोनवंशी ने यह विकल्प चुना।

लोन्वंशी ने कहा, ÷मेरे बड़े बेटे की शादी थी और हमें नकदी की जरूरत थी। अगर हमने सरकार को बेच भी दिया, तो भी हमें एक या दो महीने बाद ही पैसा मिलेगा। हमारे लिए, एक महीने तक इंतजार करने के बजाय 100 रुपये कम पर बेचना और तुरंत पैसा प्राप्त करना बेहतर था।÷

लोन्वंशी का फैसला अनोखा नहीं है। मध्य प्रदेश में हजारों अन्य किसानों ने भी बोनस के साथ भी सरकारी खरीद केंद्रों के बजाय निजी मंडियों का विकल्प चुना है। ऐसा लाभ देने वाला एकमात्र अन्य राज्य ङ्क जिसने गेहूं का एमएसपी 2275 रुपये से बढ़ाकर 2400 रुपये कर दिया है ङ्क वह राजस्थान है। इस साल, एमपी अन्य प्रमुख गेहूं उत्पादकों में एकमात्र राज्य बन गया, जिसने खरीद में बड़ी गिरावट दर्ज की है। 2023-24 में (2,125 प्रति क्विंटल के एमएसपी पर) 70.69 लाख मीट्रिक टन की खरीद से, 2024-2025 में इसमें 32 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई और यह केवल 47.69 लाख मीट्रिक टन रह गई।इससे भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) द्वारा केंद्रीय पूल के लिए कुल संग्रह प्रभावित हुआ है, जो वर्तमान में 261 एलएमटी है, जो उनके 370 एलएमटी के लक्ष्य से लगभग 29 प्रतिशत कम है।

कम खरीद ने केंद्र सरकार को चिंतित कर दिया है, क्योंकि अच्छे फसल चक्र के साथ, एफसीआई राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) के तहत आवश्यकता को पूरा करने के साथ-साथ बेहतर बाजार हस्तक्षेप के लिए केंद्रीय गेहूं स्टॉक को बढ़ावा देना चाह रहा था। केंद्र सरकार के एक अधिकारी ने कहा, ÷वर्तमान में पीडीएस (सार्वजनिक वितरण प्रणाली) की जरूरतों को पूरा करने और बाजार में हस्तक्षेप के लिए पर्याप्त स्टॉक है। हालांकि, सरकार को बेहतर मूल्य नियंत्रण के लिए गेहूं आयात करने की ज़रूरत है या नहीं, यह आने वाले दिनों में निर्धारित किया जाएगा।÷

हालांकि इसका कारण बड़े पैमाने पर किसानों द्वारा स्टॉक जमा करना और निजी व्यापारियों द्वारा एमएसपी से बेहतर दरों पर खरीददारी बढ़ाना बताया गया है, लेकिन मध्य प्रदेश में बोनस के कारण सरकारी कीमतें अन्य जगहों की तुलना में अधिक हैं। इसके बावजूद अन्य राज्यों में खरीद अधिक हुई है। उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश में खरीद 2023-24 में 2.19 लाख मीट्रिक टन (एलएमटी) से बढ़कर 2024-25 में 8.92 एलएमटी हो गई, जबकि राजस्थान में यह 2023-24 में 4.37 एलएमटी से बढ़कर 2024-25 में 9.60 एलएमटी हो गई। आगे उत्तर में, पंजाब और हरियाणा ने क्रमशः 71 और 123.86 एलएमटी की खरीद की, जो पिछले वर्ष 63 एलएमटी और 120 एलएमटी से अधिक है।

देवास में ताजे कटे हुए गेहूं के खेत में, किसान अरुण कलिराणा जो बात कही वैसा ही अन्य लोग भी सोचते हैं, वह है ङ्क अनिश्चितता से भरे सरकारी वादों की प्रतीक्षा करने के बजाय हाथ में नकदी को प्राथमिकता देना। उन्होंने शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व वाली पिछली भाजपा सरकार का हवाला दिया, जिसने 2018 में बोनस की घोषणा की थी, लेकिन कभी वितरित नहीं किया, जिससे किसानों को काफी चिंता हुई। जबकि सीएम मोहन यादव के नेतृत्व में नवनिर्वाचित भाजपा सरकार ने 11 मार्च को 125 रुपये बोनस को मंजूरी दे दी, लेकिन किसान अभी भी संशय में हैं, खासकर पैसा मिलने में देरी के कारण। कलीराणा ने कहा, ÷20 मार्च के आसपास गेहूं बेचने के बावजूद, मेरा भुगतान एक महीने बाद आया। मुझे किसान समिति का कर्ज चुकाने के लिए अपना 85 क्विंटल स्टॉक बेचना पड़ा, यही वजह है कि मैंने इसे सरकार को बेच दिया, लेकिन सभी किसानों के लिए यह मजबूरी नहीं है।÷

खाद्य खरीद आंकड़ों के मुताबिक, जब किसानों को भुगतान के वितरण की बात आती है तो मध्य प्रदेश सबसे खराब प्रदर्शन करने वाला राज्य है, भुगतान प्रक्रिया में औसतन 243 घंटे या 10 दिन लगते हैं। इस बीच, रीवा में, जिन किसानों ने पिछले सप्ताह अपना गेहूं बेचा था, उन्हें उनका आधार भुगतान मिल गया है, लेकिन उनका दावा है कि उन्हें वादा किया गया बोनस नहीं मिला है। मप्र के मालवा क्षेत्र में गेहूं की यह फसल पहले से ही किसानों के लिए निराशाजनक रही है। सिंह ने कहा, ÷हमारा उत्पादन आधा हो गया है, जो हमें इस सीज़न में पहले से ही नुकसान पहुंचा रहा है। अगर सरकार बोनस का भुगतान नहीं करती है, तो हमें नुकसान होगा।÷

इंदौर में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. जेबी सिंह ने कहा कि दिसंबर में कोहरे के कारण उन किसानों की फसल प्रभावित हुई, जिन्होंने अक्टूबर की शुरुआत में बुआई की थी, लेकिन गेहूं के उत्पादन में समग्र गिरावट न्यूनतम थी।

मप्र सरकार के साथ खरीद केंद्र चलाने वाले मध्य भारत कंसॉर्टियम ऑफ फार्मर्स प्रोड्यूस ऑर्गेनाइजेशन के सीईओ योगेन्द्र द्विवेदी के अनुसार देरी से होने वाले भुगतान की संभावना ही किसानों को सरकार को बेचने से रोकने वाला एकमात्र कारक नहीं है। गेहूं की कुछ किस्मों के लिए निजी मंडियों में बेहतर दरों की चाहत भी एक प्रमुख कारण है।

मध्य प्रदेश में, किसान शरबती जैसे उच्च गुणवत्ता वाले गेहूं का उत्पादन करते हैं, जिसकी मंडियों में बहुत अधिक कीमत मिलती है। यही कारण है कि राज्य के खरीद केंद्रों पर लोग कम आते हैं। जहां तक भुगतान में देरी और खरीद की अन्य परेशानियों का सवाल है, यह हर साल ऐसा ही होता है।÷

इस बीच, मध्य प्रदेश में खरीद में गिरावट ङ्क जिसने 2020-21 में 125 एलएमटी की रिकॉर्ड-उच्च खरीद के साथ पंजाब को भी पीछे छोड़ दिया है ङ्क पर केंद्र सरकार द्वारा बारीकी से नजर रखी जा रही है। 23 अप्रैल को, केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने मप्र सरकार को एक पत्र जारी किया, जिसमें बेमौसम ओलावृष्टि और बारिश से फसल क्षति के कारण सरकार द्वारा खरीदे गए गेहूं के लिए गुणवत्ता नियमों में ढील दी गई। इसके बावजूद, कम खरीद स्तर के कारण सरकार को खरीद की समय सीमा 31 मई तक बढ़ानी पड़ी। 1 मई तक, सरकारी गोदामों में गेहूं का स्टॉक साल दर साल 10.3 प्रतिशत कम होकर 2008 के बाद सबसे निचले स्तर पर था।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

'144' वाली गर्मी, सड़कों पर 'कर्फ्यू' जैसा नजारा

नई दिल्ली (एजेंसी)। नौतपा का रविवार को दूसरा दिन था। मौसम विभाग ने राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, गुजरात के लिए हीटवेव का रेड अलर्ट जारी किया है। नौतपा के पहले दिन, यानी 25 मई को राजस्थान में गर्मी से 5 लोगों की मौत हो गई। यहां पिछले 3 दिनों में 22 लोगों की मौत हो चुकी है। राज्य का फलोदी देश का सबसे गर्म शहर रहा। यहां तापमान 50 डिग्री दर्ज किया गया। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में लोगों को गर्मी से बचाने के लिए ट्रैफिक सिग्नल की टाइमिंग आधी की गई है। यानी जहां सिग्नल 60 सेकेंड रेड रहता था, वहां 30 सेकेंड ही रेड रहेगा। महाराष्ट्र के अकोला में 45 डिग्री तापमान दर्ज किया गया। यह राज्य का सबसे गर्म शहर रहा। जिला कलेक्टर ने पब्लिक गैदरिंग रोकने के लिए शहर में धारा 144 लगाई है। मैदान से लेकर पहाड़ी इलाके तक लू की चपेट में हैं। राजस्थान के कई हिस्सों, एमपी-गुजरात में भीषण लू चल रही है।

- फलोदी देश का सबसे गर्म शहर, तापमान 50 डिग्री पहुंचा
- महाराष्ट्र के अकोला में गर्मी के चलते धारा 144 हुई लागू

लापरवाही की 'आग', दो शहरों में 34 लोगों की मौत

राजकोट गेम जोन में 28 तक पहुंचा मौत का आंकड़ा

राजकोट (एजेंसी)। गुजरात के राजकोट में शनिवार शाम 4.30 बजे टीआरपी गेम जोन में आग लगने से 28 लोगों की मौत हो गई। पहले 30 की मौत की जानकारी सामने आई थी। मगर एसपी क्राइम ने 28 की मौत की पुष्टि की। मृतकों में 12 बच्चे भी शामिल हैं। फायर ब्रिगेड की 8 टीमें करीब 3 घंटे की मशक्कत के बाद आग बुझा पाईं। 25 से ज्यादा लोगों का रेस्क्यू किया गया। अधिकारियों के मुताबिक, गेम जोन से अंदर-बाहर जाने का एक ही रास्ता था। वहीं फायर डिपार्टमेंट से एनओसी भी नहीं ली गई थी। चश्मदीद के मुताबिक- कालावड रोड स्थित इस गेम जोन में वीकेंड की वजह से 500 रुपए का टिकट 99 रुपए में दिया जा रहा था, इसलिए भीड़ ज्यादा थी। टीआरपी गेम जोन के मालिक युवराज सिंह सोलंकी, पार्टनर प्रकाश जैन, राहुल राठौड़ और मैनेजर नितिन जैन को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। हादसे के बाद चारों ने फोन बंद कर लिया था। किराए की 2 एकड़ जमीन पर तीन मंजिला गेम जोन 2020 में बनाया गया था। इसका स्ट्रक्चर लकड़ी और टीन शेड पर खड़ा था। कई जगह रिपेयरिंग और रेनोवेशन का काम भी चल रहा था। एक जगह सीढ़ी पर वेल्डिंग के दौरान निकली चिंगारी से ब्लास्ट हुआ और आसपास आग लग गई।

दिल्ली के चाइल्ड हॉस्पिटल में आग, 6 नवजात की मौत

- 5 बच्चों का रेस्क्यू, आशंका-ऑक्सीजन सिलेंडर में ब्लास्ट के बाद लगी आग

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के विवेक विहार स्थित एक चाइल्ड हॉस्पिटल में शनिवार 25 मई देर रात आग लग गई। हादसे में 6 नवजात की मौत हो गई। 5 का रेस्क्यू किया गया है। दो मंजिला बिल्डिंग के फर्स्ट फ्लोर पर न्यू बॉर्न बेबी केयर सेंटर था। इसमें कुल 12 बच्चे भर्ती थे। दिल्ली फायर सर्विस चीफ अतुल गर्ग ने ने बताया कि अभी आग लगने के कारणों का पता नहीं चला है। हालांकि, शुरुआती जांच में ऑक्सीजन सिलेंडर ब्लास्ट को आग लगने का कारण बताया जा रहा है। बेबी केयर सेंटर के नीचे ग्राउंड फ्लोर पर अवैध ऑक्सीजन सिलेंडर रीफिलिंग का काम चल रहा था।

भीषण गर्मी के बीच इंदौर समेत कई जिलों में बारिश

भोपाल में टेम्प्रेचर 45 डिग्री के पार, सीएम की अपील- लू और गर्मी से बचें

भोपाल (नप्र)। नौतपा के दूसरे दिन भोपाल में भीषण गर्मी पड़ रही है। दोपहर 2.30 बजे भोपाल में अधिकतम तापमान 44.8 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया। यह पिछले 11 साल में 5वां सबसे अधिक तापमान है। इससे पहले साल 2015 में 45 डिग्री, 2016 में 46.7 डिग्री, 2017 में 45.1 डिग्री, 2018 में 45.3 डिग्री और 2022 में टेम्प्रेचर 45.1 डिग्री रहा है।

नौतपा के पहले दिन शनिवार को दिन का तापमान 42.9 डिग्री रहा। न्यूनतम तापमान 29.4 डिग्री दर्ज किया गया। बता दें, मई के महीने में भोपाल में भीषण गर्मी पड़ने का ट्रेंड है। 10 में से 8 साल टेम्प्रेचर 44 डिग्री के पार पहुंच चुका है। साल 2016 में यह रिकॉर्ड

46.7 डिग्री रहा था। इस साल पहले पखवाड़े में गर्मी के तेवर नरम रहे, लेकिन 18 मई से भीषण गर्मी पड़ने लगी। 23 मई को पारा रिकॉर्ड 44.4 डिग्री पहुंच चुका है। इसके बाद भी गर्मी के तेवर तीखे रहे, लेकिन नौतपा में टेम्प्रेचर और भी बढ़ सकता है।

भीषण गर्मी और लू से अपना बचाव करें प्रदेशवासी: मुख्यमंत्री डॉ. यादव- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में जारी लू और भीषण गर्मी के प्रकोप के दृष्टिगत प्रदेशवासियों से लू से बचाव के लिए सावधानियां बरतने की अपील की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वर्तमान में प्रदेश में भीषण गर्मी का दौर चल रहा है और लू का प्रकोप बना हुआ है, ऐसे में बहुत आवश्यक होने पर ही घर से बाहर निकलें। उन्होंने कहा कि भीषण गर्मी में जरूरमंद लोगों को अपने जल स्रोतों से जल उपलब्ध कराएं, जो भी लोग कठिनाई में हैं, उनकी मदद करें।

अच्छे-अच्छों की गर्मी उतारने में एक्सपर्ट हैं सीएम योगी

- पीएम मोदी के निशाने पर सपा, माफियाओं को भी दी चेतावनी

मिर्जापुर (एजेंसी)। बांसगांव पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इंडिया गठबंधन पर बड़ा हमला बोला। पीएम ने कहा, कांग्रेस ने हमेशा देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ किया है। उन्होंने कहा, आज हमारा देश ब्रह्मोस मिसाइल बना रहा है। वो दिन दूर नहीं जब यूपी में भी ब्रह्मोस मिसाइल बनेगी। ब्रह्मोस मिसाइल ऐसी है जिसका खौफ दूर-दूर तक है। दुनिया के कई देशा में इस मिसाल की मांग रही है। लेकिन कांग्रेस को ये भी पसंद नहीं आया। जो देश भारत से ब्रह्मोस मिसाइल खरीदना चाहते थे, कांग्रेस सरकार ने उनके सामने भी रोड़े अटकाए। ये इंडिया गठबंधन वाले चाहते हैं भारत रक्षा क्षेत्र में न आत्मनिर्भर बने और न ही भारत में हथियार एक्सपोर्ट

करने की क्षमता पैदा हो। विदेशों से हथियारों का सौदा होता रहे और कांग्रेस की दलाली चलती रही। सपा पर निशाना साधते हुए पीएम मोदी ने माफियाओं को चेतावनी दी। पीएम मोदी ने कहा, योगी जी अच्छे-अच्छों की गर्मी उतारने में एक्सपर्ट हैं। उनके आने के बाद से यूपी का माहौल और मौसम दोनों बदल गया है। भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में जनसभा को संबोधित कर रहे पीएम मोदी ने कहा, हमारे यूपी में डिफेंस कॉरिडोर बन रहा है। देश का रक्षा निर्यात 21 हजार करोड़ रुपये से ऊपर पहुंच गया है। जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम ने लोगों से पूछा, डिफेंस कॉरिडोर बनाने वाली सरकार चाहिए या दिवाली वाली। दलाली करने वाली सरकार चाहिए। सपा-कांग्रेस को निशाने पर लेते हुए पीएम मोदी ने कहा, इंडी जमात वालों की राजनीतिक का मकसद तुष्टिकरण है।

म.प्र. में वाटरबॉडीज को अतिक्रमण मुक्त कराने चलेगा अभियान

नदी,तालाबों के किनारे डेवलप होंगे ग्रीन पार्क; सीएम यादव बोले-अभियान से जुड़ें प्रदेशवासी

भोपाल (नप्र)। एमपी में भीषण गर्मी के दौर में प्रदेश भर की वाटर बॉडीज (जल संरचनाओं) के संरक्षण और पुर्नजीवित करने के लिए 5 जून को पर्यावरण दिवस से अभियान शुरू किया जाएगा। 5 जून पर्यावरण दिवस से लेकर 15 जून गंगा दशमी तक प्रदेश भर में जल स्रोतों के संरक्षण के लिए जनप्रतिनिधि, अधिकारी सहभागी बनेंगे। इस पूरे अभियान के समन्वय का काम कलेक्टर करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि अभियान के दौरान नदियों और तालाबों से गाद या खाद के रूप में निकलने वाली मिट्टी, किसानों को खेतों में उपयोग के लिए उपलब्ध कराई जाएगी। जल संरचनाओं के अतिक्रमणों को जिला प्रशासन के माध्यम से मुक्त कराया जाएगा। ऐसे स्थानों को समाज के लिए संरक्षित किया जाएगा।

अभियान के संबंध में अधिकारियों को निर्देश जारी कर दिए गए हैं। प्रारंभिक रूप से यह अभियान 5 से 15 जून तक चलाया जाएगा। इसके बाद अभियान की अवधि बढ़ाई जा सकती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आशा है कि इस वर्ष पर्यावरण दिवस से गंगा दशमी तक सबकी सहभगिता के साथ पेयजल स्रोतों के संरक्षण के लिए प्रभावी काम होंगे।

जीआईएस तकनीक से होगी जियो टैगिंग- नमामि गंगे परियोजना के नाम से शुरू हो रहे जल स्रोतों के संरक्षण और पुनर्जीवन के विशेष अभियान के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायत एवं ग्रामीण विकास और नगरीय क्षेत्र में नगरीय विकास एवं आवास, नोडल विभाग होंगे। जल संरचनाओं के चयन और उन्नयन कार्य में जीआईएस तकनीक का उपयोग किया जाएगा। इन स्थलों की मोबाइल एप के माध्यम से जियो टैगिंग की जाएगी।

गंदे पानी का ट्रीटमेंट कर जल स्रोतों में छोड़ा जाएगा- सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से जल संरचनाओं के आसपास सफाई रखने, जल संरचनाओं के किनारों पर अतिक्रमण रोकने के लिए फेंसिंग के रूप में पौधरोपण करने जैसी गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाएगा।

और जल संरचनाओं के किनारों पर बफर जोन तैयार कर उन्हें हरित क्षेत्र या पार्क के रूप में विकसित किया जाएगा। जल संरचनाओं में मिलने वाले गंदे पानी के नाले-नालियों को स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत डायवर्शन के बाद शोधित कर जल संरचनाओं में छोड़ा जाएगा।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 45 °c

न्यूनतम 36°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 27 मई 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अब राम मंदिर परिसर में वीआईपी भी नहीं ले जा सकेंगे मोबाइल

राम मंदिर निर्माण समिति की बैठक में लिया गया फैसला, लागू किए गए सख्त नियम

अयोध्या (एजेंसी)। अब आप राम मंदिर परिसर में मोबाइल फोन नहीं ले जा सकेंगे। मंदिर निर्माण समिति में फैसला किया गया है कि 25 मई से राम मंदिर परिसर में मोबाइल फोन ले जाने पर कड़ी पाबंदी होगी। यह नियम आम लोगों पर ही नहीं बल्कि वीआईपी के लिए भी लागू होगा। शुक्रवार को नृपेंद्र मिश्र की अध्यक्षता में राम मंदिर निर्माण समिति की बैठक आयोजित की गई थी। इसमें राम मंदिर परिसर में सुरक्षा व्यवस्था पर व्यापक चर्चा की गई। मंदिर निर्माण समिति ने मंदिर निर्माण पूरा करने और परकोटा निर्माण की डेडलाइन भी तय कर दी है। राम मंदिर ट्रस्ट के ट्रस्टी डॉ. अनिल मिश्र के मुताबिक निर्माण कार्य की समीक्षा के बाद तय किया गया है कि दिसंबर 2024 तक मंदिर निर्माण का काम पूरा कर लिया जाएगा। इसके अलावा मंदिर के चारों ओर परकोटा का निर्माण भी मार्च 2024 तक पूरा हो जाएगा। इस परकोटे के अंदर ही राम मंदिर समेत अन्य देवताओं के मंदिर भी आएंगे। डॉ. अनिल मिश्र ने बताया कि

श्रद्धालुओं के लिए क्लॉकरूम की सुविधा उपलब्ध रहेगी। श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए ही मोबाइल बैन करने का फैसला किया गया है और यात्रियों को इसका सम्मान करना चाहिए। उन्होंने कहा, मंदिर परिसर के बाहर ही मोबाइल समेत अन्य कीमती सामान रखने की सुविधा उपलब्ध है। अब यात्रियों को व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करना है। उन्होंने बताया कि मंदिर के चारों ओर 14 फीट ऊंचा परकोटा बनाया जाएगा। चंपत राय ने बताया कि परकोटे के अंदर राम मंदिर के अलावा छह और मंदिर होंगे। इसमें भगवान शिव और हनुमान जी का मंदिर शामिल होगा। मंदिर परिसर में एक साथ 25 हजार लोग पहुंच सकेंगे। बता दें कि राम मंदिर का निर्माण नागर शैली में 2.7 एकड़ में किया गया है। इसकी ऊंचाई 161 फीट है। इस मंदिर में 392 पिलर हैं और 44 दरवाजे हैं। इस मंदिर में पांच हॉल हैं जिनका नाम नृत्य मंडप, रंग मंडप, शोभा मंडप, प्रार्थना मंडप और कीर्तन मंडप है। मंदिर के स्तंभों पर भी खूबसूरत नक्काशी की गई है। मंदिर का निर्माण तीन मंजिल तक होना है जिस पर काम अभी चल रहा है। 22 जनवरी को यहां 51 इंच ऊंची भगवान राम की प्रतिमा की स्थापना और प्राण प्रतिष्ठा की गई थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्राण प्रतिष्ठा में हिस्सा लिया था। इसके अलावा इस मौके पर 8 हजार वीआईपी पहुंचे थे।

प्रियंका गांधी बोलीं- मेरी शादी ठेठ पंजाबी परिवार में हुई है

- कहा-सास से पंजाबियत की बातें सीखीं, पीएम सोच रहे हैं देश की महिलाएं बेवकूफ

पटियाला/फतेहगढ़ साहिब (एजेंसी)। पंजाब में कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने कहा कि मेरी शादी ठेठ पंजाबी परिवार में हुई है। बंटवारे के बाद मेरे ससुर ने पंजाब में अपना कारोबार शुरू किया। मैंने सास से पंजाबियत की बातें सीखीं। मोदी जी की सरकार ने कुछ नहीं किया। जिसने अत्याचार किया, मोदी जी उसके साथ खड़े रहे। प्रधानमंत्री ये सोच रहे हैं कि इस देश की सभी महिलाएं बेवकूफ हैं। मैं इन्हें कुछ ही कहूंगा, ये मान लेंगी। प्रियंका गांधी गांधी फतेहगढ़ साहिब में लोकसभा उम्मीदवार डॉ. अमीर सिंह और पटियाला में लोकसभा उम्मीदवार डॉ. धर्मवीर गांधी के समर्थन में रैली करने आई थीं।

पंजाब में राजनाथ सिंह बोले-पाकिस्तान भीख मांग रहा

- स्वाति मालीवाल पर केजरीवाल चुप क्यों, राहुल गांधी ने ठीक कहा-उनका सिस्टम दलितों-गरीबों के खिलाफ

खन्ना (एजेंसी)। वरिष्ठ भाजपा नेता और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने पंजाब के फतेहगढ़ में एक जनसभा को संबोधित किया। यहां रक्षा मंत्री ने कहा कि डॉक्टर ने

उन्हें खड़े होने से मना किया है। उन्होंने उन्हें 7 दिन तक आराम करने की सलाह दी है। जब तक नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री नहीं बन जाते, तब तक वे आराम नहीं करेंगे। आम आदमी पार्टी सुप्रीमो पर हमला करते हुए रक्षा मंत्री ने कहा कि पंजाब के अलावा दिल्ली में भी आम आदमी पार्टी की सरकार है। शराब घोटाले में उनके नेता जेल गए। नेता में नैतिकता होनी चाहिए। अगर कोई आरोप है तो उसे तुरंत इस्तीफा दे देना चाहिए।

नेतन्याहू के खिलाफ सड़कों पर फिर उतरे इजरायली

- सड़क पर निकाला विशाल जुलूस, पुलिस से खूनी झड़प

तेल अवीव (एजेंसी)। गाजा में हमास आतंकियों के खिलाफ जंग में उतरी इजरायली सेना एक तरफ कड़ा संघर्ष कर रही है। उधर, इजरायलियों की रक्षा कर पाने

में नाकाम पीएम बेंजामिन नेतन्याहू पर आम इजरायली भड़के हुए हैं। पिछले दिनों महिला इजरायली सैनिकों के वीडियो सामने आए थे, जिसमें दावा किया गया कि हमास आतंकियों ने इन महिला इजरायलियों के साथ हैवानियत की है। वीडियो सामने के बाद इजरायल में एक बार फिर नेतन्याहू के खिलाफ लोगों का गुस्सा भड़का हुआ है। राजधानी तेल अवीव पर हजारों की संख्या में इजरायली नेतन्याहू के इस्तीफे की मांग के साथ प्रदर्शन करते नजर आए।

राहुल गांधी बोले-हिमाचल की सरकार चोरी नहीं कर पाएंगे मोदी

कहा-आपदा में 9 हजार करोड़ नहीं दिए, पीएम कहते हैं मेरा भगवान से डायरेक्ट कनेक्शन

नाहन (एजेंसी)। कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी रविवार को हिमाचल प्रदेश के दौरे पर थे। उन्होंने पहली रैली सिरमौर के नाहन में की। नाहन में उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तीखे हमले किए। कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने अंबानी-अडानी जैसे 22 परिवारों का 16 लाख करोड़ का कर्ज माफ किया। मगर हिमाचल को आपदा में हुई तबाही से उभारने के लिए 9000 करोड़ रुपए नहीं दिए। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने अडानी-अंबानी जैसे घरानों के लिए काम कर रहे हैं। राहुल गांधी ने कहा कि हिमाचल में 22 हजार परिवार आपदा से प्रभावित हुए। प्रधानमंत्री ने उनकी परवाह नहीं की। मगर 22 परिवारों को अरबपति जरूर बनाया। 24 साल मनरेगा का पैसा प्रधानमंत्री ने 22 बड़े औद्योगिक घरानों को पकड़ा दिया। राहुल गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री कह रहे कि वह चोरी करके, पैसा देकर, भ्रष्टाचार करके हिमाचल सरकार को गिरा देंगे। उन्होंने कहा कि गोवा, अरुणाचल, मध्यप्रदेश में चोरी की

सरकार बनाई। अब प्रधानमंत्री हिमाचल में आकर कह रहे कि यहां भी सरकार चोरी करेंगे। राहुल ने कहा कि मोदी जी आप हिमाचल की सरकार चोरी नहीं कर पाएंगे, क्योंकि हिमाचल की जनता पहचान गई। सारे के सारे भ्रष्ट लोग बीजेपी में चले गए हैं।

जम्मू-कश्मीर में 30 सितंबर से पहले होंगे विधानसभा चुनाव होंगे

एक इंटरव्यू में गृहमंत्री अमित शाह ने कहा-फिर देंगे राज्य का दर्जा

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि जम्मू कश्मीर में 30 सितंबर से पहले विधानसभा चुनाव हो जाएंगे। फिर इसके बाद सरकार के वादे के मुताबिक, केंद्र शासित प्रदेश को राज्य को दर्जा दे दिया जाएगा। गृहमंत्री ने यह बातें शनिवार को देर रात एक न्यूज एजेंसी को दिए इंटरव्यू में कहीं। शाह ने छत्तीसगढ़ में नक्सलियों

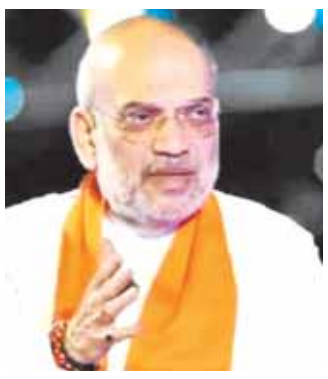

की समस्या से लेकर यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीसी) तक बात की। उन्होंने कहा कि अगले 5 साल में देश में यूसीसी लागू कर दिया जाएगा। देश में एक साथ सभी चुनाव भी करवाए जाएंगे। इसके साथ ही शाह ने कहा कि देश में अगले 2-3 साल में नक्सलियों की समस्या पूरी तरह से खत्म हो जाएगी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि जम्मू एवं कश्मीर में सफल मतदान से मोदी सरकार की कश्मीर नीति सही साबित हुई है।

इस चुनाव में अलगाववादियों ने भी भारी मतदान किया। शाह ने आश्वासन दिया कि वहां 30 सितंबर से पहले विधानसभा चुनाव होंगे।

अगले 2-3 साल में नक्सल समस्या खत्म हो जाएगी

शाह ने कहा है कि छत्तीसगढ़ के एक छोटे से क्षेत्र को छोड़कर पूरा देश अब नक्सल की समस्या से मुक्त हो गया है। छत्तीसगढ़ में 5 महीने पहले जब से भाजपा सरकार सत्ता में आई है, तभी से नक्सलियों से राज्य को मुक्त कराने का काम शुरू हो गया है। अगले 2-3 साल में यह समस्या देश से पूरी तरह से खत्म हो जाएगी। एक समय कुछ लोग पशुपतिनाथ से तिरुपति तक नक्सल कॉरिडोर के बारे में कहा करते थे। अब झारखंड पूरी तरह से नक्सलियों से मुक्त है।

मणिपुर में कुकी-मैतेई के बीच लड़ाई को बल से हल नहीं किया जा सकता

केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि सरकार मणिपुर में शांति स्थापित करने के लिए काम कर रही है। मैतेई और कुकी समुदायों के बीच विश्वास की कमी को दूर करने पर काम कर रही है। लोकसभा चुनाव खत्म होने के बाद इस काम को प्राथमिकता से किया जाएगा। मणिपुर में 3 मई 2023 से जातीय हिंसा जारी है। अब तक 220 से ज्यादा लोग और सुरक्षाकर्मी मारे जा चुके हैं। मणिपुर में 2017 से भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार सत्ता में है।

शाहजहांपुर में बस पर डंपर पलटा, 12 लोगों की मौत

ढाबे पर रुकी थी बस, तभी डंपर ने टक्कर मारी, बस सीतापुर से पूर्णागिरी जा रही थी

शाहजहांपुर (एजेंसी)। शाहजहांपुर में भीषण सड़क हादसे में बस सवार 12 यात्रियों की मौत हो गई। हादसा तब हुआ जब बस ढाबे पर खड़ी थी। पीछे से आ रहे तेज रफ्तार डंपर ने टक्कर मारी और बस पर पलट गया। हादसे में 10 यात्री घायल भी हैं। बस सवार यूपी के सीतापुर से उत्तराखंड में मां पूर्णागिरी मंदिर जा रहे थे। करीब 80 लोग सवार थे। हादसे के वक्त ज्यादातर यात्री बस के नीचे उतरे हुए थे। कुछ अंदर सो रहे थे। डंपर में गिट्टी लदी थी, टक्कर के बाद बस में गिट्टी भर गई। अंदर लोग फंस गए। हादसा शनिवार रात 11 बजे

के करीब हुआ। आसपास के लोगों ने हादसे की सूचना पुलिस को दी। यात्रियों को बाहर निकालने की कोशिश कर रहे थे तभी पुलिस भी पहुंची। यात्री अंदर इस कदर फंसे हुए थे कि निकालना मुश्किल हो रहा था। कोई डंपर के नीचे तो कोई बस की सीट में फंसा हुआ था। हादसा देखकर पुलिस ने और फोर्स बुलाई। तुरंत क्रेन और जेसीबी को मंगवाया गया। तब जाकर डंपर और बस को अलग किया गया। करीब 5 घंटे तक चले रेस्क्यू में बस में फंसे लोगों को बाहर निकाला गया। घायलों को भर्ती कराया गया।

कांस में पहली बार भारतीय फिल्म को ग्रैंड प्रिक्स अवॉर्ड

कांस (एजेंसी)। शनिवार को 77वें कांस फिल्म फेस्टीवल के मंच पर यह कहते हुए इंडियन फिल्ममेकर पायल कपाड़िया ने समारोह का दूसरा सबसे प्रतिष्ठित अवॉर्ड हासिल किया। पायल की फिल्म 'ऑल वी इमैजिन एज लाइट' को यहां ग्रैंड प्रिक्स अवॉर्ड से नवाजा गया। इसके साथ ही पायल

- सम्मान पाने वाली पहली भारतीय निर्देशक बनीं पायल कपाड़िया, देश को मिले कुल 4 अवॉर्ड

यह अवॉर्ड अपने नाम करने वाली पहली भारतीय फिल्ममेकर बन चुकी हैं। फिल्म को कांस की सबसे प्रतिष्ठित कैटेगरी 'पाम डी'ओर' के अंतर्गत 23 मई को प्रीमियर किया गया था। इस कैटेगरी में यह 30 साल बाद सिलेक्ट होने वाली भारतीय फिल्म थी। इससे पहले 1994 में फिल्म 'स्वाहम' को इस कैटेगरी में नॉमिनेट किया गया था। इससे पहले पायल कपाड़िया जब भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे में पढ़ती थीं तो 2017 में उनकी शॉर्ट फिल्म आफ्टरनून क्लाउड्स अकेली भारतीय फिल्म थी जिसे 70वें कांस फिल्म समारोह के सिनेफोंडेशन सेगमेंट में चुना गया था। इसके बाद 2021

में उनकी डाक्यूमेंट्री अ नाइट ऑफ नोइंग नथिंग को कांस फिल्म समारोह के डायरेक्टर्स फोर्टनाइट कैटेगरी में चुना गया था। इतना ही नहीं फिल्म को तब बेस्ट डाक्यूमेंट्री का गोल्डन आई अवॉर्ड भी मिला था। फिल्म की मुंबई में रहने वाली केरल की दो नर्स प्रभा और अनु के इर्द-गिर्द बुनी गई है।

छपरा हिंसा के बाद एसपी गौरव मंगला पर ऐक्शन

- चुनाव आयोग की गिरी गाज, लालू की बेटी रोहिणी आचार्य की भी अब बढ़ेगी मुश्किलें!

छपरा (एजेंसी)। छपरा हिंसा में पुलिस मुख्यालय पटना ने बड़ी कार्रवाई की है। लोकसभा चुनाव के दौरान हुई हिंसा के बाद सारण के पुलिस अधीक्षक डॉक्टर गौरव मंगला का ट्रांसफर पुलिस मुख्यालय की ओर से कर दिया गया है। एसपी डॉक्टर गौरव मंगला को अगले आदेश तक योगदान की प्रतीक्षा में मुख्यालय में पदस्थापित किया गया है। वहीं नए एसपी के तौर पर आईपीएस डॉक्टर कुमार आशीष की पोस्टिंग की गई है। डॉ कुमार आशीष फिलहाल मुजफ्फरपुर रेल एसपी के पद पर तैनात है। 20 मई को सारण लोकसभा सीट पर मतदान के दौरान नगर थाना क्षेत्र के भिखारी चौक बड़ा तेलपा स्थित मतदान केंद्र पर रोहिणी आचार्य के पहुंचने के बाद हिंसा हुई थी।

चुनाव आयोग की गिरी गाज, लालू की बेटी रोहिणी आचार्य की भी अब बढ़ेगी मुश्किलें!

छपरा हिंसा के बाद एसपी गौरव मंगला पर ऐक्शन

छपरा (एजेंसी)। छपरा हिंसा में पुलिस मुख्यालय पटना ने बड़ी कार्रवाई की है। लोकसभा चुनाव के दौरान हुई हिंसा के बाद सारण के पुलिस अधीक्षक डॉक्टर गौरव मंगला का ट्रांसफर पुलिस मुख्यालय की ओर से कर दिया गया है। एसपी डॉक्टर गौरव मंगला को अगले आदेश तक योगदान की प्रतीक्षा में मुख्यालय में पदस्थापित किया गया है। वहीं नए एसपी के तौर पर आईपीएस डॉक्टर कुमार आशीष की पोस्टिंग की गई है। डॉ कुमार आशीष फिलहाल मुजफ्फरपुर रेल एसपी के पद पर तैनात है। 20 मई को सारण लोकसभा सीट पर मतदान के दौरान नगर थाना क्षेत्र के भिखारी चौक बड़ा तेलपा स्थित मतदान केंद्र पर रोहिणी आचार्य के पहुंचने के बाद हिंसा हुई थी। राजद और भाजपा समर्थकों के आपसी कहासुनी के बाद मामला बिगड़ गया था। वहीं अगले दिन यह हिंसा खूनी संघर्ष में तब्दील हो गया। भिखारी चौक पर भाजपा के समर्थकों ने तीन राजद के कार्यकर्ताओं को गोली मार दी। इस घटना में एक राजद कार्यकर्ता की मौत हो गई थी जिसके बाद यहां जबरदस्त बवाल हुआ था।

66वें दिन भोजशाला का सर्वे करने पहुंची एएसआई टीम

मजदूरों की संख्या भी बढ़ी, मशीन से हो रहा सर्वे का काम

धार (नप्र)। केंद्रीय पुरातत्व विभाग के अधीन धार की भोजशाला में वैज्ञानिक पद्धति से सर्वेक्षण चल रहा है। आज (रविवार) सर्वे का 66वां दिन है, एक दिन पहले ही जीपीआर व जीपीएस मशीन आई थी। मशीनों का उपयोग करते हुए काम हो रहा है, इन मशीनों को चलाने वाले विशेषज्ञ अल सुबह करीब 6.30 बजे ही भोजशाला पहुंच गए थे, विशेषज्ञों ने सुबह जल्दी ही काम शुरू कर दिया है। बाकी सदस्य अपने नियत समय 8 बजे भोजशाला पहुंचे। रविवार के दिन एएसआई की टीम के 18 सदस्य, 40 मजदूरों व पक्षकारों की मौजूदगी में सर्वे हो रहा है। भोजशाला में पहली बार जीपीआर से सर्वे हो रहा है, यह कार्य जियोलॉजिकल सर्वे आफ इंडिया जीएसआई की टीम के सात सदस्यों की देखरेख में किया गया। इस सर्वे के माध्यम से जमीन में छिपे साक्ष्यों की पड़ताल की जा रही है।

बाबा महाकाल को साढ़े तीन लाख रुपए के आभूषण अर्पित

दिल्ली के भक्त ने 4178 ग्राम के रजत मुकुट, नाग, कुंडल दान में दिए

उज्जैन (नप्र)। श्री महाकालेश्वर मंदिर में दर्शन के लिए नई दिल्ली से आए एक भक्त ने भगवान महाकालेश्वर को चांदी का मुकुट, चंद्रमा, नाग कुंडल अर्पित किए हैं। चांदी के आभूषण का मूल्य करीब साढ़े तीन लाख रुपए से अधिक बताया गया है।

मंदिर समिति ने दानदाता को प्रसाद भेंट कर सम्मानित किया। श्री महाकालेश्वर मंदिर समिति के कोठार शाखा के प्रभारी मनीष पांचाल ने बताया कि नई दिल्ली निवासी हरीश शर्मा ने पुरोहित नवनीत शर्मा व रूपम व्यास की प्रेरणा से 1 नग चांदी का मुकुट मय नाग, चंद्रमा, दो नग नाग कुंडल भगवान महाकाल को अर्पित किए। वे रविवार को दिल्ली से परिवार के साथ महाकाल मंदिर आए।दान में प्राप्त चांदी के आभूषण का कुल वजन लगभग 4178 ग्राम है। इसका आज की स्थिति में बाजार मूल्य करीब साढ़े तीन लाख रुपए से अधिक है। मंदिर समिति की ओर से दानदाता को भगवान महाकाल का प्रसाद व दुपट्टा भेंट कर सम्मान कर दान में प्राप्त सामग्री की रसीद प्रदान की गई।

भोपाल में साढ़े तीन साल में 133 ड्रग तस्कर गिरफ्तार

फिर भी डेढ़ गुना बढ़ गए तस्करी के मामले, ट्रेंड बदलकर करते हैं तस्करी

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में ड्रग तस्करी के मामलों में लगातार इजाफा हो रहा है। तस्कर ट्रेंड बदलकर मादक पदार्थों की तस्करी कर रहे हैं। हालांकि क्राइम ब्रांच लगातार तस्करों के खिलाफ कार्रवाई करती है। बावजूद इसके पिछले साढ़े तीन साल में ड्रग तस्करी के मामलों में डेढ़ गुना तक का इजाफा हुआ है। शहर में गांजा, चरस, अफीम के अलावा एमडी तस्करों को भी गिरफ्तार किया जा चुका है। इन साढ़े तीन सालों के भीतर अकेली क्राइम ब्रांच 133 बड़े ड्रग डीलरों को जेल पहुंचा चुकी है। एडिशनल डीसीपी क्राइम ब्रांच शैलेंद्र सिंह चौहान ने बताया कि क्राइम ब्रांच समय-समय पर मुहिम चलाकर मादक पदार्थों के तस्करों के खिलाफ कार्रवाई करती है। हालांकि तस्कर भी लगातार ट्रेंड बदलकर तस्करी के काम करते हैं। साल 2021 जनवरी महीने से लेकर अब तक क्राइम ब्रांच करीब 133 तस्करों को जेल भेज चुकी है। इन तस्करों

में ट्रेन के रास्ते, सड़क मार्ग के रास्ते और बस के रास्ते अलग-अलग राज्यों से गांजा लाकर भोपाल में खपाने वाले तस्कर शामिल हैं।

इन राज्य से आता है ड्रग: ड्रग खपाने वाले तस्कर नेपाल, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, विशाखापट्?टनम और बिहार से मादक पदार्थ लाकर भोपाल में खपाते हैं। अधिकांश तस्कर शॉर्टकट से अमीर बनने की चाह में तस्करी के रास्ते को अपनाते हैं।

पकड़ा जा चुका है हाईटेक तस्कर: 25 फरवरी 2021 को भोपाल की पिपलानी पुलिस ने रीवा का रहने वाला मैकेनिकल इंजीनियर प्रखर सिंह को भोपाल पुलिस ने गिरफ्तार किया था। प्रखर सिंह भोपाल के कॉलेज, हॉस्टल और पार्टियों में नशीले पदार्थ ड्रग्स की सप्लाई किया करता था। क्वालिफाइड इंजीनियर होने के कारण उसने क्राइम के लिए नए तरीकों का उपयोग किया, और इसलिए वह काफी समय तक पुलिस से बचा रहा। वह ड्रग की डिलीवरी ऑनलाइन ऑर्डर लेने के बाद करता था। ऑर्डर लेने के बाद ग्राहक को एक स्थान बताया जाता था। वहां ड्रग पार्सल रख दिया जाता था। ऑन लाइन रकम मिलने के बाद ग्राहकों को वह स्थान बता दिया जाता था जहां से ड्रग उठाना होता था। आरोपी ड्रग ऑन लाइन ही मंगाया करता था। प्रखर की गिरफ्तारी के साथ ही पहला मौका था जब भोपाल पुलिस ने एलएसडी, एक्सटीसी/एमडीएमए जैसी कैमिकल ड्रग के साथ किसी सप्लायर को पकड़ा था। पुलिस ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग प्रखर सिंह समेत तीन लड़कों को गिरफ्तार किया था।

जन्म जयंती वर्ष समारोह 31 मई से

मध्य भारत में प्रांत स्तरीय आयोजन समिति का गठन, वर्षभर होंगे आयोजन

भोपाल (नप्र)। समाज, संस्कृति और राष्ट्र को समर्पित न्यायप्रिय देवी अहिल्याबाई होल्कर की 31 मई को 300वीं जन्म जयंती है। इस उपलक्ष्य में पूरे देश में वर्षभर देवी अहिल्याबाई पर केंद्रित विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। मध्य भारत प्रांत में वर्ष भर चलने वाले समारोह के आयोजन के लिये शनिवार को प्रांत स्तरीय आयोजन समिति का गठन किया गया। समिति का गठन मध्यभारत प्रांत के संघचालक श्री अशोक पाण्डेय, प्रांत कार्यवाह श्री हेमंत सेठिया तथा प्रबुद्ध जनों की उपस्थिति में हुआ। प्रांत स्तरीय आयोजन समिति के संरक्षक सुरेन्द्र मिश्रा और गिरीश जोशी है। समिति के अध्यक्ष संतोष कुमार राऊत (पूर्व पुलिस महानिदेशक), उपाध्यक्ष कविन्द्र कियावत (पूर्व संभागायुक्त), डॉ. प्रियवंदा भसीन (नेत्र रोग विशेषज्ञ), सचिव डॉ. वंदना गांधी, सह सचिव रंजना चितले, वीरेन्द्र पाल, कोषाध्यक्ष सत्यकीर्ति राने सहित 15 सदस्य शामिल हैं। समारोह के दौरान वर्ष भर व्याख्यान, संगोष्ठी, शिक्षण संस्थानों में विविध प्रतियोगिताएं, नाट्य प्रस्तुतियां, पुस्तक प्रकाशन, प्रदर्शनी आदि गतिविधियों के माध्यम से देवी अहिल्याबाई होल्कर के व्यक्तिव और कृतित्व को जन-जन तक पहुंचाया जायेगा।

लोकायुक्त परिसर में पड़ी सूखी लकड़ियों में लगी आग

4 दमकल से डेढ़ घंटे में पाया गया आग पर काबू

भोपाल(नप्र)। लोकायुक्त कार्यालय परिसर में स्थित सूखी लकड़ियों में दोपहर करीब 2 बजे आग लग गई, इस आग पर करीब डेढ़ घंटे में काबू पाया जा सका। बताया जा रहा है कि आग को उठते देख स्थानीय लोगों ने फायर ब्रिगेड को सूचना दी, जिसके बाद करीब डेढ़ घंटे तक फायर ब्रिगेड के 14 फायर फाइटर्स ने इस आग पर काबू पाया। इस दौरान 2 फायर ब्रिगेड की गाड़ियों से यह आग बुझाई गई। इसमें 3 फतेहगढ़ और 1 बैरागढ़ से यहां पहुंची। मौके पर मौजूद फायर कर्मचारियों की माने तो लोकायुक्त कार्यालय परिसर में आग लगने की वजह पास में लगी बिजली विभाग की डीपी हो सकती है, क्योंकि उसके पास सूखी लकड़ियां रखीं थी, जिसमें किसी प्रकार के स्पार्क से यह आग लग सकती है। हालांकि अभी पक्के तौर कहां नहीं जा सकता है कि यह आग कैसे लगी होगी।

शहडोल में अवैध खनिज भंडारण करने वाले भूमि मालिकों पर होगी एफआईआर

कलेक्टर ने दिए आदेश

भोपाल (नप्र)। शहडोल में अवैध खनिज भंडारित करने वाले भूमि मालिकों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की जाएगी। जिला प्रशासन ने इसके लिए नई रणनीति तैयार की है। कलेक्टर तरुण भटनागर ने कहा कि ऐसा करने से एक हद तक अवैध खनन और परिवहन को रोकने में मदद मिलेगी। कलेक्टर के निर्देश के बाद इस पर कार्रवाई भी शुरू हो गई है। कलेक्टर ने सभी एसडीएम को निर्देश दिए हैं कि उनके सब डिवीजन में जहां भी अवैध खनिज का भंडारण दिखे उस हल्के के पटवारी को निर्देशित कर राजस्व रिकार्ड के अनुसार संबंधित भूमि मालिक का पता लगाएं और उनके खिलाफ एफआइआर दर्ज करवाएं।

इंदौर में वाटरफॉल के कुंड में डूबने से युवक की मौत

इंदौर (नप्र)। महू में शीतला माता वाटरफॉल के कुंड में डूबने से एक युवक की मौत हो गई है। मनावर का रहने वाला दीपक वास्कले (22) दोस्तों के साथ रविवार सुबह पिकनिक मनाने शीतला माता फॉल गया था। नहाने के दौरान दीपक कुंड के अंदर गड्ढे में फंस गया। काफी देर तक ऊपर नहीं आया तो उसके दोस्तों ने ग्रामीणों को सूचना दी। ग्रामीणों ने दीपक की तलाश की, लेकिन वह नहीं मिला। मौके पर पहुंची मानपुर पुलिस ने गोताखोर की मदद से दोपहर करीब 12:30 बजे दीपक के शव को कुंड से बाहर निकाला। उसके बाद उसे मानपुर के शासकीय अस्पताल लाया गया। यहां पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया जाएगा। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

हवालात में थर्ड डिग्री ...मुंह पर जूते मारे, होंठ सूजे

चोरी के संदेह में हाथ-पैर बांधकर 3 दिन पीटा; 3 पुलिसकर्मी सस्पेंड

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर के जनकगंज थाने में फल का ठेला लगाने वाले को चोरी के शक में थर्ड डिग्री टॉर्चर दिया गया। पुलिस वालों ने उसे हाथ-पैर बांधकर बेल्ट से पीटा। उसके मुंह पर जूतों से मारा। होंठ में सूजन है। हवालात में पंखा भी नहीं था। तीन दिन से उसके साथ मारपीट की जा रही थी। पुलिस ने चोरी के आरोप में एक अन्य संदेही को भी पीटा है। शनिवार देर शाम व्यापारी की हालत बिगड़ने पर परिजन थाने में जमा हो गए, इसके बाद उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। परिजन का कहना है कि पुलिसकर्मी चोरी का झूठा आरोप लगा रहे हैं। देर रात हवलदार शैलेंद्र दीक्षित, आरक्षक मुरारी और बनवारी शर्मा को निलंबित कर दिया। एसपी धर्मवीर सिंह का कहना है कि जांच के आदेश दिए हैं। पुलिस ने गोलपहाड़िया निवासी अवधेश खटीक (35) को चोरी के संदेह में पकड़ा था। थाना प्रभारी विपेंद्र सिंह चौहान का कहना है कि सीसीटीवी फुटेज में संदेहीआरोपी का फुटेज मिला था। चोरी का मामला क्या है? इस पर सीएएसपी लश्कर गुप्ता का कहना है कि सस्पेक्ट है, इसकी भी जांच की जा रही है।

बिना सबूत पीटा, दारू के केस में अंदर करने का कहकर धमकाया: अवधेश खटीक जयारोग्य अस्पताल में भर्ती है। उसने बताया, तीन दिन पहले चार पुलिसवाले मुझे पकड़कर ले गए। किसी चोरी के बारे में पूछताछ की, मैंने बताया कि मैं कुछ नहीं जानता। जनकगंज थाने के हवालात में बंद कर पीटा। टीआई भी खड़े थे। कह रहे थे कि दारू के केस में अंदर कर दूंगा। मेरे बाल नोंचे, लात-घूंसों और फट्टे (बेल्ट) से मारा। अवधेश ने बताया, हाथ-पैर जोड़कर कहा कि मैंने चोरी नहीं की। वे नहीं माने। मुंह पर जूते मारने से मेरे होंठ सूजे हुए हैं। सिर पर जूते मारे, जिससे अभी तक दर्द हो रहा है। एक लड़का (कमल घाटगे) और था, उसे मुझसे एक दिन बाद पकड़कर लाए थे, उसे भी पीटा। जनकगंज थाने की पुलिस ने चोरी के संदेह में कमल घाटके की भी हवालात में बंद कर पिटाई की। एसपी तक मामला पहुंचा तो उसे भी छोड़ दिया गया।

तीन दिन हवालात में रखा, गिरफ्तारी नहीं दिखाई: जनकगंज थाना प्रभारी का कहना है कि आरोपी ने पूछताछ में चोरी का माल कबाड़ी को बेचना कबूल भी किया था। परिजन का कहना है कि अगर पुलिस के पास चोरी के मामले में कबाड़ी का माल बेचने का बयान दिया गया था तो अवधेश खटीक की तीन दिन में भी गिरफ्तारी क्यों नहीं की गई। पुलिस झूठे आरोप लगा रही है। जब तीन दिन हो गए और पुलिस ने अवधेश की न तो गिरफ्तारी दिखाई, न ही मिलने दिया, इस पर परिजन घबरा गए। वे एसपी से मिले। एसपी ने मामले को संज्ञान में लेते हुए जांच के आदेश दिए। इसी बीच पुलिस के वाहन से अवधेश को अस्पताल पहुंचाया गया। कमल को छोड़ दिया गया। सीएसपी लश्कर आयुष गुप्ता ने का कहना है कि जांच कराई जा रही है।

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में एक दिवसीय योग कार्यशाला का आयोजन संपन्न

भोपाल (नप्र)। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्व विद्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय के योग विभाग के द्वारा किया। कार्यशाला का विषय आगामी परीक्षाओं का विद्यार्थियों के ऊपर पड़ने वाले मानसिक अवसादो में योग की भूमिका था। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के मुख्य केन्द्र प्रभारी स्वामी डॉ. परमार्थ देव जी उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत में योग विभाग के विभाग अध्यक्ष डॉ रत्नेश पांडे ने सभी अतिथियों का स्वागत किया साथ ही विश्वविद्यालय में योग विभाग के सभी कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस मौके पर स्वामी डॉ. परमार्थ देव जी ने विद्यार्थियों को परीक्षा के दौरान योग की अनेक क्रियाओ के माध्यम से मानसिक व्याधियों से बचने के गुण बताए और सिखाए। जिसमें उन्होंने भस्त्रिका, कपालभाति, अनुलोम विलोम जैसे प्राणायाम के लाभ बताए, साथ ही यम, नियम की जीवन में उपयोगिता, ब्रह्मचर्य का महत्व आधी और व्याधि जैसे अनेक विषयों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने श्रीमद् भगवत गीता के माध्यम से जीवन प्रबंधन के महत्व को भी रोचक ढंग से बताया। स्वामी जी के उद्बोधन के तत्पश्चात विद्यार्थियों ने स्वामी जी से प्रश्न भी किए। विद्यार्थियों के इस उत्साह को देखकर स्वामी जी प्रसन्न हुए और सभी विद्यार्थियों के प्रश्नों का बारी- बारी से उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा को शांत किया। वहीं प्रति कुलपति डॉ संगीता जोहरी ने विश्वविद्यालय का परिचय देते हुए योग के लाभ पर प्रकाश डाला। चिकित्सा संकाय की संकाय अध्यक्ष डॉ मनीषा गुप्ता ने भी सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए वर्तमान समय में फैली बीमारियों को नियंत्रित करने में योग की भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में सभी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं सहित फैकल्टी सम्मिलित हुई। अंत में डॉ अविनाश सिंह, विभागाध्यक्ष, पेरामेडिकल विभाग ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इंदौर में प्लास्टिक के थैले में मिला महिला का शव, हाथ-पैर बंधे थे

इंदौ र (नप्र)। इंदौर में रविवार सुबह प्लास्टिक के थैले में महिला का शव मिला है। महिला के दोनों हाथ-पैर बंधे थे। मामला चंदन नगर के बांक का है। इस एरिया को सील कर दिया गया है। पुलिस डॉग स्क्वॉड के साथ मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस का कहना है कि सीसीटीवी खंगालेंगे। महिला ने नीले रंग की साड़ी पहनी है, इससे भी पड़ताल की जाएगी। शव जहां मिला है, वहीं बांक के कांग्रेस नेता पटेल का घर है।

सागर में दो पक्षों में विवाद, धारदार हथियार से हमले में एक की मौत

सागर (नप्र)। सागर में दो पक्ष पुराने मामले में राजीनामा करने इकट्ठा हुए। एक पक्ष ने इससे मना कर दिया, जिसके बाद दूसरे पक्ष ने धारदार हथियारों से हमला कर दिया। दोनों पक्षों में जमकर विवाद हुआ। दो लोग घायल हुए हैं। इनमें से एक को जिला अस्पताल से भोपाल रेफर किया गया। इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

सालों ने जीजा पर धर्म बदलने का दबाव डाला, एफआईआर

पीड़ित से बोले आरोपी पत्नी बच्चों को साथ ले जाना है तो धर्म बदलो

भोपाल (नप्र)। श्यामपुर सीहोर में रहने वाले युवक ने अपने तीन सालों के खिलाफ धर्म बदलने का दबाव डालने और जाति से अपमानित करने का केस दर्ज कराया है। तीनों साले उस पर धर्म बदलने का दबाव बना रहे हैं। श्यामपुर पुलिस ने जीरो पर कायमी कर केस डायरी भोपाल पुलिस को सौंप दी है। ऐशबाग पुलिस ने मामले में असल कायमी कर जांच शुरू कर दी है। एसआई सूरज अतुलकर ने बताया कि 40 वर्षीय युवक श्यामपुर सीहोर का रहने वाला है, वहीं मेहनत मजदूरी का काम करता है। 15 साल पहले उसने पहले से तलाकशुदा महिला से शादी की थी। महिला मुस्लिम धर्म की है, लिहाजा शुरुआत में पत्नी के मायके वालों ने हमारे रिश्ते को नहीं अपनाया था। पिछले कुछ सालों से पत्नी मायके आने और जाने लगी है। अब उसका रिश्ता मायके वालों से सामान्य हो चुका है। 17 मई को पत्नी दोनों बेटियों के साथ मायके में थी। रात के समय मैं उसे लेने ऐशबाग स्थित ससुराल में पहुंचा था। वहां साले वसीम खान आजम और मोईन भी मौजूद थे।

छोटी जाति बताकर धर्म बदलने का दबाव डाला

पीड़ित के तीनों सालों ने उसे घर में बैठाकर धर्म बदलने का दबाव डाला। आरोपियों का कहना था कि तुम छोटी जाति के हो हमारा धर्म अपना लो। फरियादी राजी नहीं हुआ तब आरोपियों ने शर्त रखी की पत्नी और दोनों बेटियों को तब ही साथ जाने देंगे जब धर्म परिवर्तन नहीं कर लोगे। इसके बाद पीड़ित अपने गांव में लौट गया।

नर्सिंग घोटाले के व्हिसिलब्लोअर ने बताया जान का खतरा

सीएम से मांगा समय, रवि परमार ने पत्र में लिखा- घोटाले के सबूत मेरे पास, मेरी हत्या हो सकती है

भोपाल (नप्र)। मप्र के बहुचर्चित नर्सिंग घोटाले के व्हिसिलब्लोअर रवि परमार ने खुद को जान का खतरा बताया है। रवि परमार ने सीएम डॉ. मोहन यादव को पत्र लिखकर सुरक्षा दिलाने की मांग की है। परमार ने सीएम को लिखे लेटर में बताया कि उनके पास नर्सिंग घोटाले के सबूत हैं। नर्सिंग माफिया मेरी हत्या करा सकते हैं। या फर्जी केस में फंसा सकते हैं।

घोटाले की शिकायतों पर अफसरों ने ध्यान नहीं दिया: नर्सिंग घोटाले के व्हिसिलब्लोअर रवि परमार ने सीएम डॉ मोहन यादव को पत्र लिखकर नर्सिंग कॉलेज माफिया से जान का खतरा बताया है। परमार ने अपने पत्र में लिखा- मध्यप्रदेश में लंबे समय से नर्सिंग फर्जीवाड़ा चल रहा था। जिसको लेकर हम निरंतर शिकायत कर रहे थे। लेकिन, जिम्मेदार अधिकारियों द्वारा ध्यान नहीं दिया गया बल्कि घोटाले को दबाने के लिए प्रयास किए गए।

बड़े अफसर, हवाला कारोबारी घोटाले में शामिल: मध्यप्रदेश के नर्सिंग कॉलेज फर्जीवाड़ा से प्रदेश के लाखों नर्सिंग छात्र छात्राओं का भविष्य अंधकारमय हो गया है, और पूरे भारत में मध्यप्रदेश की छवि धूमिल हुई है। इस नर्सिंग फर्जीवाड़े में कई बड़े शिक्षा माफिया, हवाला कारोबारी एवं मप्र शासन के ज़िम्मेदार अधिकारी शामिल हैं।

झूठे केस में फंसा सकते हैं: नर्सिंग घोटाले को उजागर करने के परिणाम स्वरूप पुलिस प्रशासन द्वारा मेरे ऊपर कई मुकदमे दर्ज कर दिए गए और मुझे आलोकतांत्रिक तरीके से जेल तक भेजा गया। लेकिन अब घोटाला सीबीआई की कार्यवाही से उजागर हो चुका हैं नर्सिंग घोटाले की सभी साक्ष्य मेरे पास हैं जिसके चलते इसमें शामिल कई बड़े रसूखदार लोगों और वरिष्ठ अधिकारी जो मुझ जैसे छोटे से छात्र प्रतिनिधि के खिलाफ कुछ भी षड्यंत्र कर मेरी हत्या भी करवा सकते हैं या झूठे पुलिस प्रकरणों में भी फंसवा सकते है ।

सीएम से मांगा मिलने का समय: परमार ने पत्र में सीएम से मुलाकात के लिए समय देने का अनुरोध करते हुए लिखा- आप मुझे मुलाकात के लिए समय प्रदान करें। हम एक प्रतिनिधिमंडल के साथ आपसे मुलाकात कर नर्सिंग घोटाले से जुड़े महत्वपूर्ण साक्ष्य आपको सौंप कर इस पूरी कार्यवाही में शासन और आपका सहयोग करना चाहता हूं। ताकि, इस महाघोटाले के सभी दोषियों पर सख्त से सख्त सजा दिलाई जा सके और शिक्षा माफियाओ को जड़ से उखाड़ प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था को स्वच्छ किया जाये।

संपादकीय

आदिवासी बेटियों से दुष्कर्म

मप्र के सीधी जिले में मैजिक एप के जरिए आदिवासी छात्राओं को फंसाकर उनके साथ दुष्कर्म करने का मामला बेहद घृणित और दोषियों को अत्यंत कठोर कार्रवाई की मांग करता है। इससे पता चलता है कि साइबर फ्रॉड करने वाले अब आर्थिक धोखाधड़ी से भी कहीं आगे जा कर शारी?रिक शोषण तक जा पहुंचे हैं। साइबर अपराधों की लहर दुनिया को कहां ले जाएगी, सोच कर भी डर लगता है। इन अपराधों पर नियंत्रण के लिए जितने भी उपाय किए जा रहे हैं, वो नाकाफी हैं। उसमें भी सीधी जिले के मझौली थाने की घटना तो वाकई शर्मनाक है। ये घटना प्रदेश में पुलिस की सजगता पर भी प्रश्नचिन्ह है। पुलिस के मुताबिक मप्र के सीधी जिले में30 साल के शख्स शख्स पर कम से कम सात आदिवासी लड़कियों के साथ रेप का आरोप है। आरोपी शख्स आदिवासी छात्राओं को स्कॉलरशिप देने के बहाने उनका रेप कर रहा था। इसके लिए आरोपी ने आवाज बदलने वाले मोबाइल ऐप की मदद ली थी और महिला प्रोफेसर की आवाज में छात्राओं से बात करता था. पुलिस के मुताबिक इसमें कई लोग शामिल हैं। आरोपी इतने शातिर थे कि वो स्कूल की एक लेडी टीचर के नाम से स्कॉलरशिप दिलाने के लिए छात्राओं को पहले फोन किया करते थे। उसके बाद सुनसान जगह पर छात्राओं को बारी-बारी से बुलाया जाता था और फिर उनका रेप किया जाता था। मामला उजागर होने पर प्रशासन ने मुख्य आरोपी बृजेश प्रजापति के गांव अमरवाह पहुंचकर उसके घर बुलडोजर से ढहा दिया। पुलिस के मुताबिक, आरोपी के खिलाफ 4 रेप सर्वाइवर छात्राओं ने मामले की शिकायत की थी। इसके बाद मामले की जांच शुरू की गई। पुलिस ने इस मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों ने 7 छात्राओं के साथ दुष्कर्म की घटना को कबूला है, जिसमें से चार छात्राओं ने मझौली थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। हैरानी की बात यह है कि इस पूरे कांड का मुख्य आरोपी एक मजदूर है, जिसने जिसने यूट्यूब पर आवाज बदलने के एप्लिकेशन का उपयोग करना सीखा था। इसके बाद उसने खुद को महिला प्रोफेसर बताते हुए एक महिला को सुनसान जगह पर छात्रवृत्ति देने के लिए बुलाया और कहा कि उसके घर जाकर छात्रवृत्ति दी जाएगी। इसके बाद उसने महिला के साथ रेप किया। इस घटना के खुलासे के बाद विपक्षी कांग्रेस ने मोहन यादव सरकार पर हमले तेज कर दिए। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा कि आखिर भाजपा की सरकार में ही आदिवासी बहनों को बड़े पैमाने पर निशाना क्यों बनाया जा रहा है।

कांग्रेस ने मामले की उच्च स्तरीय जांच की मांग की है। आशंका है कि पीड़ित छात्राओं की संख्या काफी अधिक हो सकती है। मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कहा है कि इस मामले में कठोर कार्रवाई की जाएगी और किसी को नहीं बख्शा जाएगा। मामले की जांच के लिए स्पेशल इंवेस्टिगेशन टीम (एसआईटी) का गठन किया है। यह समूचा घटनाक्रम बेहद चौंकाने वाला भी है। क्योंकि एक सभ्य कहलाने वाला समाज भोली भाली आदिवासियों लड़कियों को किस तरह अपने जाल में फंसाकर अपनी हवस का निशाना बना सकता है, यह उसका निकृष्ट उदाहरण है। आदिवासी समाज में मोबाइल की लोकप्रियता बढ़ रही है। लेकिन स्मार्ट फोन के उपयोग के साथ इसके दुरूपयोग के तरीकों के बारे में आदिवासियों को ज्यादा जानकारी नहीं है। इस घटना इस बात का भी उदाहरण है कि आदिवासी बहुत गरीब हैं और छात्रवृत्ति का पैसा भी उनके लिए कितना मायने रखता है कि भोली भाली लड़कियां वो पैसा पाने के लिए ठगों और नराधमों के जाल में फंस जाती हैं। ऐसे लोगों को कड़े से कड़ा दंड दिया जाना चाहिए।

पाकिस्तान बारूद के ढेर पर !

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी विचारक हैं।

पिछले कुछ समय से पाकिस्तान देश और दुनिया की खबरों में प्रमुखता से छाया हुआ है। इसके अनेक कारण हैं, जिनकी चर्चा मैं आगे करूंगा। जो खबरें प्रमुखता से आ रही हैं वह यह है कि, पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था पतन की ओर अग्रसर है और एक अर्थ में डूबती अर्थव्यवस्था कही जा सकती है। पिछले दशकों में पाकिस्तान ने दुनिया से, विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से भारी कर्ज लिया है, उस कर्ज को चुकाना संभव नहीं हो रहा है। हाल ही में ऐसी खबरें आई हैं कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की टीम पाकिस्तान को इस कर्ज के भुगतान की स्थिति से बचाने के लिये और एक नया कर्ज जो उसे बेल आउट करने के लिये है, उसे किन शर्तों पर दिया जाय, इसकी चर्चा करने पाकिस्तान पहुंची है।

अफगानिस्तान के जिन तालिबानियों को पाकिस्तान ने अपने यहां रखा था वे और उनका कट्टर पंथ पाकिस्तान के लिये खतरा बन गया है। उन तालिबानियों को पाकिस्तान अपने देश से निकाल कर अफगानिस्तान भेजना चाहता है। क्योंकि वे अनियंत्रित हो चुके हैं और पाकिस्तान की स्थितरता को खतरा बन चुके हैं। दूसरी ओर अफगानिस्तान की तालिबान हुकूमत उन्हें संरक्षण दे रही है और कुछ अर्थों में पीठ सहला रही है। अफगान और पाक सीमा के दोनों ओर भारी तनाव है और हालात एक छोटे-मोटे मुठभेड़ के रूप में उभर रहे हैं।

पाकिस्तान के तीन हिस्सों में भयावह बैचेनी है। और वहां का जनमत पाकिस्तान और सेना के दबाव से मुक्ति चाहता है। बलूचिस्तान जहां के खान अब्दुल गफ्फार खान थे। वह गांधी के अनुयायी और भारत विभाजन के खिलाफ थे। कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक जो आजादी के पहले महात्मा गांधी की मांग पर बुलाई गई थी उस बैठक में महात्मा गांधी के भारत विभाजन के विरोध के प्रस्ताव का समर्थन करने वाले जो मात्र तीन लोग थे उनमें से एक सीमांत गांधी थे। उन्हें अपने भारत विभाजन के विरोध की भारी कीमत भी चुकानी पड़ी तथा पाकिस्तान बनने के बाद उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय पाक हुकूमत की जेलों में काटा या नजरबंद रहे। पख्तून लोगों ने कभी भी पाकिस्तान को इस रूप में स्वीकार नहीं किया और वे एकधर्म का देश बनाने के पक्षधर भी नहीं थे। किंतु मुस्लिम लोग और उसके मुखिया जिन्ना जो ब्रिटिश हुकूमत के हाथों खेल रहे थे और अपनी महत्वाकांक्षाओं के चलते भारत को बांटने के आपराधिक खेल में लगे थे। उन्होंने अंग्रेजों के साथ सांठ-गांठ कर पख्तूनों की आवाज को दबा दिया। कांग्रेस का उस समय का शीर्ष नेतृत्व केवल महात्मा गांधी को छोड़कर जो कांग्रेस के संगठनात्मक नेता भी नहीं थे वह न सदस्य और न पदाधिकारी थे, वह केवल नैतिक नेता थे। गांधी को कांग्रेस संगठन के नेतृत्व ने धोखा दिया। बापू की उस राष्ट्रीय कार्यकारिणी में घोर अवमानना की गई, जिसका शब्दसरू वर्णन डॉ. राममनोहर लोहिया ने अपनी पुस्तक श्भारत विभाजन के अपराधीय में किया है। नेहरू और पटेल जैसे गांधी के शिष्यों ने न केवल धोखा दिया बल्कि उन्हें अपमानित भी किया। गांधी के भारत विभाजन के विरोध को नकार दिया और उनके इस महत्वपूर्ण प्रस्ताव को भी महत्व नहीं दिया कि अगर भारत का विभाजन करना ही है तो वह अंग्रेज न करे। वे भारत छोड़कर चले जायें, बाद में हम भारतवासी आपस में मिलकर तय कर लेंगे। किंतु इसको भी कांग्रेस नेतृत्व ने स्वीकार नहीं किया। इस प्रस्ताव के बारे में डॉ. लोहिया ने लिखा कि मैंने अपने जीवन में कूटनीतिक प्रस्ताव कोई और नहीं देखा है। अगर इतना भी कांग्रेस नेतृत्व ने स्वीकार कर लिया होता तो भारत का विभाजन भी टल सकता था। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस तथ्य के बाद भी कुछ लोग एक योजना के तहत महात्मा गांधी को भारत विभाजन का अपराधी मानते हैं। सीमांत गांधी इस बंटवारे से इतने क्षुब्ध हुये थे कि उन्होंने कांग्रेस के नेतृत्व को सार्वजनिक रूप से इंगित कर कहा था कि आपने मुझे भेड़ियों के सहारे छोड़ दिया, वे सिंध और पंजाब के मुस्लिम नेताओं की कट्टरता और सत्ता की हवस को समझते थे, जो उस समय मुस्लिम लीग के और जिन्ना की टोली के सबसे बड़े भार बन चुके थे।

जिन्ना की मुस्लिम लीग भी देश के पश्चिम और पूर्व से ज्यादा समर्थन प्राप्त कर रही थी जहां कट्टरता और कट्टर तत्व मुस्लिम लीग के नेतृत्व में हिंसक रास्ते पर थे। जहां एक तरफकांग्रेस नेतृत्व ने महात्मा गांधी की बात नहीं मानी, वहीं दूसरी ओर मुस्लिम लीग ने (डायरेक्ट एक्शन) यानी सीधी मारकाट कर बंटवारे की आग में घी झोंक दिया था। जो थोड़े बहुत विभाजन के खिलाफमुस्लिम भाई थे, उनकी आवाज नक्कारखाने में तूती की आवाज बन गई थी। 1943 में भारत के एक पक्षधर अल्लाह बक्स की भारत के विभाजन के पक्षधरों और कट्टरपंथियों के द्वारा हत्या के बाद मुस्लिम लीग की उग्रता आसमान पर थी। ब्रिटिश हुकूमत का उनको संरक्षण था। वह कितना अधिक था इसका प्रमाण इससे मिलता है कि महात्मा गांधी के अनुयायी और भारत विभाजन के विरोधी अल्लाह बक्स की हत्या के मुकदमे में अभियोजन याने सरकार ने ठीक पैरवी तक नहीं की, जिससे हत्यारे रिहा हुये। यहां तक कि फैसला देने वाले जज ने दुखी होकर लिखा कि मैं अपराधियों को निर्दोष नहीं मानता हूँ परंतु प्रमाणों के अभाव में उन्हें छोड़ना मेरी लाचारी है।

बलूचिस्तान भी कभी बंटवारे के पक्ष में नहीं था। और बलूचिस्तान के लोगों का पंजाब और सिंध के कट्टरपंथ तथा मुस्लिम लीग के साथ मतभेद थे। पाकिस्तान बनने के बाद पंजाब और सिंध के कट्टरपंथी सत्ताधीशों ने कभी भी बलूचिस्तान नागरिकों को बराबरी का दर्जा नहीं दिया और न न्याय संगत भागीदारी दी। आज स्थिति यह है कि बलूचिस्तान का जनमत उसी प्रकार पाकिस्तान से अलग होना चाहता है जिस तरह से पख्तूनिस्तान का।

पाक अधिकृत कश्मीर भी अब न केवल मानसिक बल्कि भौतिक रूप से विद्रोह की कगार पर है। वैसे भी यह अंचल भारतीय भूभाग था। जिसे हिंदुस्तान की संसद ने भी सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर भारतीय भूभाग माना है। यह तथ्य किसी से छिपा हुआ नहीं है कि जब कश्मीर के राजा ने पाकिस्तानी सेना के कबीलाई के रूप में हमले के बाद भारत में विलय का निश्चय किया। तब यह पीओके का हिस्सा कश्मीर का अभिन्न अंग था और स्वाभाविक है कि कश्मीर के विलय के बाद यह भारत का हिस्सा था। जिसे पाकिस्तान की सेना ने एक प्रकार से बलपूर्वक ले लिया था। उस समय भी कांग्रेस सरकार के नेतृत्वकर्ता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी सेना को आक्रमण करने से रुकवा दिया था बल्कि स्वतरू संयुक्त राष्ट्र संघ जाकर युद्ध विराम के प्रस्ताव को रखना, वह उनकी भारी भूल थी। तभी से पाकिस्तान की सरकारें पीओके के नागरिकों के साथ दोहरा व्यवहार कर रही हैं। वहां निर्वाचन के नाम पर बलात पाकिस्तान की सैन्य हुकूमत पर दलालों को बंदूक की दया पर निर्वाचित घोषित कर दिया जाता है। अपने इस भेदभावपूर्ण जीवन से पीओके के नागरिक इतने दुखी हो चुके हैं कि वे पिछले कई सप्ताहों से सड़कों पर हैं और पाक से अलग होने के मानस में जी रहे हैं।

काश अगर आज गांधी जिंदा होते तो उनके प्रति समूचे भारतीय भूभाग के विश्वास और श्रद्धा की छत्रछाया में भारत विभाजन की नकली रेखा मिट जाती। काश अगर आज लोहिया जिंदा होते तो वे इस समूचे विद्रोह की आग में जल रहे अंचलों को साथ लेकर पाकिस्तान का राजनैतिक स्वरूप बदल देते। लोहिया की संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी का जो जीवंत रूप 1960 के दशक में था, अगर आज होता तो इस समय विभाजन की रेखा को मिटाने के लिये एक महत्वपूर्ण भूमिका पार्टी निभा सकती थी। इस समय पूरे देश को एकजुट होकर पीओके को आजाद कराने और वापिस लेने की भूमिका में होना चाहिए। पर यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कांग्रेस के एक पूर्व नेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री मणिशंकर अय्यर पाकिस्तान के परमाणु हथियार की चर्चा कर पीओके को आजाद होने से और पाकिस्तान विभाजन को रोकने के अंतरराष्ट्रीय षडयंत्र के जाने अनजाने हिस्सेदार बन रहे हैं। जम्मू कश्मीर का वर्तमान नेतृत्व और फारूख अब्दुल्ला तथा उनकी पार्टी ढुलमुल और राष्ट्विरोधी लाइन लेती रही है। यहां तक कि जब वे भाजपा के अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में केंद्रीय मंत्री थे तब वे भाजपा के प्रचार में छिंदवाड़ा आये थे। तब उन्होंने सार्वजनिक बयान दिया था कि पीओके की सीमा को एलएसी याने लाइन आफ एक्चुअज कंट्रोल की सीमा मानना चाहिए जो कि एक राष्ट्रद्रोही बयान था। यह भी आश्चर्यजनक तथ्य है कि संघ नियंत्रित भाजपा सरकार में वे यथावत मंत्री बने रहे।

पीओके को वापिस लेने का भारत के लिये यह सबसे उपयुक्त समय है। इस समय पाकिस्तान बिखराव के चरम पर है। वह कर्ज से गले तक डूब चुका है, अर्थव्यवस्था कमजोर है और निर्वाचित जनप्रतिनिधि जेलों में बंद हैं तथा सैन्य सत्ता अपने मोहरों के माध्यम से बूंदक के दम पर सत्ता को टिकाये हुए है। अगर आज भारत पीओके को वापिस लेने के लिये सैन्य हस्तक्षेप करेगा तो उसे वैश्विक और विदेश नीति के स्तर पर पाकिस्तान के जनमत और हालात में तथा संयुक्त राष्ट्र संघ में भी कोई विशेष चुनौती का सामना नहीं करना पड़ेगा। बल्कि पाकिस्तान के जो लोकतांत्रिक ढंग से निर्वाचित नेता हैं, जिन्हें किसी न किसी आधार पर जेल में बंद कर सेना अपने मोहरों से सरकार चला रही है वह भी सेना की कमजोरी से आजाद हो सकेंगे और पाकिस्तान में लोकतंत्र की बहाली हो सकेगी। यदि भारत ने कुशलतापूर्वक अपनी भूमिका अदा की तो पख्तूनिस्तान और बलूचिस्तान भी आजाद हो सकते हैं।

देश को पश्चिमी सीमाओं के तनाव से मुक्ति मिल सकती है। कश्मीर समस्या हल हो सकती है। चीन द्वारा साहूकारी रूपी विदेश नीति के माध्यम से जो पाकिस्तान का इस्तेमाल वन रोड वन बेल्ट जैसी योजनाओं के माध्यम से तथा व्यापार की महत्वपूर्ण योजनाओं में किया जा रहा है उसे भी रोका जा सकता है। चाबहार बंदरगाह का ठेका ईरान ने भारत को दिया। ईरान और भारत के रिश्ते भी इस निर्णायक कदम में सहयोगी होंगे। ईरान एक शिया बहुल देश है और उसकी यह संरचना भारत के समर्थन का आधार भी हो सकती है।

अगर हम भारत और भारतीय के रूप में विचारकर इस अवसर का प्रयोग करेंगे तो फिर एक बार भारत की व्यापक एकता को हासिल करने का यह उपयुक्त अवसर होगा। यदि हम राष्ट्रीय सवालों को दलीय चश्मे से देखेंगे तो फिर हम अवसर चूक जायेंगे।

महाराष्ट्र में अब जीत और हार पर मंथन

चुनाव की डायरी

नवीन कुमार

लेखक स?तंभकार हैं।

इस लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र बहुत कुछ कहने जा रहा है। अगर बदलती राजनीति के साथ महाराष्ट्र का मूड भी बदल रहा है तब तो मोदी के लिए यह राज्य अपना हो सकता है। लेकिन, अगर अपनी संस्कृति के साथ महाराष्ट्र जुड़ा रहता है तो इस राज्य से मोदी को बहुत बड़ा झटका भी मिल सकता है। यह आभास तो एनडीए को लगा ही होगा। तभी तो मोदी ने यहां लगभग 18 रैलियां की और एक रोड शो मुंबई में किया जो विवादित रहा है यानी जिस घाटकोपर इलाके में रोड शो किया गया वहां होर्डिंग दुर्घटना में एक दर्जन लोगों की जान गई थी और मोदी ने उनके प्रति संवेदना भी जाहिर नहीं की।

आम महाराष्ट्र में लोकसभा चुनाव के अंतिम चरण के मतदान होने के बाद अब जीत और हार पर मंथन शुरू हो गया है। एनडीए-महायुति और इंडिया-महा विकास आघाडी दोनों गठबंधन अपनी अपनाई हुई चुनावी रणनीति के तहत अपने पक्ष के आंकड़ों को खंगालने में जुट गए हैं। बाजी मार लेने का भरोसा तो दोनों गठबंधन को है। लेकिन यह इतना आसान भी नहीं लग रहा है। क्योंकि, हर सीट पर टक्कर बराबरी का रहा है। वैसे भी, महाराष्ट्र ऐसा राज्य है जिस पर फोकस दोनों गठबंधनों ने कर रखा था। वजह साफ है कि सीटों के नंबर के हिसाब से यह राज्य उत्तर प्रदेश के बाद देश का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है जहां अगर एनडीए को झटका लगा तो केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए परेशानी बढ़ जाएगी। उत्तर प्रदेश में 80 सीटें हैं तो महाराष्ट्र में 48 सीटें हैं।

मोदी की लहर के साथ ही 2014 और 2019 में बीजेपी ने अविभाजित शिवसेना के साथ मिलकर 48 में से 41 सीटों पर कब्जा कर लिया था। अब परिस्थिति बदली हुई है। परिस्थिति बदलने में बीजेपी की ही भूमिका रही है। अपनी ताकत बढ़ाने के लिए उसने शिवसेना और एनसीपी को तोड़ दिया है। मगर यह माना जा रहा है कि टूटी हुई शिवसेना और एनसीपी को जिस तरह से सहानुभूति की खाद मिली है उससे बीजेपी को बड़ी चुनौती भी मिली है। इस चुनौती का सामना करने के लिए बीजेपी ने अपने ऐसे चुनावी प्रबंधन का इस्तेमाल किया जो महाराष्ट्र की संस्कृति से मेल नहीं खाता है। इसलिए दोनों गठबंधनों के दांव-पेंच बड़े रोमांचक रहे हैं। इसमें किसी एक गठबंधन को सुपर नहीं माना जा सकता है।

राजनीतिक पंडित भी जीत के आंकड़ों पर बहुत ज्यादा मुखर नहीं हैं। यह तो सबको पता है कि शिवसेना और एनसीपी को तोड़ने के बाद बीजेपी ने किस तरह से उद्धव ठाकरे और शरद पवार के मनोबल को तोड़ने का काम किया। शिवसेना के अलग गुट के एकनाथ शिंदे ने उद्धव पर लगातार हमला किया और उन्हें सत्ता के लिए बाला साहेब ठाकरे के विचारों को छोड़ने का आरोप लगाया। उधर एनसीपी के अलग गुट के अजित पवार ने भी 83 साल के अपने चाचा शरद को अपमानित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। कहा तो यही जाता है कि अजित की वजह से पार्टी तो बंटी ही, पवार परिवार भी बंट गया है जो महाराष्ट्र के इतिहास में पहली घटना है।

अब सारी रणनीति सत्ता के लिए ही रची गई तो इसमें शिंदे और अजित खुद को बेदाग ही बताते रहे जबकि उनके साथ दागी नेता ज्यादा हैं। लेकिन इस रणनीति के जवाब में उद्धव और शरद ने खुद को कहीं भी कमजोर रहने नहीं दिया और अपने कुनबे को मजबूत करने में जुटे रहे। ये दोनों चुनावी मैदान में खुद को फिर से खड़े होने की मुद्रा में जिस तरह से दिखे उससे बीजेपी के लिए ये खतरनाक लगने लगे। तब बीजेपी ने इनके खिलाफ साम दंड भेद की रणनीति अपना ली। हमले तेज हुए तो अपनी जनता सेना के साथ उद्धव और शरद ने अपने रथ को विजयरथ में तब्दील करने के लिए कोई कमी नहीं छोड़ी। परिस्थिति और स्थिति को देखते हुए कहा जा सकता है कि दोनों गठबंधनों ने तू डाल डाल मैं पात पात का दृश्य पैदा कर दिया।अब फिर से उन मुद्दों को जानना जरूरी है जो चुनाव प्रचार के दौरान उठते और गिरते रहे हैं। कांग्रेस, शिवसेना (उद्धव गुट) और एनसीपी (शरद गुट) इंडिया-महा विकास आघाड़ी में एकजुट रहे। इस आघाडी ने लोकतंत्र और संविधान को बचाने का मुद्दा जोर शोर से उठाया। यह मुद्दा कामयाब रहा जिसे जनता ने स्वीकार भी किया।

इसके अलावा आघाडी बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार के मुद्दों से युवाओं, आदिवासियों और किसानों को भी अपनी ओर खींचने में सफल रहा। मोदी के कट्टर हिंदुत्व के जवाब में उद्धव अपने नरम हिंदुत्व से मुसलमानों के दिलों में बैठ गए। शरद ने इस चुनावी इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा कि जज्बा बुलंद हो तो मैदान में उम्र

भी एक बड़ी ताकत बन जाती है। इस बूढ़े शेर की दहाड़ ने मोदी जैसे नेता को भी विचलित करने की कोशिश की। तभी तो मोदी ने शरद को भटकती आत्मा तक कह दिया। इसका जवाब भी शरद ने बड़े सुंदर तरीके से दिया, कहा हां, मैं हूं किसानों के लिए, खुद के स्वार्थ के लिए नहीं। मैं अपने किसानों का दर्द बताने के लिए भटकता हूं। महंगाई से आम आदमी परेशान है, ये बताने के लिए मैं भटकता हूं। शरद ने अपने इस जवाब से चुनावी राजनीति में अलग मुकाम भी हासिल किया। अब देखिए, अजित गुट के मंत्री दिलीप वलसे पाटिल और छगन भुजबल कहने लगे कि शरद पवार और उद्धव ठाकरे के साथ सहानुभूति की लहर है। यह बात आम जनता तक भी पहुंची और निश्चित रूप से इसका फायदा शरद और उद्धव को मिला होगा। कहा जाता है कि मोदी के हर हमले से फायदा शरद और उद्धव को मिला है। शरद की एनसीपी को नकली और उद्धव की शिवसेना को नकली कहने से भी इनके प्रति सहानुभूति पैदा हुई है। बाला साहेब को मानने वाले शिवसैनिकों को यह भी बुरा लगा कि मोदी ने उद्धव को बाला साहेब का नकली पुत्र कहा। अब ऐसे शिवसैनिकों ने ईवीएम मशीन में ही अपना जवाब डाला होगा। मोदी ने एक और चाल चली यह कहकर कि कांग्रेस में मरने से अच्छा है कि उद्धव शिंदे के साथ और शरद अजित के साथ हो लें। हालांकि, राजनीतिक पंडितों को इसमें कमजोर मोदी दिखे और यह संकेत भी मिले कि महाराष्ट्र मोदी को 2014 और 2029 की तरह स्वीकार नहीं कर रहा है।

इस लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र बहुत कुछ कहने जा रहा है। अगर बदलती राजनीति के साथ महाराष्ट्र का मूड भी बदल रहा है तब तो मोदी के लिए यह राज्य अपना हो सकता है। लेकिन, अगर अपनी संस्कृति के साथ महाराष्ट्र जुड़ा रहता है तो इस राज्य से मोदी को बहुत बड़ा झटका भी मिल सकता है। यह आभास तो एनडीए को लगा ही होगा। तभी तो मोदी ने यहां लगभग 18 रैलियां की और एक रोड शो मुंबई में किया जो विवादित रहा है यानी जिस घाटकोपर इलाके में रोड शो किया गया वहां होर्डिंग दुर्घटना में एक दर्जन लोगों की जान गई थी और मोदी ने उनके प्रति संवेदना भी जाहिर नहीं की। अब उनके सबसे खास उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने 115 सभाएं की। फडणवीस के ज्यादा से ज्यादा सभा करने से बीजेपी के दूसरे नेता नाराज हैं कि फडणवीस ने उन्हें कमजोर दिखाने की कोशिश की।

बीजेपी ने जातीय समीकरण को भी बिगाड़ा है। इससे मराठा और ओबीसी आमने-सामने थे। इसका खामियाजा खुद बीजेपी को ही भुगतना पड़ रहा है। एनडीए-महायुति के घटक दलों में भी विश्वास की कमी थी। इसलिए यह माना जा रहा है कि बीजेपी, शिंदे गुट की शिवसेना और अजित गुट की एनसीपी के नेता एक-दूसरे के उम्मीदवारों को कमजोर करने की कोशिश की। अब तो शिंदे गुट के नेता खुले तौर पर अजित गुट पर मदद नहीं करने का आरोप लगा रहे हैं। अजित गुट भी यह मंथन कर रहा है कि शिंदे गुट और बीजेपी के नेताओं ने उसे कहां-कहां नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया है। इस तरह के छल-प्रपंच का खेल चलता रहा है। लेकिन इंडिया-महा विकास आघाडी इससे बचा रहा है।

आखिरी चरण के मतदान तक जिस तरह के राजनीतिक खेल खेले गए उसके बाद संभावित नतीजों के जो ग्राफ उभर कर आ रहे हैं उसमें बीजेपी की स्थिति पतली दिख रही है। ऐसा कहा जा रहा है कि बीजेपी के लिए 2019 को दोहराना मुश्किल है। शिंदे के बारे में कहा जा रहा है कि वह अपनी मौजूदगी दर्ज तो करा लेंगे लेकिन अजित अपना खाता नहीं खोल पाएंगे। उद्धव की शिवसेना मजबूत स्थिति में है तो शरद की एनसीपी और कांग्रेस को बढ़त मिलती दिख रही है। अगर सच में नतीजों की यही स्थिति रहती है तो इन सभी दलों को अगले विधानसभा चुनाव के लिए भी नए सिरे से मंथन करने की जरूरत पड़ेगी।

चम्मच कहाँ मिलेंगे?

अभी - अभी करोड़पति से अरबपति की गिनती में आए भूरा भिया ने दिल के साथ जेब खोलकर बेटे काजू की शादी का आयोजन किया, शादी के कार्ड पड़ोसियों, मोहल्ले वाले, दुकान वाले, रेहड़ी वाले दूर की पहचान वाले, बिना पहचान वाले और रास्ते चलते लोगों को भी बांटे गए, जिससे शहर का सबसे बड़ा गार्डन आगन्तुकों से खचाखच भर गया, धीरे धीरे भीड़ बढ़ने के बाद शादी का समारोह वृहद भंडारे में

कटाक्ष

धर्मेंद्र जोशी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

तब्दील हो गया, कई जोड़े बिछड़ गए और कई बरसों पुराने फिर से मिल गए, जो लोग आदतन देर से पहुँचे उनको बेरंग लौटना पड़ा, और घर आकर दाल भात से रात व्यतीत करना पड़ी।

कई लोगों को पहली बार नवीन अनुभवों से गुजरना पड़ रहा था, संभ्रांत परिवार से आई हुई महिलाएं, जिनका सीधे ब्यूटी पार्लर से पदार्पण हुआ था, संकोच और मेकअप के बचाव के चलते काउंटर की गर्दी का सामना करने असमर्थ पा रहीं थी, वहीं दूसरी ओर देश की आम जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली साहसी वीरांगना भीड़ को मात देते हुए खाने की प्लेट में रोटी और सब्जी का प्रबन्ध कर स्वयं और अपने बच्चों की सफ़लतापूर्वक उदर पूर्ति कर राहत की साँस ले पा रही थी।

जैसे जैसे समय बीत रहा था, जनसमूह बढ़ता जा रहा था, कई स्टाल पर तो धक्कामुक्की की नौबत आ गई थी, ऐसे कोलाहल में कई लोगों की प्लेट में सरसों की साग तो आ गई थी, लेकिन मक्का की रोटी के आने की कोई संभावना दिखाई नहीं दे रहीं थीं, नामी - गिरामी लोग बहुत देर से अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे, उनका रुतबा कोई काम नहीं आ रहा था,।

हद तो तब हो गई, जब एक बड़े ओहदे के व्यक्ति ने बड़े जतन रोटी का बंदोबस्त किया और किसी ने पीछे से हाथ डालकर रोटी चुरा ली, व्यक्ति का मुँह देखने लायक था द्य कुछ लोगों एक सीमा तक इंतजार किया, मगर जब सभी स्टाल पर उमड़ती भीड़ का नजारा देखा, तो पापड कतरन से ही अपना मन समझा लिया, और किसी ने तो बिना कुछ खाए, लिफाफा काउंटर पर रखी सौफ - सुपारी मुँह में डाली और चबाते हुए प्रस्थान कर गए।

दूसरी ओर कई सुधिजन चम्मच के अभाव में हाथ से ही पेट की क्षुधा मिटाने को आतुर थे, वहीं हमारे मित्र जुगत बाबु जैसे तैसे प्लेट और बाउल की तो जुगाड़ कर गए, मगर चम्मच के बिना खाना नहीं शुरू कर पा रहे थे।

ऐसे में मगन भिया ने उनका मार्गदर्शन कियाअंतिम छोर पर रेकार्ड तोड़ भीड़ के बीच से चम्मच खोजना एक कठिन परीक्षा थी, लेकिन जुगत बाबु अपने नाम के अनुरूप मिशन चम्मच पर निकल गए, मगर बहुत मशक्कत के बाद बिना चम्मच के ही लौटना पड़ा, उल्टे उनके सफेद कुर्ते पाजामे पर लाल पीले रंग के धब्बे अवतरित हो गए, जिसे देखकर कई परिचितों के मुख पर मुस्कराहट आ गई।

बहरहाल, इसप्रकार का मंजर आजकल आम हो गया है, आत्मीय निमन्त्रण का स्थान आडंबर और फूहड़ता ने ले लिया है, पैर पसारते बाजारवाद ने स्नेह और परिवारिक आयोजनों को दिखावे का मंच बना दिया है, यही कारण है कि आजकल चमचों की तो बहुलता है, लेकिन शादी - समारोह में चम्मच मिलना काफी दूभर हो गया है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

साहित्य के अखाड़े में

व्यंग्य

पूरन सरमा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

का 'गोष्ठी अपने 'पीक' पर थी। मैंने साहित्यकार के कुहनी मारकर कहा आंखें खोलो प्रभो। निर्लज्जता की भी हद होती है। काव्य-मीमांसा के तत्वों की व्याख्या की जा रही है।'

मेरी बात पर ध्यान न देते हुए साहित्यकार बोला-'यार दो-तीन दिन से ठीक तरह से सो नहीं पा रहा-घर में बच्चे सोने नहीं देते।'

'लेकिन साहित्यिक गोष्ठी का तो ख्याल करो।' मैंने कहा।

'ख्याल करके ही तो खर्राटे नहीं ले रहा वर्ना नींद जोरों की आ रही है।'

'फिर आए क्यों थे।'

'सोने के लिए।'

साहित्यकार फिर निद्रालीन होकर साहित्य से बेखबर हो गया। मैंने फिर कहा-'यार सुनो आलोचक जी काव्य मीमांसा में रोचकता की दलील दे रहे हैं।'

'क्या साहित्यिक गोष्ठी में निद्रा लेना खुद गंभीर रोचकता नहीं है। ऐसा करो मित्र साहित्य में क्या कुछ होना है, उसे ध्यान से सुनो तथा जागने पर मुझे बता देना। मेरी खोपड़ी मत चाटो-अपना काम करो।'

मैं चुप रहा-बगल में देखा तो दीपंकरजी ने भी आंखें ढ़ेर रखी थीं। मैंने दीपंकरजी को हिलाया और चौकस किया। दीपंकरजी उबल पड़े-'सोते हो न सोने देते हो साहित्य साहित्य की रट लगा रखी है। भैया चुपचाप सुनो। तुम्हारे हाजमे के लिए यह जरूरी है-मेरे स्वास्थ्य के लिए सोना जरूरी है।'

मैं ठण्ड पी गया और सोचने लगा कि साहित्यिक गोष्ठी में क्यों कर आया ? आलोचक को देखा तो उसका व्याख्यान जारी था। वह इस बात से बिल्कुल बे-खबर था कि अस्सी प्रतिशत संभागी निद्रा में डूब गए हैं और वे उसकी कोई बात नहीं सुन रहे।

मैंने आलोचक से ही कहा-'देखिए, भाषण ऐसा दीजिए-ताकि लोग जिन्दे और होश में बने रह सकें। हालात देखिए-तमाम लोग बेहोश हैं।'

वह मेरी कब सुनने वाला था-उसका व्याख्यान जारी था-'कविता की भाषा और उसका मुहावरा अब बदल देना है। उन प्रतीकों से नये कवि को हटना होगा जो कविता को बोदा बनाते हैं। इस अर्थ में काव्यगत वैशिष्ट के लिए स्वयं कवि को सजग रहना चाहिए। हिन्दी कविता में यह समय अत्यन्त हौच-पौच का है-अब कवि और आदमी में फर्क नहीं रह गया है। मेरी राय में कवि को आदमी से अलग होना चाहिए।

जहां तक काव्य मीमांसा की शैली और उसके वैविध्य का प्रश्न है-साहित्यकार की उन परिवेशगत सच्चाइयों को समालोचक को देखना चाहिए, जो कविता में उपस्थित नहीं होती।'

मैं बोर हो गया था-अतः बोला-'यदि कविता में सच्चाई है ही नहीं तो वह खोजी कहां से जाए। देखिए आप तनिक साहित्य का ख्याल करके उसे सुपाच्य बनाये रखिए। ऐसा नहीं हो कि इस गरिष्ठता के कारण उपस्थित तमाम साहित्यकार अपना हाजमा ही खराब कर बैठें।'

मेरी इस बात पर वक्ता आलोचक बोला-'ऐसा है हाजमा उसी का बिगड़ेगा-जो जागेगा। अच्छा आप भी शयन करें।'

'रास्ता इसके सिवा और रहा भी क्या है! परन्तु आप अकेले यह सब क्यों कर रहे हैं।'

'लाला यह साहित्यिक गोष्ठी है। इसमें सोने और जागने की परवाह नहीं की जाती। असलियत यह है कि सो कोई नहीं रहा-तमाम लोग आंखें बंद करके गंभीरता से चिंतन-मनन से डूबे हैं। एक तुम ही ऐसे हो गोष्ठियों के विधान से परिचित नहीं हो। अभी तुम कहोगे कि भाषण से क्या होगा तो इसका जवाब यह है कि देश में अब बिना भाषण के कुछ होने वाला।'

'आप सही फरमाते हैं-बिना भाषण के नींद नही आती। परन्तु इस गोष्ठी का औचित्य क्या है ?' मैंने पूछा।

'औचित्य.........साहित्य अकादमी ने आयोजन के लिए पांच हजार रूपए दिये है। टी. ए., डी. ए. तथा खर्चे के हजार मैं ले जाऊंगा-शेष आयोजक डकारेगा कुछ साथियों के साथ मिल-बैठकर। ऐसे में बचे सहित्यकार सोएं नहीं तो जागकर क्या लेंगे। मुझे मजबूरी में जागना पड़ा है। वर्ना इतना बेवकूफतो मैं भी नहीं हूँ।' वक्ता आलोचक बोला।

'साहित्य अकादमी गोष्ठियों के लिए रूपया क्यों देती है ?' मैंने पूछा।

आलोचक ने दांत पीसे और आयोजक को जगाकर बोला-'यार गोष्ठियों में गैर साहित्यिक लोगों को बुलाते ही क्यों हो ?' मेरी ओर इशारा करके उसने कहा-'यह जीव सर्वथा असाहित्यिक है। साहित्य की रट तो लगा रखी है-परन्तु उसकी गंभीरता से नावाकिफहै। यदि इसे साहित्य की गंभीरता का तनिक भी आभास होता तो यह अब तक सो गया होता। इसे तो लोगों को सोते देखकर परेशान हो रही।'

आयोजक ने नैन उधारे और पैर समेटे तथा मेरी ओर घूमकर देखने के बाद कहा-'आप भाषण दीजिए-बन्दर को अदरक देते ही क्यों हैं।

मामला साहित्य का है-इसे हल्का मत करिये-वर्ना लोग जाग जाएंगे। हमें सबको सोता छोड़कर यह स्थान तत्काल छोड़ना है-वर्ना सबको जलपान कराना पड़ेगा।'

मैं लपककर बोला-'क्या साहित्यिक गोष्ठियों में जपपान की व्यवस्था होती ही नहीं ?' 'यहां केवल व्यवस्था होती है-इसलिए प्यारे मित्र तुम तो तुम्हारा काम करो, सहित्यकार कभी जलपान नहीं करता। मदिरापान करता है वह तो।'

फिर वह आलोचक से बोला-'मेरी राय से तुम अपने लक्ष्य में सफल हो गए हो-गोष्ठी के सारे प्रतिभागी बेहोश हैं-हमें यह स्थल अब छोड़ देना चाहिए।'

आयोजक और आलोचक ने थैला उठाया और गोष्ठी स्थल पर सहित्यकारों को औंधे मुंह पड़ा छोड़कर चल दिए। मैंने सहित्यकारों को जगाया तो वे सब मुझ पर पिल पड़े-'कम्बख्त गैर साहित्यिक है। सारी गोष्ठी का मजा किरकिरा करता रहा है। अच्छी-भली नींद आ रही है तथा सोया न सोने दिया। आगे से इसे मत बुलाओ नहीं।'

मैंने कहा-'वक्ता और आयोजक नदारद हैं आप लोग सोते रहे वे भाग छूटे।'

उल्टा चोर गोतवाल को डांटे वाली कहावत चरितार्थ हुई-सब के सब बोले-'तुम भी क्यों चले गए पाजी।'

मुझे बहुत पीड़ा हुई कि गोष्ठियों के स्वरूप को ये लोग क्योंकर भद्दा बनाने लगे हैं। इसी पीड़ा को लेकर घर लौट आया।

न्याय और कानून

विनय झैलावत

(लेखक पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

वकीलों की सेवाएं उपभोक्ता संरक्षण कानून में नहीं

एक बड़े फैसले में सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में कहा कि उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के तहत वकीलों के खिलाफ दायर शिकायत पोषणीय नहीं होगी। पेशेवरों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएं इस कानून के दायरे में नहीं आएंगी। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 का उद्देश्य उपभोक्ताओं को अनुचित व्यापार प्रथाओं और अनैतिक व्यावसायिक प्रथाओं से सुरक्षा प्रदान करना था। विधायिका का कभी भी व्यवसायों या सेवाओं को इसमें शामिल करने का इरादा नहीं था।

सर्वोच्च न्यायालय ने अपने इस फैसले में कहा कि पेशेवरों के रूप में अधिवक्ताओं की भूमिका, स्थिति और कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए, कानूनी पेशा अपने आप में एक अनूठा पेशा है। प्रकृति में अद्वितीय है और किसी अन्य पेशे के साथ तुलना नहीं की जा सकती है। न्यायालय ने यह भी कहा कि न तो किसी पेशे को इस कारण व्यवसाय या व्यापार के रूप में माना जा सकता है और न ही पेशेवरों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं को व्यापारियों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के बराबर इस कारण नहीं माना जा सकता है, ताकि उन्हें उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के दायरे में लाया जा सके। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 का उद्देश्य उपभोक्ताओं को अनुचित व्यापार प्रथाओं और अनैतिक व्यावसायिक प्रथाओं से सुरक्षा प्रदान करना था।

विधायिका का कभी भी व्यवसायों या सेवाओं को इसमें शामिल करने का इरादा नहीं था। अपने अलग, लेकिन सहमत फैसले में, न्यायमूर्ति पंकज मिथल ने कहा कि पेशेवरों की सेवाओं, विशेष रूप से वकीलों की सेवाओं को उपभोक्ता संरक्षण कानून को लागू करने में इसे बाहर रखा जाना चाहिए। उन्होंने, कुछ अन्य देशों की तरह भारत में भी विधायिका का इरादा पेशेवरों, विशेष रूप से वकीलों द्वारा अपने मुवक्किल को दी जाने वाली सेवाओं को उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 के दायरे में शामिल करने का नहीं था। इसे 2019 में फिर से लागू किया गया था। न्यायालय ने कहा कि इंडियन मेडिकल एसोसिएशन बनाम वीपी शांता और अन्य के सन 1995 के दिए फैसले में इस उपभोक्ता अधिनियम के तहत सेवाओं की परिभाषा के भीतर चिकित्सा चिकित्सकों द्वारा प्रदान की गई सेवाओं को लाता है। एक बड़ी पीठ द्वारा पुनर्विचार किया जाना चाहिए। न्यायालय की इस खंडपीठ ने कहा कि हमारी विनम्र राय में उक्त निर्णय पर इतिहास, उद्देश्य और उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की योजना को ध्यान में रखते हुए चिकित्सकों वाले फैसले पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय ने 2007 के राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग के फैसले को दरकिनार करते हुए कानूनी स्थिति की व्याख्या की। उस फैसले में कहा गया था कि सेवाओं की कमी के लिए शिकायत वकीलों के खिलाफ बनाए रखने योग्य होगी। कानूनी पेशे की अनूठी विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए पीठ ने कहा कि वकील मुवक्किल के स्पष्ट निर्देश के बिना रियायत देने या अदालत को कोई वचन देने के हकदार नहीं हैं। यह उनका गंभीर

कर्तव्य है कि वह उन्हें दिए गए अधिकार का उल्लंघन न करें। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि लोगों को न्यायपालिका में अपार विश्वास है और न्यायिक प्रणाली का एक अभिन्न अंग होने के नाते बार को न्यायपालिका की स्वतंत्रता बनाए रखने के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी गई है। इसमें कहा गया है कि कई बार अधिवक्ताओं को अभिजात वर्ग के बीच बुद्धिजीवी और दलितों के बीच सामाजिक कार्यकर्ता माना जाता है।

इस प्रकार एक वकील को काम की सेवा व्यक्तिगत सेवा के अनुबंध के तहत एक सेवा है। इसलिए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 की धारा 2 (42) में निहित सेवा की परिभाषा के अपवाद में मानी जाएगी। न्यायालय ने कहा कि अधिवक्ता अधिनियम, 1961 और बार काउंसिल ऑफ़ इंडिया रूल्स में व्यापक प्रावधान शामिल हैं जो अधिवक्ताओं के पेशेवर कदाचार का ध्यान रखते हैं और दंड भी निर्धारित करते हैं। न्यायालय ने कहा कि वकील जो आधुनिक सभ्यता के तीन सबसे बड़े गुणों, अर्थात व्यवस्था, न्याय और स्वतंत्रता के संरक्षक हैं, उन्हें उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के दायरे से बाहर रखा जाना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय ने इस मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति बेला एम त्रिवेदी तथा न्यायमूर्ति पंकज मिथल द्वारा की गई। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि कानून की अदालत के समक्ष किसी मामले में जीत या हार का श्रेय कभी भी केवल एक वकील द्वारा अपने मुवक्किल को प्रदान किए गए प्रयासों और सहायता को नहीं दिया जा सकता है।

यह दोनों पक्षों के वकीलों द्वारा एक मुकदमे के लिए किए गए संयुक्त तर्कों का परिणाम है। इस पर अदालतें उचित विवेक के बाद अपना निर्णय देती है। अन्य सामान्य विधि देशों की तरह भारत में भी मुकदमेबाजी की प्रतिकूल प्रणाली की प्रकृति ऐसी ही है। फिर एक वकील के अपने मुवक्किल के प्रति सेवा में कमी होने का सवाल ही कहां पैदा होता है? एक वकील पूरी तरह से अपने मुवक्किल द्वारा प्रदान की गई जानकारी और दस्तावेजों पर निर्भर करता है। उसके पास प्रदान की गई जानकारी की शुद्धता या प्रदान किए गए दस्तावेजों की वास्तविकता निर्धारित करने का कोई अन्य साधन नहीं है। कानून की अदालतों के समक्ष किसी भी मामले में दो पक्ष होते हैं। एक पक्ष मामला जीतेगा, जबकि दूसरा पक्ष मामला हार जाएगा। इसलिए इससे जो तार्किक निष्कर्ष निकाला जा सकता है, वह यह है कि न्यायालय के समक्ष दायर प्रत्येक मामले में एक पक्ष व्यथित होगा, जिसे उसके पक्ष में अनुकूल निर्णय या आदेश नहीं मिला है।

यह अवलोकन करना काफी सामान्य है कि एक न्यायालय द्वारा पारित निर्णयों या आदेशों को उक्त अपीलीय न्यायालय द्वारा अपनाई गई विधि और तथ्यों की एक अलग व्याख्या को देखते हुए अपीलीय न्यायालय द्वारा उलट या संशोधित किया जाता है। यह केवल दीवानी मामलों के लिए ही नहीं है, बल्कि आपराधिक मामलों के लिए भी है। अपीलीय न्यायालय द्वारा दोष सिद्ध या बरी करने के आदेश को दरकिनार कर दिया जाता है। इसलिए, अब उपरोक्त पृष्ठभूमि में यदि वकीलों को, उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के दायरे में आने वाली सेवाएं प्रदान करना माना जाता है, तो यह इस महान पेशे में लगे वकीलों के लिए विनाशकारी परिणाम की ओर ले जाएगा। न्यायालयों के समक्ष यदि कोई पक्षकार, मामला हार जाता है तो वह वकीलों को उपभोक्ता न्यायालयों के समक्ष सेवा में कमी के कारण अपने वकीलों को घसीटने के लिए एक साधन प्रदान नहीं किया जा सकता है। क्योंकि, प्रत्येक मामले के निर्णय में न केवल उनके वकीलों द्वारा प्रदान की गई कानूनी सहायता शामिल होती है। साथ ही मुकदमेबाजी और विवेक के उचित अनुप्रयोग के लिए दोनों पक्षों के तर्कों पर विचार करने के बाद न्यायालयों द्वारा मामले का उचित निर्णय भी शामिल होता है।

वकीलों को उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के दायरे में लाने का सवाल तभी पैदा होता है जब किसी मामले का परिणाम पूरी तरह से वकील के कार्यों पर निर्भर होता। लेकिन चूंकि भारत में एक प्रतिकूल प्रणाली है जहां तथ्यों का निर्धारण करने और विवादों के दोनों पक्षों को सुनने के बाद ही कानून के अनुप्रयोग के बाद मामले की सच्चाई का पता लगाया जाता है, इसलिए वकीलों को उनके द्वारा अपने मुवक्किलों को प्रदान की गई कानूनी सहायता के लिए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के दायरे में नहीं लाया जा सकता है। यदि वकीलों को उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के दायरे में लाया जाता है, तो कोई भी ऐसी स्थिति की कल्पना कर सकता है कि हारने वाला पक्ष अपने विश्वसनीय वकील को उपभोक्ता अदालतों में घसीट रहा होगा। एक पक्षकार यह दावा कर सकता है कि उसके वकील ने उन्हें सेवाएं प्रदान करने में कमी की है। इसके कारण वह कानून की अदालत में अपना मामला हार गया है। उक्त कथित शिकायतकर्ता/मुवक्किल अंततः उक्त आदेश के खिलाफ अपील पर जीत जाता है। कानूनी व्यवसायियों को इस आधार पर उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के तहत जांच के लिए असुरक्षित नहीं बनाया जा सकता है।

यह उल्लेख करना उपयुक्त है कि यदि वकीलों के खिलाफ शिकायत उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के तहत दायर करने की अनुमति दी जाती है, तो यह अनिवार्य रूप से न्यायाधिकरणों, विचारण न्यायालयों, उच्च न्यायालय और माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेश/निर्णय पर उपभोक्ता न्यायालयों द्वारा फिर से देखने की मांग करने के समान होगा। जिन वकीलों के खिलाफ सेवा में कमी का आरोप लगाया गया है, उन मामलों में संबंधित न्यायालय द्वारा पारित आदेश, निर्णय पर विचार किए बिना वकील द्वारा प्रदान की गई सेवा में कमी पर ध्यान नहीं दिया जा सकता है। कानून की अदालत द्वारा पारित आदेश/निर्णय पर इस तरह की पुनः प्रशंसा या पुनर्विचार की अनुमति उपभोक्ता न्यायालयों द्वारा वर्तमान कानूनी ढांचे में नहीं दी जा सकती है।

पुण्यतिथि पर विशेष

सुसंस्कृति परिहार

यूं दूर हो सकती है पं. नेहरू के बारे में फैली गलतफहमी

हिंदुस्तान की कहानी' में पं.जवाहरलाल नेहरू एक जगह लिखते हैं 'पिछली बातों के लिये अंधी-भक्ति बुरी होती है, साथ ही उनके लिए नफ़रत भी उतनी ही बुरी है। इसकी वजह यह है कि इन दोनों में से किसी पर भविष्य की बुनियाद नहीं रखी जा सकती। वर्तमान का और भविष्य का लाजमी तौर से भूतकाल से जन्म होता है और उन पर उसकी गहरी छाप होती है। इसको भूल जाने के मानी हैं इमारत को बिना बुनियाद के खड़ा करना और कौमी तरक्क़ी की जड़ को ही काट देना। राष्ट्रीयता असल में पिछली तरक्क़ी, परम्परा और अनुभवों की एक समाज के लिए सामूहिक याद है।'

पंडित नेहरू ने जिस तरह से प्राचीन साहित्य और मिथकों आदि का बहुत गहराई से अध्ययन किया था वह विलक्षण है। पंडित जवाहरलाल नेहरू के बारे में कुछ लोगों की यह धारणा है कि वे भले ही पैदा भारत में हुए हों, चिंतन और रहन-सहन से वे पूरी तरह यूरोपीय थे। नेहरू जी के बारे में इस तरह की गलत धारणा फैलाने में दक्षिणपंथी विचारों में विश्वास करने वाले संगठनों एवं समूहों की महत्वपूर्ण भूमिका है। दकियानूसी और हिंदुत्ववादी ताकतों ने इस तरह के भ्रम को विस्तार देने में कोई कसर नहीं उठा रखी है। यह बात पूरे विश्वास के साथ कही जा सकती है कि इस तरह का भ्रम अज्ञानता अथवा प्रायोजित प्रयासों पर आधारित है। ऐसे तत्व यदि नेहरू जी के विचारों का, उनकी पुस्तकों का, अध्ययन करते तो उनका यह भ्रम दूर हो सकता है।गलतफहमी दूर करने नेहरू जी विभिन्न ग्रंथों के बारे में राय जानना बहुत ज़रूरी है पहले वेदों को ही लें वेदों की चर्चा करते हुए पं. नेहरू कहते हैं कि'शुरू की अवस्था में आदमी के दिमाग़ ने अपने को किस रूप में प्रकट किया था और वह कैसा अद्भुत दिमाग़ था। वेद शब्द की व्युत्पत्ति व्युद धातु से हुई है जिसका अर्थ जानना है और वेदों का उद्देश्य उस समय की जानकारी को इकट्ठा कर देना था। उनमें बहुत सी चीजें मिली-जुली हैं। स्तुतियां हैं और बड़ी ऊँची प्रकृति संबंधी कविताएं हैं। उनमें मूर्तिपूजा नहीं है। देवताओं के मंदिरों की चर्चाएं नहीं हैं जो जीवनी-शक्ति और जिंदगी के लिये इकरार उनमें समाया हुआ है वह ग़ैर मामूली है। शुरू के वैदिक आर्य लोगों में जिंदगी के लिये उमंग थी, वे आत्मा के सवाल पर ज़्यादा ध्यान नहीं देते थे।'महाभारत के बारे में नेहरू जी लिखते हैं-

'महाकाव्य की हैसियत से रामायण एक बहुत बड़ा ग्रन्थ जरूर है और उससे लोगों को बहुत चाव है लेकिन यह महाभारत है जो दरअसल दुनिया की सबसे खास पुस्तकों में से एक है। यह एक विराट कृति है। परंपराओं और कथाओं का और हिंदुस्तान की कदीमी राजनैतिक और सामाजिक संस्थाओं का यह एक विश्व-कोष है। महाभारत में हिंदुस्तान की बुनियादी एकता पर जोर देने की बहुत निश्चित कोशिश की गई है। महाभारत एक ऐसा बेशकीमती भंडार है कि हमें उसमें बहुत तरह की अनमोल चीजें मिल सकती हैं। यह रंगबिरंगी घनी और गुदगुदाती जिंदगी से भरपूर है। इस मामले में यह हिंदुस्तानी विचारधारा के दूसरे पहलुओं से हटकर है जिसमें तपस्या और जिंदगी से इंकार पर जोर दिया गया है। महाभारत की शिक्षा का सार यदि एक जुमले में कहा जाए तो है- 'दूसरे के लिये तू ऐसी बात न कर जो खुद तुझे अपने लिए पसंद न हो।

भगवत गीता के बारे में नेहरू एक प्रसिद्ध विदेशी विद्वान विलियम बाण्डहॅबोल्ट के विचारों को उद्धृत करते हुये कहते हैं,'यह सबसे सुंदर और अकेला दार्शनिक काव्य है जो किसी भी जानी हुई भाषा में नहीं मिलता है। बौद्धकाल से पहले जब इसकी रचना हुई तब से लेकर आज तक इसकी लोकप्रियता और प्रभाव नहीं घटा है और आज भी इसके लिये पहले जैसा आकर्षण बना हुआ है। इसके विचारों और फिलसफे को हरेक संप्रदाय श्रद्धा से देखता है और अपने-अपने ढंग से इसकी व्याख्या करता है। संकट के समय जब आदमी का दिमाग संदेह से सताया हुआ होता है और अपने फर्ज़ के बारे में दुविधा उसे दो तरफ़ खींचती है, वह रोशनी और रहनुमायी के लिये गीता की तरफ़ और भी झुकता है क्योंकि यह संकट-काल के लिये लिखी हुई कविता है। चूंकि आज के हिंदुस्तान में मायूसी छायी हुई है और उसके चुपचाप रहने की भी एक हद हो गई है इसलिये फल की आशा किये बिना काम में लगे रहने का संदेश इस समय अत्यधिक प्रासंगिक लगता है। दरअसल गीता का संदेश किसी संप्रदाय या जाति के लिये नहीं है। क्या ब्राह्मण, क्या निम्न जाति, सभी के लिये है। गीता में कहा गया है कि सभी रास्ते मुझ तक आते हैं।

स्वाधीनता संग्राम में नेहरू ने कुल 9 साल कारागार में बिताये। वह लाहौर, अहमदनगर, लखनऊ और नैनी जेलों में रहे। वहीं इनका अध्ययन और लेखन परिपक्व हुआ। कारागार के समय का उन्होंने सकारात्मक सदुपयोग किया। वह सुबह 9 बजे से लिखना पढ़ना शुरू करते थे और देर रात तक उनका यह क्रम चलता रहता था। जेल के एकांत और अवकाश ने उन्हें देश के इतिहास, सभ्यता, संस्कृति और परम्पराओं के अध्ययन और पुनर्मूल्यांकन का अवसर दिया। उनका लेखन आत्ममुग्धता के लिए नहीं, बल्कि देश की एक ऐसी तस्वीर प्रस्तुत करने के लिए था, जिस से देश का स्वाभिमान जागृत किया जा सके। उन्होंने कुल चार पुस्तकें लिखीं।1921 में पहली पुस्तक लिखी गयी, पिता के पत्र पुत्री के नाम जिसमें उन्होंने प्रागैतिहासिक काल का विवरण दिया है। 1934-1935 में उनकी क्लासिक कही जाने वाली पुस्तक विश्व इतिहास की एक झलक आयी। 1936 पं. जवाहर लाल नेहरू की आत्मकथा, 'माई ऑटोबायोग्राफी' और 1946 में दर्शन, इतिहास और संस्कृति को लेकर लिखी गयी पुस्तक भारत एक खोज प्रकाशित हुई।

उनके इतिहास बोध को समझने के पूर्व उनकी पुस्तकों के बारे में जानना आवश्यक है।कुल मिलाकर नेहरू का इतिहास बोध, भारतीय संस्कृति की तरह विराट और विशाल तो था ही, गंगा की तरह अविरल प्रवाहयुक्त और सार्वभौम भी था उनके बारे में तरह तरह के ऊल-जलूल वक्तव्य देने वालों को चाहिए वे उन्हें पढ़ें खासतौर पर पर भारत एक खोज को। जिसमें उन्होंने भारत देश की संस्कृति और उसके विस्तार पर बड़े ही अन्वेषण पूर्ण विचार रखे हैं और इसे जानने पढ़ने के बाद यह महत्वपूर्ण बात कही कि ÷राष्ट्रीयता असल में पिछली तरक्क़ी, परम्परा और अनुभवों की एक समाज के लिए सामूहिक याद है।

पुण्यतिथि पर विशेष

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता

गुटनिरपेक्षता के प्रणेता जवाहरलाल नेहरू

नेहरू आधुनिक भारत के निर्माता थे जिन्होंने सोलह साल तक भारत के पहले राजनीतिक केंद्र का नेतृत्व किया । राष्ट्र निर्माण की जिस परियोजना का सूत्रपात नेहरू ने किया था उसके मुख्य सात आयाम थे । राष्ट्रीय अखंडता, संसदीय लोकतंत्र, समाजवाद, सेकुलरवाद, वैज्ञानिक चेतना,उद्योगीकरण और गुटनिरपेक्षता । नेहरू ने इन आयामों को भारतीय संस्कृति और इतिहास का अभिन्न अंग बताया था जो समस्त भारतवासियों की सहमति और स्वेच्छा पर आधारित है । यह परियोजना एक राष्ट्र के रूप में भारत के बचे रहने के लिए अनिवार्य है । 1947 में स्वतंत्र हुए भारत ने किसी एक महाशक्ति का अनुयायी बनने की बजाए अपनी एक स्वतंत्र विदेश नीति अपनाई । जबकि माओत्सेतुंग ने कहा था कि संसार में दो ही रास्ते हैं - एक मास्को की ओर जाता है और दूसरा वाशिंगटन की ओर तीसरा कोई रास्ता नहीं है÷। लेकिन वैश्विक राजनीति में भारत ने अपने और अपने जैसे कई अन्य देशों के लिए तीसरा रास्ता खोज निकाला था जिसे पहले तटस्थता और फिर बाद में गुटनिरपेक्षता कहा गया । शुरुआत में भारत की इस नीति की अवहेलना की गई परन्तु भारत ने पाया कि कुछ अन्य राष्ट्र जैसे यूगोस्लाविया, घाना,मिस्त्र, इंडोनेशिया भी भारत की तरह स्वतंत्र और गुटनिरपेक्ष विदेश नीति का पालन कर रहे हैं । 1961 में बेलग्रेड सम्मेलन में नेहरू ने कहा था कि गुटनिरपेक्ष शब्द की अलग अलग व्याख्या की जा सकती है लेकिन मूलतः इसके अर्थ का प्रयोग विश्व की महाशक्तियों के गुटों से अलग रहने के लिए किया गया है । गुटनिरपेक्षता का यह एक नकारात्मक अर्थ है । यदि आप इसे एक सकारात्मक अर्थ दे तो इसका आशय उन राष्ट्रों से है, जो सैन्य गुटों,सैन्य संधियों और इस प्रकार की अन्य बातों का विरोध करते हैं । गुटनिरपेक्षता का मुख्य उद्देश्य विश्व शांति के लिए प्रयास करना और उपनिवेशवाद तथा जातिवाद के विरुद्ध संघर्ष करना था । बेलब्रेड सम्मेलन में घोषणा की गई कि 'शांतिपूर्ण सहअस्तित्व' के सिद्धांत से ही 'शीतयुद्ध' और संभावित परमाणु विध्वंस से बचा जा सकता है । साथ ही सम्मेलन में घरेलू मामलों में विदेशी हस्तक्षेप एवं रंगभेद की नीति की निंदा की गई । इसमें आर्थिक,सामाजिक एवं राजनीतिक पिछड़ेपन को दूर करने की आवश्यकता पर बल दिया गया और साथ ही बर्लिन की समस्या,संयुक्त राष्ट्र में साम्यवादी चीन की सदस्यता, कांगो की समस्या आदि अंतरराष्ट्रीय समस्याओं की ओर भी दुनिया का ध्यान आकर्षित किया गया । यह भी स्पष्ट किया गया कि गुटनिरपेक्षता का अर्थ निष्क्रियता नहीं है बल्कि उपनिवेशवाद - विरोध और जातिवाद विरोध है । प्रथम आम चुनाव के बाद नीरद सी.चौधरी ने नेहरू पर एक लेख लिखा जिसमें वे लिखते है कि नेहरू पश्चिम के महान लोकतंत्रों के बीच भारत के प्रतिनिधि हैं और भारत में पश्चिमी लोकतंत्रों के । पश्चिमी देश उनकी तरफ आशाभरी निगाहों से देख रहे हैं और उनसे उम्मीद कर रहे हैं कि वे उनके प्रति भारत का समर्थन सुनिश्चित करें । यही वजह है कि पश्चिमी लोकतंत्र तब विचलित हो जाता हैं जब नेहरू पश्चिम विरोधी या निष्पक्ष रुख अख्तियार करने की बात करते हैं । उन्हें लगता है कि उन्हीं का कोई अपना उन्हें नीचा दिखा रहा है । नेहरू ने अपने लंबे प्रधानमंत्री कार्यकाल के साथ साथ विदेश मंत्री की भूमिका का भी बखूबी निर्वहन किया । नेहरू के पास स्पष्ट वैश्विक दृष्टिकोण था और वे लगातार विश्व की प्रवृत्तियों और आंदोलनों को भी जान समझ रहे थे । नेहरू ने दो महायुद्धों के बीच यूरोप में होने वाली बहसों पर गंभीर नजर रखी और कभी कभी उनमें हिस्सा भी लिया था । नेहरू के विचारों की एक स्पष्ट झलक उनके 1938 में यूजटन के फ्रेंड्स हाउस में दिये गए भाषण में मिलती है जो 'शांति और साम्राज्य' विषय पर केंद्रित था । अपने भाषण की शुरुआत उन्होंने फासीवादी आक्रामकता से की ओर कहा कि फासीवाद दरअसल साम्राज्यवाद का ही एक रूप है । जबकि इग्लैंड में दोनों को अलग अलग माना जा रहा था । लेकिन नेहरू के दिमाग में यह बात पूरी तरह से साफ थी कि जो लोग पूरी दुनिया की जनता के लिए संपूर्ण आजादी की बात करते हैं उन्हें फासीवाद और साम्राज्यवाद दोनों की ही मुखालफत करनी चाहिए । भारत छोड़ो आंदोलन में वे पूरी तरह से ब्रिटिश साम्राज्य के खात्मे की अंतिम लड़ाई में लग गए । लेकिन जैसे ही स्थिति स्पष्ट हुई कि भारत जल्द ही आजाद होने वाला है उन्होंने फिर से विदेशी मसलों के बारे में सोचना शुरू कर दिया । सितंबर 1946 में अपने एक रेडियो संदेश में उन्होंने अमेरिका, सोवियत संघ और चीन को भारत के भविष्य की विदेश नीति के लिए सबसे प्रासंगिक देश बताया । 1947 की संविधान सभा में उन्होंने कहा कि भारत को किस तरह अमेरिका और सोवियत संघ दोनों से दोस्ती का व्यवहार रखना चाहिए । बजाए इसके कि वह किसी एक महाशक्ति का अनुयायी बनकर रहे ऐसा करने से उसे कुछ न कुछ मलाई अवश्य मिल सकती है । लेकिन हमें अपना नेतृत्व खुद करना होगा । गुटनिरपेक्षता का सिद्धांत जो पूरी दुनिया में बाद में मशहूर हुआ उसकी शुरुआती झलक नेहरू के इस पत्र में मिलती है जो उन्होंने के.पी.एस.मेनन को जनवरी 1947 में लिखा था । वे लिखते हैं कि हमारी सामान्य नीति यही है कि हम किसी भी तरह के वर्चस्व की राजनीति में न फंसे । हम किसी भी समूह में दूसरे समूह के खिलाफ शामिल न हों। दुनिया में वर्तमान में दो ताकतवर समूह हैं । एक रूसी समूह और दूसरा आंग्ल-अमेरिकी समूह । हमें दोनों ही समूहों के साथ मित्रता का संबंध रखना है और किसी भी समूह में शामिल नहीं होना है । अमेरिका और रूस दोनों ही असामान्य रूप से एक दूसरे के प्रति और अन्य देशों के प्रति शंकालु हैं । इससे हमारी राह आसान नहीं होगी,क्योंकि जब भी हम किसी देश की तरफ थोड़ा भी झुकाव प्रदर्शित करेंगे तो दूसरा हमें शक की निगाहों से देखेगा । ऐसा नहीं होना चाहिए । नेहरू की नज़र में भारत की स्वतंत्रता एक वृहद एशियाई पुनर्जागरण का हिस्सा थी । उनका कहना था कि पिछली शताब्दियां भले ही यूरोपियनों या गौरी नस्ल के लोगों की रही हो, लेकिन अब समय आ गया है कि गैर श्वेत और पूर्व में शोषण का शिकार रहा जनसमुदाय विश्व में अपना उचित हिस्सा प्राप्त करे । मार्च 1947 नई दिल्ली में आयोजित एशियन रिलेशन कॉन्फ्रेंस इस दिशा में एक उल्लेखनीय पहल थी । 1949 में नेहरू ने अमेरिका की यात्रा की और उन्होंने वहां तीन सप्ताह बिताए । अमेरिका में उन्होंने प्रतिदिन भाषण दिया । अमेरिकी कांग्रेस को संबोधित करते हुए नेहरू ने बड़े ही सम्मानजनक तरीके से अमेरिका के संस्थापकों की प्रशंसा की लेकिन साथ ही उन्होंने अपने देश के एक महान नेता को उनके बरक्स खड़ा भी कर दिया । वह नेता थे महात्मा गांधी जिनके सत्य और अहिंसा के सिद्धांत ने स्वतंत्र भारत की विदेश नीति को प्रेरित किया था । नेहरू ने कहा कि महात्मा गांधी किसी भी देश की सीमा से परे बहुत ही महान व्यक्तित्व थे और उन्होंने जो संदेश दिया वह हमें दुनिया की व्यापक समस्याओं के समाधान में मदद करता रहेगा । नेहरू ने अपने भाषण में आगे कहा कि दुनिया में जिस चीज की भारी कमी है वो है राष्ट्रों और व्यक्तियों के बीच एक-दूसरे को समझ पाने की कोशिशों की। कोलंबिया यूनिवर्सिटी में नेहरू ने दुनिया को दो विरोधी खेमों में बांटने के सिद्धांत की आलोचना की। उन्होंने कहा कि भारत किसी भी खेमे का समर्थन नहीं करेगा लेकिन किसी भी विवादित मुद्दे के प्रति अपना स्वतंत्र दृष्टिकोण अवश्य जाहिर करेगा । उनके विचार में युद्ध का मुख्य कारण नस्लवाद और साम्राज्यवाद को लगातार जारी रखने की नीति थी । उन्होंने कहा कि शांति और स्वतंत्रता तभी सुनिश्चित की जा सकती है जब किसी खास देश या नस्ल के वर्चस्व को खत्म किया जा सके । भारतीय प्रधानमंत्री की बातों से अमेरिकी प्रेस काफी प्रभावित हुआ । शिकागो सन टाइम्स ने तो यहां तक लिखा कि ÷कई मायनों में नेहरू,थॉमस जेफरसन के उस विचार के काफी नजदीक हैं जिसमें उन्होंने पूरी दुनिया के लोगों के लिए आजादी की वैश्विक आकांक्षा को आवाज देने की बात कही थी÷। क्रिस्चियन साईंस मॉनिटर ने उन्हें विश्व स्तरीय कद्दावर नेता कहा । टाइम पत्रिका ने भी स्वीकार किया कि भले ही अमेरिकी अभी तक इस बारे में निश्चित न हो पाएं हों कि नेहरू किन मूल्यों के साथ खड़े हैं, लेकिन इतना तय है कि उन्होंने उनमे अगर दुर्लभ सत्य का नहीं तो एक दुर्लभ हृदय का अनुभव जरूर किया है । वही कुछ अमेरिकनों का कहना था कि गुटनिरपेक्षता का सिद्धांत बेकार,अनैतिक और तात्कालिक हितों के लिए है और जो लोग इसकी वकालत करते हैं वे दरअसल छद्मसाम्यवादी हैं । नेहरू ने इन बातों को कभी स्वीकार नहीं किया । ऑस्ट्रेलियन कूटनयिक वाल्टर क्रूकर ने नेहरू के बारे में लिखा कि भारत के प्रधानमंत्री शुरू से ही इस फर्क को जान गए थे जिसकी डलेस वकालत करते थे और जिसके लिए नेहरू की आलोचना करते थे कि अमेरिका मुक्त विश्व और मुक्त जीवन का सबसे बड़ा पैरोकार है, लेकिन भारत अपने तरीके से अपनी राह तय करना चाहता था । नेहरू भारत को संसदीय लोकतंत्र,संविधान का शासन,सभी धर्मों की आजादी और समानता,सामाजिक और आर्थिक सुधार के विराट पथ पर आगे ले जाना चाहते थे, जबकि जिन मुल्कों की डलेस तारीफ और मदद करते थे वे महज अमेरिका से इसलिए मदद पाते थे क्योंकि वे कम्युनिस्ट विरोधी मुल्क थे । जबकि हकीकत में वे मुल्क निर्मम तानाशाही,कुलीनतंत्र ,मजहबी शासन और अक्सर भ्रष्ट और पुरातनवादी शासन व्यवस्था को बढ़ावा देते थे÷। गुटनिरपेक्षता के प्रवक्ता के रूप में नेहरू ने भारत को एशियाई अस्मिता के वाहक की तरह भी देखा । उनकी विदेश नीति के कारण ही द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भारत को अंतरराष्ट्रीय मामलों में दृश्यमानता मिली और वह एक विश्व-मामलों में रचनात्मक भूमिका निभा पाया ।

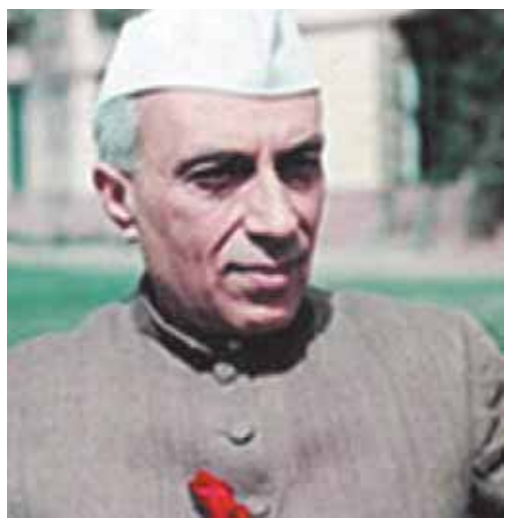

स्कूटी से घर लौट रही शिक्षिका के गले से बाइक सवार ने छीना मंगलसूत्र, फरार

बैतूल। चेन स्नेचिंग के मामले एक बार फिर सामने आने लगे हैं। बैतूल जिला मुख्यालय पर शनिवार करीब रात 10:15 बजे हनुमान मंदिर बारस्कर कॉलोनी के पास एक शिक्षिका के गले से मंगलसूत्र खींचने की वारदात सामने आई है। स्कूटी से घर लौट रही शिक्षिका के घर से कुछ मीटर की दूरी पर हनुमान मंदिर के पास अज्ञात बाइक सवार ने उनके गले का मंगल सूत्र खींच लिया। वारदात की जानकारी एसपी निश्चल झरिया को दी गई उनके द्वारा तत्काल सीसीटीवी चेक करने के लिए निर्देशित किया गया है। शिक्षिका संगीता घोड़की ने बताया कि स्कूटी से घर लौटने के दौरान रात 10:15 बजे हनुमान मंदिर के पास एक व्हाइट कलर की ड्यूक बाइक पर सवार युवक ने उनके गले का मंगलसूत्र खींच लिया और लिंक रोड की ओर भाग गया। इस दौरान मंगलसूत्र का कुछ अंश टूटकर जमीन पर भी गिर गया। यह बाइक सवार कैप भी पहना हुआ था।

नाला सफाई के नाम पर नपा कर रही खानापूर्ति

- स्थानीय लोगों ने लगाया आरोप

बैतूल। बारिश के पहले शहर का ड्रेनेज सिस्टम सुधारने नगर पालिका परिषद बैतूल ने सफाई का काम शुरू किया है। बारिश में नलों में बाढ़ नहीं आ जाए इसीलिए 5 किमी के

अंतर्गत पोकलेन चलाकर सफाई अभियान चलाया जा रहा है। शुक्रवार सुबह मोती वार्ड में झाडियों और मलबा निकाला जा रहा है। चक्कर रोड इंडियन पब्लिक स्कूल के पीछे वाले नाले की सफाई के बाद असंतुष्ट दिख रहे रहवासियों ने बताया कि नगर पालिका इस अभियान के तहत खानापूर्ति कर रही है नालों की गहन सफाई नहीं कर रही है। रहवासी अनिल झाम ने कलेक्टर बैतूल और सीएमओ बैतूल को ज्ञापन सौपते हुए बताया कि यह नाला आधा किमी लंबा है परन्तु सफाई लगभग 100 मीटर तक खानापूर्ति की जा रही है। उन्होने बताया कि वर्षाकाल में गंदगी, बदबु के साथ सांप निकलते रहते हैं। स्थानीय रहवासियों ने मांग की है कि नाले की संपूर्ण सफाई की जाए।

नवीन तकनीक अपनाकर शासन की योजनाओं से लाभान्वित हो रहे किसान

बैतूल। कलेक्टर बैतूल के निर्देशानुसार एवं उपसंचालक कृषि के मार्गदर्शन में रविवार मुलताई विकासखण्ड के अंतर्गत ग्राम डोब निजी कस्टम हायरिंग योजना का निरीक्षण सहायक कृषि यंत्री डा प्रमोद मीणा, वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी केवलराम कौशिक, कृषि विस्तार अधिकारी अनिल डावर, कृषि विस्तार अधिकारी राकेश चौहान द्वारा किया गया। कमलेश देशमुख ग्राम डोब ग्राम पंचायत लेनदागोदी निवासी द्वारा कृषि में आगरा से स्नातक पूर्ण करने के उपरांत कृषि विभाग की योजना निजी कस्टम हायरिंग के अंतर्गत आवेदन किया गया था। जिसमें दो ट्रैक्टर रोटावेटर, कल्टीवेटर सिडडील, प्लाउ, ट्रॉलीय बैंक लोन के आधार पर 25 लाख के प्रोजेक्ट पर पंजाब नेशनल बैंक मुलताई की शाखा से प्रकरण तैयार कर कृषि अभियांत्रिकी विभाग द्वारा 960000 का अनुदान प्राप्त हुआ। देशमुख द्वारा कृषि कार्य करने से प्राप्त राशि से वर्ष 2022-23 में संपूर्ण लोन चुका दिया। उसके उपरांत जो बचत होती थी उससे श्री देशमुख ने विभाग से मिनी दाल मिल पर एक लाख 30000 का अनुदान लिया। रीपर कंबाइंड पर 250000 का लाभ लिया। उन्होने बताया कि वर्तमान वर्ष में लगभग ग्राम डोब सिलादेही नदंबोई जाम के 100 से अधिक किसानों के यहां मांग अनुरूप काम किए जाते हैं। वर्ष 2023-24 में 400 एकड़ में जुताई के कार्य किए गए। जिसमें 700 प्रति घंटे की दर से पलाऊ कल्टीवेटर मिलकर 2 लाख 80 हजार का कार्य किया ढाई सौ एकड़ में लगभग सेट ड्रिल एवं सुपर सीटर के माध्यम से जुताई का कार्य किया। गया। जिसकी दर 900 रूपए प्रति घंटे थी। इससे अर्जित लाभ लगभग 225000 का कार्य किया गया। 1000 ट्राली से मिट्टी एवं खाद डाली गई थी। उपरोक्त संपूर्ण कार्यों वर्ष 2023 -24 में 8,10 हजार की टोटल आय हुई। जिसमें 425000 डीजल का एवं 80000 ड्राइवर सर्विस इंश्योरेंस के लगभग 50000 खर्च हुए, इस तरह शुद्ध लाभ मेरे को 270000 सालाना प्राप्त हुआ। विगत 3 वर्षों में ढाई लाख से 3 लाख रुपए शुद्ध लाभ प्राप्त हो रहा है। जिससें शासन की योजनाओं से लाभान्वित होने के साथ साथ शासन की नवीन तकनीकों को ग्रामीणो को उपलब्ध हो पा रही है।

70 पटवारियों के 35 दल बनाकर 7 जून तक सीमांकन प्रकरणों का करें निराकरण: कलेक्टर

बैतूल। कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने कहा कि बैतूल तहसील में लंबित 317 सीमांकन प्रकरणों के निराकरण हेतु 70 पटवारियों के 35 दल बनाकर 7 जून तक प्रकरणों का निराकरण करें। शासन की अन्य योजनाओं में लंबित प्रकरण समयावधि में पूर्ण हो। किसी को भी किसी प्रकार की परेशानियों का सामना न करना पड़े यह सुनिश्चित किया जाए। कलेक्ट्रेट सभागार में रविवार को आयोजित बैठक में जिले के राजस्व सहायक, पटवारी एवं आरआई से राजस्व प्रकरणों के संधारण, प्रस्तुतीकरण एवं निराकरण की प्रक्रिया पर कलेक्टर बिन्दूवार चर्चा कर रहे थे। उन्होंने राजस्व प्रकरणों के निराकरण के लिए एक-एक व्यक्ति से एक-एक स्टेप की जानकारी प्राप्त की। वे लंबित राजस्व प्रकरणों के शीघ्र निराकरण पर कर्मचारियों के साथ रूबरू चर्चा कर रहे थे। कलेक्टर ने राजस्व निरीक्षकों से कहा कि राजस्व वसूली की कार्रवाई में आप लोग तेजी लाए। आगामी सितंबर माह तक वसूली के लक्ष्य को हर हाल में पूरा करें। इसके अलावा एनपीसीआई एवं ई-केवायसी को समय सीमा में पूर्ण करें। सीएम हेल्पलाइन में दर्ज प्रकरणों का त्वरित

निराकरण करें। ई-केवायसी एलआर.लिंकिंग, आधार सीडिंग सहित अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर करने के निर्देश दिए गए। साथ ही गिरदावरी दो से तीन दिन में शत प्रतिशत पूर्ण करें। बैठक में अतिक्रमण हटाने, अवैध कॉलोनी पर कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने अधिकारियों से कहा कि मुख्यमंत्री हेल्पलाइन के प्रकरणों में गंभीरता एवं अति संवेदनशीलता के साथ काम करें। सीएम हेल्प लाईन पोर्टल आपके कार्यों का एनालिसिस करता है। आप जब अपने-अपने विभागों को मुख्यमंत्री हेल्पलाइन में की गई शिकायतों के निराकरण को ए कैटेगरी में रखेगे, तभी जिला ए कैटेगरी में आएगा। कलेक्टर ने अधिकारियों को साफ शब्दों में हिदायत दी कि मुझे ए कैटेगरी से नीचे की स्थिति मंजूर नहीं। सीएम हेल्पलाइन पर दर्ज लंबित शिकायतों का समय सीमा में गंभीरता से निराकरण करें।

सितंबर माह तक वसूली लक्ष्य करें पूरा

जिला दंडाधिकारी श्री सूर्यवंशी ने राजस्व निरीक्षकों से कहा कि राजस्व वसूली की कार्रवाई में आप लोग तेजी लाए। आगामी माह सितंबर 2024 तक राजस्व के टारगेट को पूरा करें। उन्होंने कहा कि नोटिस का तामिल कराना प्रकरण का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। नोटिस तामिल कराने के लिए जमादार पर ही निर्भर न रहे। उसकी अपनी सीमाएं है। पटवारी के माध्यम से नोटिस तामिल कराएं। पटवारी फील्ड में कार्य करते है इसलिए नोटिस तामिल कराना उनके लिए सहज होगा। नोटिस तामिल कराने के लिए विभिन्न संचार माध्यमों का भी उपयोग कर सकते है।

प्राप्त आवेदनों पर तत्काल कार्रवाई प्रारंभ करें

कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने कहा कि आप लोग प्रकरणों को समय सीमा में निपटाने का इंतजार न करें बल्कि आवेदन प्राप्त होते ही उस पर तत्काल कार्रवाई प्रारंभ करें। जनसुनवाई में एवं सीधे आने वाले अधिकतर आवेदन राजस्व संबंधी शिकायतों के होने से राजस्व प्रकरणों के निराकरण के लिए मुहिम चलाकर कार्रवाई की गई थी। इसके बावजूद भी अधिकतर शिकायतें राजस्व से संबंधित ही आती है। जिसमें नक्शे, भूमि नामांकन, सीमांकन आदि संबंधित शिकायतें है। उन्होंने कहा कि प्रकरणों का संधारण हैड के अनुसार करें, न कि तिथिवार। इससे प्रकरणों के संधारण में सहूलियत होगी।

पुराने प्रकरणों के निराकरण में प्राथमिकता दें

श्री सूर्यवंशी ने राजस्व आरसीएमएस में दर्ज प्रकरणों पर चर्चा करते हुए कहा कि नागरिकों की सुविधा के लिए लोक सेवा केंद्र के अलावा अब एमपी ऑनलाईन और सीएससी के कियोस्क के माध्यम से भी आरसीएमएस पर प्रकरण दर्ज कराए जा रहे है। राजस्व अधिकारियों द्वारा समय सीमा पार कर चुके लंबित प्रकरणों को चिन्हित कर न्यायालय में नियमित सुनवाई आयोजित कर नामांतरण, बंटवारा, अभिलेख दुरुस्ती के प्रकरणों का निराकरण किया जाए। पुराने प्रकरणों के निराकरण में प्राथमिकता दे।

प्रसिद्ध रामदेव बाबा मंदिर की दो दान बेटियों से उड़ाए चोरों ने लाखों,

जलाराम मंदिर मे भी किया असफल प्रयास,दान पेटियों से 15 से 2 लाख रुपए तक चोरी जाने का अनुमान

बैतूल/मुलताई। बीती रात चोरों ने मुलताई नगर के प्रसिद्ध मंदिर को निशाना बनाया और बैतूल रोड पर स्थित रामदेव बाबा मंदिर की दो दान पेटी से अनुमानित 15 लाख से दो लाख तक रुपए चोरी किए जाने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। उक्त राशि का उल्लेख बाबा रामदेव मंदिर ट्रस्ट ने पुलिस से की शिकायत में किया है। भगत सिंह वार्ड स्थित रामदेव बाबा मंदिर में चोरी को अंजाम देने के पहले चोरों ने नागपुर रोड स्थित जलाराम मंदिर को भी निशाना बनाने का प्रयास किया था किंतु वहां सफलता नहीं मिली। घटना के संबंध में प्राप्त जानकारी के अनुसार बीती रात लगभग 3 बजे चोरों ने बैतूल रोड मुख्य मार्ग से बाबा रामदेव मंदिर पहुंचे जहा के मेन गेट का ताला तोड़कर बाबा रामदेव मंदिर मे प्रवेश किया इसके बाद मंदिर के निचले भाग में पहुंचकर

गर्भगृह के सामने रखी दान पेटी को तोड़कर लगभग 15 लाख से 2 लाख रुपए चोरी कर ले गए दोनों दान पेटियां आठ माह से नहीं खोली गई थी । घटना की जानकारी उस वक्त लगी जब पुजारी आनंद तिवारी पूजा करने सुबह मंदिर पहुंचे । घटना की सूचना मुलताई पुलिस को दिए जाने के बाद पुलिस पुलिस जांच कर रही है फोरेंसिक एक्सपर्ट एवं डॉग स्कॉड मंदिर में पहुंचकर सुराग तलाश कर रही है। मंदिर के समीप स्थित मकान के आजू-बाजू मिले सीसीटीवी फुटेज में चोरों की संख्या दो बताई जा रही है कुछ सीसीटीवी फुटेज जलाराम मंदिर के आसपास से भी मिलने के समाचार मिले हैं।

थाना मुलताई में की गई शिकायत-

इस संबंध में बाबा रामदेव ट्रस्ट द्वारा थाना मुलताई में की गई शिकायत में कहा गया है कि रामदेव बाबाजी मंदिर जो कि भगतसिंह वार्ड बैतूल रोड मुलताई में स्थित है। 25 मई को रात्रि में लगभग सी. सी. टी. व्ही कैमरे की टाइमिंग के अनुसार लगभग 2-30 बजे से 4 बजे की बीच में रामदेव बाबा मंदिर की दो नग दान पेटियों जो कि लगभग 8 माह से नहीं खुली थी जिसमें समिति के द्वारा एवं अन्य भक्तों के द्वारा इसके पूर्वानुमान अनुसार लगभग पेटियों में 15 लाख से 2 लाख के तक की राशि दान पत्र में होने का अनुमान है। सुबह 7 बजे मंदिर के पंडित जी द्वारा जानकारी प्राप्त हुई की मंदिर का ताला टुटा हुआ है, एवं दान पेटि टुटी हुई है। जिसके पश्चात मंदिर ट्रस्टीयों द्वारा थाना प्रभारी मुलताई को सूचना दी गई ।

बांका ग्राम में टाइगर का मूवमेंट होने से ग्रामीणों में दहशत, वन विभाग की टीम सर्चिंग में जुटी

बैतूल। सपुडा रिजंव टाईगर क्षेत्र से लगा होने के कारण बैतूल जिले में वन्यप्रानियों की आहाट कोई नई बात नहीं है। ताजा मामला शाहपुर ब्लॉक मुख्यालय के पास बांका ग्राम में टाइगर का मूवमेंट देखने को मिला है। कुंडी ग्राम के पास शनिवार सुबह लोगों ने पहाड़ियों पर टाइगर जैसा जंगली जानवर को घूमते देखा है, ग्रामीण इसे टाइगर बता रहे हैं। सूचना मिलते ही एसटीआर की टीम वन विभाग के साथ मिलकर सर्चिंग कर रही है। हालांकि अब तक किसी के शिकार या हमले की कोई भी खबर सामने नहीं आई है, लेकिन लोग दहशत में हैं। बताया जा रहा है कि पहाड़ी के आसपास एवं खेत में जाना तक लोगों ने बंद कर दिया है। शाहपुर ब्लॉक मुख्यालय के आसपास हमेशा टाइगर की मूवमेंट देखने को मिलती है। इसके पहले भी बीते वर्ष 18 दिसंबर को पहावाड़ी ग्राम के पास खेत के कुएं में एक तेंदुआ मृत अवस्था में मिला था। इसके अलावा करीब 3 वर्ष पहले भौंरा रेंज में आने वाले नागपुर-इटारसी रेलवे ट्रैक पर एक बाघिन शावक की ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई थी। ज्ञात हो कि टाइगर का मूवमेंट अक्सर क्षेत्र में देखने को मिलता है।

छात्राएं पढ़ाई के साथ-साथ सीख रहीं ब्यूटीशियन के कौशल

शासकीय विद्यालय केसिया की छात्राओं को दिया जा रहा ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण

बैतूल। शाहपुर विकासखंड अंतर्गत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय केसिया में छात्राओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करने हेतु 20 दिवसीय ऑन जॉब ट्रेनिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इस प्रशिक्षण में छात्राएं पढ़ाई के साथ-साथ ब्यूटीशियन के कौशल भी सीख रही हैं, जिससे वे भविष्य में स्वरोजगार के अवसर प्राप्त कर सकें। विद्यालय के प्राचार्य संतोष देशमुख और व्यावसायिक प्रशिक्षिका कुमारी किरण मालवी के मार्गदर्शन में यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्राओं को ब्यूटी एंड वेलनेस के क्षेत्र में दक्ष बनाना है ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें। प्रशिक्षण में भाग ले रही

छात्राएं बहुत उत्साहित हैं और अपने भविष्य के लिए इस अवसर को महत्वपूर्ण मान रही हैं। एक छात्रा ने बताया, यह प्रशिक्षण हमें ब्यूटीशियन बनने की कला सिखा कर आत्मनिर्भर बनने का भी अवसर प्रदान कर रहा है।

महिलाओं के पास ही है बड़ी शक्ति: शर्मा

देवश्री नारद जयंती पर पत्रकारों का हुआ सम्मान

बैतूलं। महिलाओं के पास ही बड़ी शक्ति है। इसलिए हमें नारियों का सम्मान करना चाहिए। उक्त उद्गार रविवार को देवश्री नारद जयंती के अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार रमेश शर्मा ने अग्रसेन नर्सिंग कालेज में आयोजित कार्यक्रम के दौरान व्यक्त किए। उन्होंने आगे कहा कि महिलाओं के पास बड़ी शक्ति का उदाहरण है। हम माँ दुर्गा की बात करें, माँ लक्ष्मी बात करें, माँ अन्नपूर्णा की बात करें, इन सभी देवियों के पास बड़ी शक्ति है। यही कारण है कि जब देवता क्षीर सागर में जाते हैं तो पहले माता लक्ष्मी को और उसके बाद नारायण को प्रणाम करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान में कुछ कहानीकारों ने ऐसी फिल्में बनाई है जिससे समाज में गलत मैसेज गया है। अगर हम बात करें तुलसीदास जी की तो जिन्होंने रामायण में समाज को जोडने का संदेश दिया है और अगर आप रामायण के सुंदरकाण्ड का पाठ करेंगे तो उसमें राष्ट्र

रक्षा का श्लोक दिया गया है। हमें वह काम करना चाहिए जिससे देश की सुरक्षा हो। इस दौरान कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार मयंक भार्गव और कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सहनगर संघ चालक संजय घिडोड़े ने भी देवश्री नारद की जयंती के ऊपर उनके जीवन पर प्रकाश डाला और उनके बताए मार्ग पर चलने का संदेश दिया।

सडक पर ही लगा ली दुकान, प्रषासन मौन

अतिक्रमण की पराकाष्ठा आई सामने, सड़क के बीचों बीच लगे ठेले

बैतूल। अतिक्रमण की अब पराकाष्ठा देखने को मिल रही है। पहले तो सड़क के किनारे दुकानें लगती थी अब कुछ लोग सड़क के बीचों बीच अतिक्रमण कर दुकान लगा रहे हैं। ऐसा एक नजारा पीडब्ल्यूडी चौक से काशीतालाब जाने वाले मार्ग पर देखने को मिला जहां सड़क के बीचों बीच हाथठेला पर दुकान लगने का मामला सामने आया है। इस नजारे को देखकर लगता है कि ना तो राजस्व, ना नगर पालिका और ना ही यातायात पुलिस शहर की यातायात व्यवस्था को सुचारू करने में रूचि नहीं दिखा रही है। अतिक्रमणकर्ताओं को अब किसी का डर भी नहीं है। नगर पालिका जो अभियान चला रही है उससे लगता है कि सिर्फ कुछ लोगों को खुश करने के लिए यह अभियान चलाया जाता है। पिछले चार दिनों से नगर पालिका की टीम कालेज रोड पर अतिक्रमण हटाने का अभियान चला रही है।

खुश करने चलता है अभियान: पिछले लंबे समय से शहर में कई बार अतिक्रमण हटाने के लिए अभियान चलाया गया। इस अतिक्रमण अभियान के चलने के बाद कुछ दिनों बाद ही अतिक्रमण वापस उसी जगह पर हो जाता है। अब चर्चा है कि नगर पालिका चेहरे देखकर अतिक्रमण अभियान चलाती है और औपचारिकता पूरी करने के बाद अभियान बंद हो जाता है। नगर पालिका कभी यह नहीं देखती है कि जहां से अतिक्रमण हटा है वहां दोबारा अतिक्रमण हो गया है। इससे साफ है कि नगर पालिका की शहर को सुंदर बनाने में कोई रूचि नहीं है। जब अधिकारियों से बात करो तो वो पूरे शहर में अतिक्रमण अभियान चलाने की बात करते हैं। लेकिन उनकी बात का कोई असर शहर में देखने को नहीं मिलता है।

हद हो गई अतिक्रमण की: शहर का प्रमुख चौक पीडब्ल्यूडी चौक जो वर्तमान में डॉक्टर अशोक साबले चौक के नाम से जाना जाता है। इस चौक से काशी तालाब जाने वाले मार्ग पर सड़क के बीचों बीच हाथठेला पर दुकान लगाए व्यक्ति को जब राहगिरों ने बताया कि शहर में अतिक्रमण करने की हद हो गई है। इस तरफ किसी का ध्यान नहीं है। जिस तरह से सड़क पर अतिक्रमण किया गया है उससे कभी भी दुर्घटना घट सकती है। अधिकारियों को इस ओर ध्यान देना चाहिए। शहर में अतिक्रमण को लेकर हरिभूमि ने पहले भी कई खबरें प्रमुखता से प्रकाशित की उसका असर भी हुआ।

इनका कहना

अभी कालेज रोड पर अतिक्रमण अभियान चल रहा है। इसके बाद शहर के दूसरे हिस्सों में भी अतिक्रमण हटाया जाएगा।

ब्रजगोपाल परते, राजस्व निरीक्षक, नपा, बैतूल

बीच सड़क पर कोई अतिक्रमण करेगा तो उसके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी। इस मामले में यातायात पुलिस जांच करेगी।

गजेंद्र केन, यातायात प्रभारी, बैतूल

पर्यावरण

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

छाया पानी की व्यवस्था करना ही मानव धर्म है

अंगारे ही तो हैं । बरसेंगे , अपने हिसाब से बरसेंगे । ये जो आग बरस रही है वह किसी और कारण से तो बरस नहीं रही है, इसके लिए हमीं लोग जिम्मेदार हैं । विकास की सीढ़ी पर चढ़ते हुए लगातार अंधाधुंध प्रकृति का दोहन करते हुए आज इस स्थिति में पहुंच गए हैं कि अब प्रायश्चित करने के अलावा कुछ बचा ही नहीं । इतनी गर्म हवाएं चल रही हैं कि सामने के सामने ही पौधे सूखते जा रहे हैं । गमले के पौधे में सुबह पानी भरिए और शाम तक ये हालात बन जाती है कि वे झुलस गए से दिखते हैं लगातार झुलसाने वाली गर्मी मार देने के लिए काफी है । यदि आप इन गर्म हवाओं की चपेट में नहीं आएं तो यह आपकी किस्मत हो सकती है या लूं से बचा लेने की सजगता और विशिष्ट कला । यह भी सच है कि बाहर निकलना ही पड़ेगा । आदमी कब तक घर में बैठे रहेगा और ऐसे कैसे काम चलेगा । हवाओं के बीच तापाघात में यदि चलना ही पड़ रहा है तो अपने आप को जतन कर चलना होगा ।

यह समय प्राकृतिक रूप से शीतल होने का है । कहीं भी सघन पेड़ की छायावली मिल जाए तो वहां बैठ जाइए । राहत मिल जायेगी । बयार का आनंद लीजिए । इसके लिए कुछ जतन करते रहिए । इस तरह गर्मी पर बातचीत जारी है । समय के साथ संवाद करते हुए समय के लिए कुछ बेहतर करते चलें । चलिए एकाद मग पानी गटक लेते हैं । एक दो मग पानी कोई असर ही नहीं होता । सब भाप बन उड़ जाता है । पेट भर जाए पर प्यास बुझती ही नहीं । सारा पानी भाप बन उड़ रहा है । कुएं, तालाब , पोखर सब सूख रहे हैं सबका पानी खत्म होता जा रहा है । यह झुलसाने वाली गर्मी यूं ही चर्चा में नहीं है । जिधर से गुजरा जाएं बस एक ही बात है कि हाय ! कैसी गर्मी पड़ रही है । लोग-बाग बस अपने को बचाने का जतन कर रहे हैं । यह समय किसी तरह से कट जाएं । फिर इस बेरहम कालखंड से बचने के लिए कुछ उपाय जतन किया जाएं ।

प्रकृति की जो सत्ता है वह बराबर से चेतावनी दे रही है कि मुझे सुनो , मुझे अनसुना कर तुम रह नहीं पाओगे । पर पता नहीं क्यों हम सब वह सुन नहीं पा रहे हैं जो प्रकृति लगातार सुना रही है । अपने अंहकार में या अपनी प्रगति को सब कुछ मान लेने में ही मशगूल हो गए हैं । प्रकृति की सत्ता को एक किनारे पर रख दिया है । या यह सोच रहे हैं कि अपना क्या ? अपन तो सब सुविधाएं इकठ्ठा कर लिए हैं । प्रकृति को बचाने के लिए वे आएं जो सबसे ज्यादा प्रकृति का नुक़सान कर रहे हैं । इस तरह एक दूसरे पर अपने विचार थोपने की जगह सबको ही प्रकृति संरक्षण के लिए आगे आने की जरूरत है । प्रकृति का जब तक हम जतन नहीं करते हैं तब तक इस बारे में कुछ भी कहने का अधिकार नहीं है । प्रकृति की सत्ता को जब तक हम सब संवेदना में, स्वभाव में नहीं लायेंगे तब तक इस दुनिया के लिए इस पृथ्वी को बचाने की दिशा में हमारी कोशिश यूं ही चर्चा का विषय ही रहेगी । हमें कोशिश कर अब अपनी जमीन पर दो पेड़ तो कम से कम छायादार लगाने ही होंगे । गमला संस्कृति से उपर उठना ही होगा । गमला भी रहे छोटे पौधे भी रहे पर बड़े पेड़ न केवल हमारा संरक्षण करते हैं बल्कि उनके आसपास न जाने कितने जीव जंतु का घर बसता है न जाने कितने पलते हैं और निरंतर वह हमारे लिए फल? लकड़ी आदि देते हैं छाया पानी की तो बात ही अलग है । प्रकृति का संरक्षण ही प्राकृतिक प्रकोप से बचाने के लिए एक मात्र सहज उपाय है ।

सड़क किनारे जो पेड़ होते थे उनका संरक्षण हर हाल में होना चाहिए । यदि सड़क का विस्तार कर रहे हैं तो दोनों तरफ हरित पट्टी का भी विस्तार करना ही होगा । आज हमारे वैज्ञानिक व तकनीकी सोच में यह शामिल होना चाहिए कि सबसे पहले पेड़ । ये रहेंगे तो हम भी बने रहेंगे । हम आप जब सिक्स लेन और एट लेन साकार कर फर्राटे से तेज रफ्तार में भाग रहे हैं तो यही पर यह सोचने का भी समय है कि इन सड़कों पर छायादार वृक्ष जितना जल्दी हो उतना जल्दी लगे । यह देश के पर्यावरण और सेहत के लिए भी जरूरी है । तालाब, पोखर, सड़क, पार्क जहां कहीं भी जमीन बची है वहां छायादार और फलदार पेड़ लगें । पेड़ों के लिए जगह बनाते चले तो स्वाभाविक रूप से वह समय आ जाएगा जिसमें हम आनंद के साथ, प्रकृति के साथ, माटी और वन संस्कृति के साथ रह सकेंगे । फिर हाय ! गर्मी हाय ! गर्मी की जगह गर्म हवाओं को बस एक मौसम व परिवर्तन के रूप में ले सकेंगे । सहज रूप में हर मौसम हमारा ध्यान खींचता है और उसी तरह गर्मी को भी लेना चाहिए पर इन दिनों गर्म हवाओं ने कुछ ज्यादा ही डरा दिया है ।

प्रेमांजलि सभा

विख्यात संतों ने ब्रह्मलीन मुद्गल जी के उत्तराधिकारी के रुप में ज्येष्ठ पुत्र प्रकाश मुदगल को सौंपी गादी

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। प्रेमांजलि सभा में जगतगुरु दिनेश आचार्य ने कहा कि पूज्य मुदगल जी ने कितनी साधना और तप किया होगा तब जाकर उन्होंने आज सुंदर आभूषण बनकर सोहागपुर को सुहागिन और आभूषित करने का काम किया है। आपने ब्रह्मलीन गृहस्थ संत पंडित मनमोहन मुदगल जी महाराज के 76वें जन्म जयंती के अवसर पर श्री शंभू दरबार पलाश परिसर में ब्रह्मलीन मुदगल जी के जेष्ठ पुत्र प्रकाश मुद्गल को उनके उत्तराधिकारी के रूप में गादी सोपीं ।? इस अवसर पर प्रेमांजलि सभा में देश के विख्यात पूज्य संतों

में जगतगुरु रामदिनेशाआचार्य जी अयोध्या, रसिक पीठआदिश्वर श्री जन्मेजय शरण जी अयोध्या , जैन संत बाल ब्रह्मचारी बसंत जी महाराज, महामंडलेश्वर गिरीश दास जी बगलवाड़, ब्रजकिशोर दास जी बोरास ,भोला स्वरूप जी कुसुमखेड़ा, मदन मोहन दास जी रेवा बनखेड़ी, हरिकिशन दास जी सुहागपुर, भगवान दास जी चांदी खेड़ी, शरण जी महाराज भरकच्छ, सीताराम जी पांडे पिपरिया, रघुनाथ दास जी रामायणी करेली,निर्मल कुमार जी शुक्ला प्रयागराज, सुरेंद्र शास्त्री जी उदयपुरा ,आलोक मिश्रा जी कानपुर ,शांति श्रेया जी अयोध्या ,आदित्य प्रकाश त्रिपाठी जी सतना ,त्रिभुवन शास्त्री जी बरेली, कृष्णानंद जी सांगाखेड़ा , विख्यात बुन्देली लोकगीत कवि पंडित राजेन्द्र सहारिया,तुलसी मानस भारती पत्रिका मध्य प्रदेश के संपादक देवेंद्र रावत आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।। इसी क्रम में संगीतमय सुंदरकांड पाठ डॉ राम सरकार ठाकुर ने प्रस्तुत किया। ज्ञातव्य है कि पलाश परिसर में ब्रह्मलीन गृहस्थ संत पंडित मनमोहन मुदगल महराज ने शंभू दरबार में आध्यात्मिक आयोजन करके चौदस को खासी ख्याति प्राप्त की थी।तभी से निरंतर उनके भक्तों की संख्या में इजाफा होता गया। उल्लेखनीय है कि ब्रह्मलीन गृहस्थ संत पंडित मनमोहन मुदगल महराज ने मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में करीबन 26से अधिक विभिन्न यज्ञों का सफ़ल आयोजन किया था। कार्यक्रम में उनके शिष्य भोपाल, भिलाई, छिंदवाड़ा ,नागपुर होशंगाबाद, करेली नरसिंहपुर गाडरवारा सहित आसपास के नगरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों के नागरिक उपस्थित थे।

पूर्व प्रदेश भाजपा प्रवक्ता राजो मालवीय की माताश्री का निधन

सुबह सवेरे सोहागपुर

पूर्व प्रदेश भाजपा प्रवक्ता सुश्री राजो मालवीय की माताश्री श्रीमति विघा मालवीय पति स्वगीर्य लक्ष्मी नारायण मालवीय का आज़ बीमारी के कारण निधन हो गया। उल्लेखनीय है कि सुश्री राजो मालवीय की माताश्री काफी दिनों से बीमार थी। उनकी अंतिम यात्रा सुबह निज निवास रामगंज से जमनी मुक्तिधाम पहुंची। उनको मुखाग्नि सुपुत्र मनोज मालवीय एवं मनीष मालवीय ने दी। उनकी अंतिम यात्रा गणमान्य नागरिकों के अलावा बावड़ी वाले मंदिर के महंत हरिकिशन दास, पैदल नर्मदा परिक्रमा करने यज्ञेश जी, क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह, जिला भाजपा कार्यालय मंत्री हंस राय, जनपद अध्यक्ष जालमसिंह पटैल, पूर्व कृषि मंडी अध्यक्ष राजा भैया पटैल, पूर्व नपाध्यक्ष संतोष मालवीय, पूर्व नपाध्यक्ष अभिलाषसिंह चंदेल,कृष्णा पालीवाल, वकील गोपाल माहेश्वरी, पूर्व व्यापारी संघ अध्यक्ष मुकेश मालवीय एवं अभय खंडेलवाल, पूर्व पार्षद अजीज खान, संजीव शुक्ला, संजीव दुबे , पत्रकार कपिल मालवीय, वकील अखिलेश मालवीय आदि शामिल थे। जमनी मुक्तिधाम में दो मिनिट का मौन रख कर उनको श्रद्धांजलि अर्पित की गई।उनके निधन पर क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह, भाजपा नेता हंस राय,पूर्व नपाध्यक्ष संतोष मालवीय आदि ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया है।

यह भी खूब..

उम्र से पहले खतरनाक बताकर बजरिया स्कूल शाला भवन तोड़ना शुरू किया..

बजरिया स्कूल का नया भवन कैसे साबित किया गया खतरनाक..!

नर्मदापुरम- संजीव डे राय

अन्ततोगत्वा बजरिया स्कूल की दीवारें तोड़ दी गई बस छत और पिल्लर ढहाएं जाना बाकी है..एक सोची समझी रणनीति के तहत बेशकीमती सरकारी रकबा यहां अतिक्रमण की भेंट चढ़ रहा है जिसे बचा पाने में सरकारी मशीनरी नाकाम हैं और कलेक्टर खुद असहाय..? इस शाला भवन में हम सन् 1962 में दाखिल हुए थे और 1967 तक हम इसमें रहे.. हमने यहां राजनीति का नहीं जीवन जीने का कक ककहरा बच्चू मासाब, मुदगल मासाब, पचौरी जी और मदनवर्मा ने ईमानदारी से सिखाया था। ईमानदारी का पट्टा लेकर भी हम अपनी प्राथमिक शाला को बचा पाने में सफल नहीं हो पाए, बुद्धिजीवी पत्रकार रहे पंडित रामदास गुबरेले की लिखी चार लाईन जो उन्होंने रसूखदार की हरकतों पर उन दिनों लिखी थी 'क' (पिता) कक्का का, 'ख' (खाओ) कक्का का और... 'ग' (गाओ) भी कक्का का !!! हमारे गुरुजन बस, यही नही सिखा पाए। उन्होंने ईमानदारी और सच्चाई की राह पर चलना सिखा दिया, उपर्युक्त लाइनें सिखाई होती तो शायद हम भी अपने बजरिया स्कूल को बचा लेते..? अपनी पाठशाला को बचा सकने के काम आते ..? लेकिन मन को सुकून है कम -से-कम सामाजिक उन सफेदपोशों के सामने दुम नहीं हिलाई जो अपनी कमीज़ को हमेशा सफेद ही बताते हैं, 2003- 04 में पाठ्य-पुस्तक निगम की अनुदान राशि से निर्मित बजरिया स्कूल शाला भवन इतनी भी खराब नहीं कि लोकनिर्माण विभाग को भवन खतरनाक लिखना पड़े... शाला भवन तोड़ने के लिए डिस्मेंटल अनुमति लेना ही मामले में षडयंत्र है वैसे भी सरकारी निर्मित भवनों की उम्र पच्चीस से तीस वर्ष आंकी जाती है फिर लाखों के निर्मित इस सरकारी शाला भवन को बीस वर्ष में लोकनिर्माण विभाग ने खतरनाक घोषित कर दिया और नगरपालिका ने उसे तोड़ना शुरू कर दिया..? टूट रहे शाला भवन को मौके पर देखकर नहीं लगता कि, लोकनिर्माण विभाग द्वारा दी गई डिस्मेंटल अनुमति वास्तविक नहीं लगती, यह तो कनपटी पर पिस्तौल अड़ाकर लिखवाई इबारत का प्रारूप है। सवाल यह भी है कि प्रदेश में पाठ्य-पुस्तक निगम द्वारा निर्मित सरकारी शाला भवन इतने घटिया स्तर वाला कैसे निर्मित हुआ.. बगैर प्राकृतिक आपदा के जो उम्र से पहले खतरनाक श्रेणी में बताया गया..! वैसे बगैर उम्र पूरी किए बजरिया स्कूल को ढहाकर किए जाने वाले नियम विरुद्ध निर्माण के शिकवा शिकायत पर प्रशासनिक तंत्र का खामोश बने रहना भी अपने आप में आश्चर्य की बात है। कलेक्टर सहित उनके अधीनस्थ उन सभी जिम्मेदारों के मुंह पर यह मसला एक तमाचा है जिनकी जबावदेही सरकारी संपत्ति को खुर्द-बुर्द होने देने से/ खुर्द-बुर्द करने से बचाने, सरकारी नष्ट होने, और सरकारी संपत्ति अतिक्रमण से बचाने का दायित्व प्रशासन के जिम्मे रहता है।

टूट रहा बजरिया याद आ रहे फैज अहमद..

टूट रहे बजरिया को देखकर न्याय प्रिय कलेक्टर फैज अहमद किदवई आज बहुत याद आ रहे हैं। जिनके अधीनस्थ नजूल अधिकारी आरएल भम्मानी, तहसीलदार प्रमोद सेनगुप्ता और उनकी फौज ने विंध्या क्लब के पीछे सरकारी जमीन अतिक्रमण से बचाने के लिए सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वाले न केवल विधायक वरन जिला पंचायत अध्यक्ष उनके पुत्र सहित एक अन्य और सुरक्षा गार्ड तक की पिटवाने में चूके नहीं की थी.. यहां तो जाली दस्तावेज के जरिए सरकारी जमीन का नामांतरण चाहने वाले रसूखदार संस्था प्रबंधक को प्रशासन ने संरक्षण दे रखा है। वह भी तब जब नगरपालिका अध्यक्ष रहते हुए अखिलेश खण्डेलवाल ने इनकी शिकायत करते हुए कलेक्टर से संबंधित दबंगों द्वारा सरकारी जमीन पर किए अतिक्रमण हटाने के लिए प्रशासनिक मदद यह लिखकर मांगी थी कि नगरपालिका अकेले अपने दम पर दबंग का अतिक्रमण हटाने के लिए कमजोर है बताया था।

पूजा अर्चना के बाद किया पेड़ का ट्रांसप्लांट

दौलत नगर की नारी शक्ति ने पेश की अनूठी मिसाल

धार। पर्यावरण संरक्षण के प्रति धार शहरवासियों में चेतना और जागरूकता बढ़ रही है.. इसका बहुत हद तक श्रेय भू माई वेलफेयर फ़ाउंडेशन (आओ सहजे धरा अभियान) को भी जाता है. दौलत नगर की नारी शक्ति ने अनूठी मिसाल पेश करते हुए, पूजा अर्चना के बाद पेड़ का ट्रांसप्लांट किया. कालोनीवासियों को पता चला कि बिल्वपत्र का जो पेड़ जो की भगवान शिव के स्वरूप माना जाता है, वह पेड़ जिस प्लॉट पर लगा था वहाँ मकान बनने जा रहा है तो वहाँ की महिलाओं ने निश्चय कर भू माई वेलफेयर फ़ाउंडेशन के सदस्यों से सम्पर्क कर यह पेड़ को कालोनी में ही, मन्दिर की जगह पर लगाने का निश्चय किया और यह यक़ीन भी दिलाया कि इसका जो भी खर्च होगा वह हम सब आप में मिलकर करेंगे. आओं सहजे धरा अभियान के अन्तर्गत संस्था के सदस्यों ने मिलकर मशीनरी का इंतज़ाम किया और अपने अनुभव के आधार पर कालोनीवासियों की इच्छा शक्ति से इस काम को अंजाम दिया गया. अगर समाज जाग्रत हो जाये तो हमे हर काम को करने के लिये सरकार पर या किसी अधिकारी पर निर्भर रहने की ज़रूरत नहीं है पहले भी हमारे पूर्वज खुद कुँए का निर्माण करते थे न कि किसी सरकार के भरोसे रहते थे.

आज जो नारी शक्ति ने उदाहरण प्रस्तुत किया है उसे देखकर सैकड़ो की संख्या में जो कालोनी के गार्डन है, वहाँ पर आजकल पेड़ की जगह गाड़िया रखने की व्यवस्था हो चुकी है उन बगीचों को फिर से हरा भरा किया जा सकता है. भू माई वेलफेयर फ़ाउंडेशन (आओ सहजे धरा अभियान) के हमारे प्रेरणा स्रोत पिराग सिह डावर कहते है कि हमारा एक ही घर है वह यह हमारी पृथ्वी है इसे संवारे धरती माँ का आचल फट गया है इसे वृक्षों से सिलना पड़ेगा।

अखिल भारत वर्षीय यादव महासभा द्वारा परिचय सम्मेलन की तैयारियों को लेकर बैठक संपन्न

धार। 2 जून को अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा द्वारा युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है । जिसकी तैयारी को लेकर आज धानमंडी स्थित राममंदिर पर एक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमे विभिन्न समितियां बना कर पदाधिकारियों को दायित्व सोपे गये। सभी ने अपनी अपनी जिम्मेदारी निभाने का संकल्प लेकर कार्यक्रम को सफल बनाने का आव्हान किया- इस अवसर पर ज़िलाध्यक्ष भोला यादव , प्रदेश सचिव कन्हैयलाल यादव , सोहन यादव , हेमू यादव (गवली) , ओम यादव ,सुशील यादव , चुंगा यादव , प्रकाश यादव , ओम प्रकाश यादव , राजा यादव- बिल्लौदा , राजू यादव -धानमंडी ,ओम जी चौहान , मुन्ना जी चौहान , प्रीतेश यादव- नौगाँव ,आत्माराम जी सेठ , कैलाश (धर्म) यादव , शशी यादव , सुनील यादव-ज्ञानपुरा, आदि उपस्थित थे । जानकारी शुभम् यादव ने दी ।

अनूठी अल्पबचत से वृद्धाश्रम को भेंट किया पानी मोटर का सेट

धार। महिलाएं भी अल्प बचत व समाजसेवा के कार्य में पीछे नहीं है। ऐसा ही अनुकरणीय समाजसेवा का कार्य राजा भोज की धारानगरी में देखने को मिला। धार में जीजा माता महिला मंडल का महिला समूह प्रतिमाह बीसी करता है। बीसी में प्रति महिला परिवार द्वारा 100 रुपये की राशि समाज सेवा कार्यों के लिए एकत्रित करता है। इसी राशि से निःस्वार्थ समाजसेवा के कार्य किये जाते है। 2012 से यह कार्य आरंभ किया। पहले वर्ष वृद्धाश्रम में फ्रीज व साउंड सिस्टम भेंट दिया। पिछड़ी बस्तियों में स्वच्छता व पौष्टिक आहार के शिविर लगाए। मानसिक रोगी आश्रम में अस्पताल हेतु सहयोग दिया तो कभी स्कूलों में सामग्री वितरित की। इसी क्रम में श्रद्धालय वृद्धाश्रम में पानी मोटर का कम्प्लीट सेट प्रदान किया। संस्था को इस हेतु चैक प्रदान किया। इस अवसर पर वृद्धाश्रम संचालन सचिव ने डॉ दीपेंद्र शर्मा ने सभी बुजुर्गों की ओर से उपयोगी भेंट के लिए आभार प्रकट किया व निरन्तर अनुकरणीय सेवा कार्य के लिए बधाई दी। आयोजन में अवसर पर बड़ी संख्या में जीजामाता महिला मंडल सदस्य रुचि नायकवाड़े, भावना पवार, अनीता म्हाले, नंदा मुरमकर, भारती गुंजाल, अर्चना मुकाती, छाया गुंजाल, भारती कराले, अंजू चौधरी, लक्ष्मी सेठी, संध्या एलवंडे, धनबाई सोलंकी, राजकुअर मंडलोई, अनीता वर्मा, राजेश्वरी शुक्ला, अनीता वर्मा, अनीता शर्मा, भारती सावंत, दिव्या शक्तावत, मंगला बूटे व कल्पना बूटे, दीपाली म्हाले, रेणुका गुंजाल, अनीता कराले प्रेमलता शर्मा, योगिता पुराणिक, संगीता मुरमकर, मृदुल नाडकर, कविता शिंदे, सेलबाला ताई, विद्या मुरमकर वृद्धाश्रम के सत्कार अधिकारी रामकिशोर पांडेय व रानी पंवार व विद्या गुंजाल उपस्थित थे। जानकारी मीनाक्षी लहरे ने दी।

स्वयं प्रकाश स्मृति सम्मान की प्रविष्टियां आमंत्रित

नईदिल्ली। साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में कार्यरत संस्थान 'स्वयं प्रकाश न्यास' ने सुप्रसिद्ध साहित्यकार स्वयं प्रकाश की स्मृति में दिए जाने वाले वार्षिक सम्मान के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित की हैं। न्यास द्वारा जारी विज्ञप्ति में बताया गया कि राष्ट्रीय स्तर के इस सम्मान में क्रमशः कहानी, उपन्यास और नाटक विधा की किसी ऐसी कृति को दिया जाएगा, जो सम्मान के वर्ष से अधिकतम छह वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई हो। 2024 के सम्मान के लिए 1 जनवरी 2020 से 31 दिसंबर 2023 के मध्य प्रकाशित पुस्तकों पर विचार किया जाएगा। इस वर्ष यह सम्मान नाटक विधा को दिया जाएगा। कृतिकार की आयु सीमा 50 वर्ष रखी गई है। सम्मान के लिए तीन निर्णायकों की एक समिति बनाई गई है जो प्राप्त प्रस्तावों पर विचार कर किसी एक कृति का चुनाव करेगी। सम्मान में ग्यारह हजार रुपये, प्रशस्ति पत्र और शॉल भेंट किये जाएंगे। न्यास द्वारा जारी विज्ञप्ति में बताया गया कि मूलतः राजस्थान के अजमेर निवासी स्वयं प्रकाश हिंदी कथा साहित्य के क्षेत्र में मौलिक योगदान के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने ढाई सौ के आसपास कहानियाँ लिखीं और उनके पांच उपन्यास भी प्रकाशित हुए थे। इनके अतिरिक्त नाटक, रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध और बाल साहित्य में भी अपने अवदान के लिए स्वयं प्रकाश को हिंदी संसार में जाना जाता है। उन्हें भारत सरकार की साहित्य अकादेमी सहित देश भर की विभिन्न अकादमियों और संस्थाओं से अनेक पुरस्कार और सम्मान मिले थे। उनके लेखन पर अनेक विश्वविद्यालयों में शोध कार्य हुआ है तथा उनके साहित्य के मूल्यांकन की दृष्टि से अनेक पत्रिकाओं ने विशेषांक भी प्रकाशित किए हैं। 20 जनवरी 1947 को जन्मे स्वयं प्रकाश का निधन कैंसर के कारण 7 दिसम्बर 2019 को हो गया था। बनास जन के सम्पादक और युवा आलोचक डॉ. पल्लव को स्वयं प्रकाश स्मृति सम्मान का संयोजक बनाया गया है, वे इस सम्मान से सम्बंधित समस्त कार्यवाही का संयोजन करेंगे। सम्मान के लिए प्रविष्टियाँ डॉ पल्लव को 15 अगस्त 2024 तक बनास जन के पते (393, डीडीए, ब्लॉक सी एंड डी, शालीमार बाग, दिल्ली - 110088) पर भिजवाई जा सकेगी।

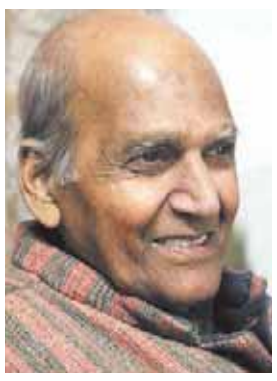

सत्ता का सर्कस

दिनेश गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

ओबीसी वोटर को जोड़ने की रणनीति में फंसी ममता

दे छठवें चरण के मतदान से पहले पश्चिम बंगाल में जिस तरह अन्य पिछड़ा वर्ग के आरक्षण का मामला तूल पकड़ा है,उसके बाद विरोधियों को भी यह मानना चाहिए कि भारतीय जनता पार्टी अपनी चुनावी रणनीति पर लंबे समय से काम कर रही थी। पिछले सप्ताह ही राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग ने पंजाब एवं पश्चिम बंगाल सरकार को सरकारी नौकरियों में पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षण सीमा बढ़ाने के निर्देश दिए थे। पश्चिम बंगाल में पिछड़ा वर्ग की जो सूची है,उसे संशोधित करने के निर्देश भी आयोग की ओर से दिए गए थे। लोकसभा चुनाव की प्रक्रिया और आचार संहिता के बाद भी आयोग ने सूची में संशोधन के मामले को हवा ऐसे ही तो नहीं दी होगी? आयोग के अध्यक्ष की यह टिप्पणी भी रणनीति का हिस्सा रही होगी कि इससे हिन्दू पिछड़ा वर्ग को न्याय मिलेगा? कोलकाता हाईकोर्ट ने बंगाल सरकार के जिस ओबीसी आरक्षण की सूची को निरस्त किया है,उस पर भी राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग पिछले एक साल से लगातार काम कर रहा था। छठवें चरण के मतदान से ठीक पहले आए पश्चिम बंगाल हाईकोर्ट के निर्णय से मुद्दा एक बार फिर धर्म आधारित आरक्षण पर आ गया। कर्नाटक में भी मुस्लिम आरक्षण का मुद्दा आया था। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों को मौजूदा राजनीति की मांग को समझते हुए पश्चिम बंगाल हाईकोर्ट के फैसले का स्वागत भी किया। लेकिन, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के बयान के कारण यह माना गया कि वे हाईकोर्ट के फैसले से बौखला गई हैं। हाईकोर्ट के फैसले को भाजपा सरकार क फैसला मानकर उसे अस्वीकार करने से ममता बनर्जी का अल्पसंख्यक प्रेम सामने आ गया। बाद में (शायद गठबंधन के सदस्यों की समझाइश पर) ममता बनर्जी ने कहा कि वे हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ अपील करेंगी। लेकिन, एक फैसले को अस्वीकर करने के बयान से जो नुकसान उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में विपक्ष को होना था,वह शायद हो चुका है।

शनिवार को है छठवें चरण का मतदान

छठे चरण में 25 मई को जिन सीटों पर मतदान होना है उनमें उत्तर प्रदेश की चौदह, हरियाणा की सभी दस, बिहार और पश्चिम बंगाल की आठ-आठ, दिल्ली की सभी सात, ओडिशा की छह और झारखंड की चार सीटें शामिल है। वहीं सबसे कम जम्मू-कश्मीर की एक सीट पर भी लोग वोट डालेंगे। 2019 में इन 58 में से 40 सीटें भाजपा ने जीती थीं। वहीं दूसरे स्थान पर बसपा के खाते में चार सीटें गई थीं जबकि कांग्रेस का खाता भी नहीं खुला था। पिछले चुनाव में इन सीटों पर कुल 64.22 प्रतिशत फीसदी वोट पड़े थे। सबसे ज्यादा 84.59 फीसदी मतदान पश्चिम बंगाल में ही जिन सीटों पर शनिवार को वोट डाले जाएंगे उनमें चर सीटें अभी बीजेडी के पास हैं। यह सीटें उड़ीसा की हैं। जबकि जेडीयू 3, टीएमसी 3, एलजेपी 1, आजसू 1 सीट पिछली बार जीती थीं। 543 लोकसभा सीटों में पांचवे फेज तक 429 सीटों पर मतदान हो गया है। 25 मई तक कुल 487 सीटों पर मतदान पूरा हो जाएगा। आखिरी और सातवें फेज में 56 सीटों पर वोटिंग होगी।

ओबीसी सूची पर सियासत की रणनीति की कहानी

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग ने पिछले साल पश्चिम बंगाल का दौरा किया था। वहां दिए जा रहे आरक्षण की स्थिति की समीक्षा की थी। अधिकारियों द्वारा दी गई जानकारी में बताया गया कि ओबीसी की सूची में वहां 179 जातियां हैं, जिनमें से 118 मुस्लिम वर्ग के हैं। इस बारे में आयोग ने अधिकारियों से प्रतिप्रश्न किया गया तो बताया गया कि कल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीआरआइ) की रिपोर्ट के आधार पर राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग ने इसे लागू कराया है। 2011 से पहले ओबीसी में 108 जातियां शामिल थीं। इनमें 53 मुस्लिम और 55 हिंदुओं की थीं। 2011 के बाद राज्य सरकार ने 71 नई जातियों को ओबीसी सूची में शामिल किया। इनमें 65 मुस्लिम और छह हिंदू हैं, जबकि राज्य की आबादी में 70.5 प्रतिशत हिंदू और 27 प्रतिशत मुस्लिम हैं। इसी तरह मेडिकल कालेज, उच्च शिक्षण संस्थान सहित भर्तियों में आरक्षण के आंकड़े भी राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग ने दिए। उसके मुताबिक, 91.5 प्रतिशत आरक्षण का लाभ मुस्लिम ओबीसी को दिया गया। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग का कहना है कि वहां मुस्लिमों को उनकी वंशावली के अनुसार नहीं, व्यवसाय देखकर ओबीसी में दर्ज किया गया है। मुस्लिमों को अनुचित लाभ देने के लिए गलत प्रक्रिया अपनाई गई। राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग की रिपोर्ट के अनुसार कई जिले ऐसे हैं, जहां ओबीसी वर्ग में शामिल किए गए अधिकांश लोग बांग्लादेशी घुसपैठिए हैं। बहुतेरे ऐसे मुस्लिम हैं, जो पहले हिंदू थे और बाद में मतांतरण कर लिया। जब उनकी संख्या और मतांतरण का वर्ष पूछा गया तो जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई।

बिहार के जातीय जनगणना के बाद सक्रिय हुआ आयोग

दरअसल राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग आरक्षण को लेकर अति सक्रिय तब हुआ जब बिहार में जातीय जनगणना सफलतापूर्वक हे गई। आरक्षण का कोटा भी राज्य सरकार ने बढ़ा दिया। बिहार को लेकर आयोग के पास एक शिकायत आई। इस शिकायत में कहा गया कि नॉन क्रीमीलेयर को ओबीसी का प्रमाण पत्र नहीं दिया जा रहा। यह भी शिकायत की गई कि कुर्मी महतो समुदाय के लोगों को जो प्रमाण पत्र दिए जा रहे हैं, उनमें उन्हें छोटा नागपुर का बताया जा रहा है, जो अब झारखंड में है।

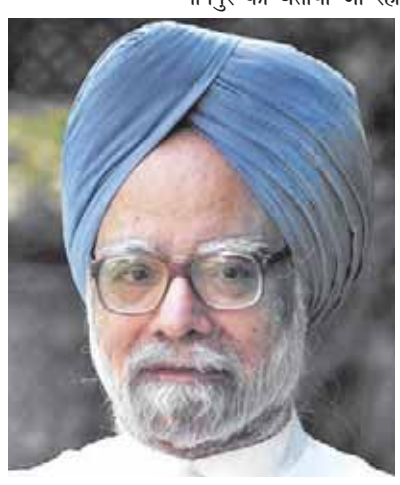

सरकार के ही पुराने आदेश के अनुसार वह प्रमाण पत्र अमान्य हैं। उन्होंने कहा कि ओबीसी वर्ग के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण कोटा निर्धारित है। पंजाब में अनुसूचित जाति को 25 प्रतिशत और ओबीसी को मात्र 12 प्रतिशत दिया जा रहा है। 13 प्रतिशत अनुपयोगी है। वहां की सरकार ने आश्वस्त किया है कि वे सुधार कर रहे हैं। पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार है। आयोग ने इसी तरह राजस्थान में सात जिले आदिवासी क्षेत्र घोषित हैं। वहां अन्य पिछड़ा वर्ग को आरक्षण दिया ही नहीं जा रहा। सरकार ने गलती मानते हुए सुधार के लिए आश्वस्त किया है। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (एनसीबीसी) ने पंजाब और पश्चिम बंगाल में सार्वजनिक रोजगार में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए आरक्षण कोटा बढ़ाने की सिफारिश की थी। राष्ट्रीय आयोग ने पश्चिम बंगाल सरकार को कहा है कि राज्य में आरक्षण का दायरा 45 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत किया जाए और ओबीसी आरक्षण का दायरा 5 प्रतिशत बढ़ाते हुए 17 प्रतिशत से बढ़ाकर 22 प्रतिशत किया जाए। आयोग ने बंगाल सरकार को यह भी कहा कि वह आरक्षण की सीमा बढ़ाने के साथ ही मुस्लिम ओबीसी सूची को जल्द से जल्द दुरुस्त करे। ताकि आरक्षण के असल हकदार हिंदू जातियों का इसका फायदा ठीक से मिल सके। हाईकोर्ट के फैसले के बाद ममता बनर्जी भड़क रही हैं तो इसके पीछे राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग की ओर से मिले निर्देश इसकी पृष्ठभूमि में शामिल है।

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग की धार्मिक आरक्षण की नीति

पश्चिम बंगाल की ओबीसी सूची पर हाईकोर्ट के निर्णय से पहले राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग जांच में ये पाया है कि राज्य सरकार की नौकरियों में भर्ती में ए कैटेगरी के ओबीसी वर्ग के नियुक्ति में 91.5 प्रतिशत लाभ मुस्लिम ओबीसी को मिला है जबकि हिन्दू ओबीसी को मात्र 8.5 प्रतिशत ही फायदा मिल पा रहा है. वहीं बी कैटेगरी वर्ग के ओबीसी को भर्ती में मिलने वाले फायदों में 54 प्रतिशत हिंदू ओबीसी थे और 45.9 प्रतिशत मुस्लिम ओबीसी जातियों के लोगों को फायदा हुआ। हाईकोर्ट के निर्णय से कुछ दिन पहले ही राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष हंसराज अहीर ने कहा था कि ओबीसी वर्ग के लाभार्थियों में मुस्लिम वर्ग की बहुलता उन्हें खास फायदा पहुंचाने के हिसाब से बनाई गई व्यवस्था है। हाईकोर्ट ने अपने ताजा फैसले में कहा कि राजनीतिक उद्देश्य के लिए मुस्लिमों के कुछ वर्गों को ओबीसी आरक्षण दिया गया जो लोकतंत्र और पूरे समुदाय का अपमान है। इतना ही नहीं कोर्ट ने कहा कि जिन समुदायों को आयोग ने ओबीसी आरक्षण दिया गया वो जल्दबाजी में दिया गया क्योंकि यह ममता बनर्जी का चुनावी वादा था और सत्ता हासिल करते ही इसे पूरा करने के लिए असंवैधानिक तरीका अपनाया गया।

बहुसंख्यक वर्ग होगा बंगाल में एकजुट

कलकत्ता हाई कोर्ट का जो फैसला आया है, उस फैसले को बंगाल के मुस्लिमों के लिए बड़े झटके के तौर पर देखा जा रहा है। कोर्ट का ये फैसला ममता सरकार के लिए भी बड़ा झटका माना जा रहा है। ममता सरकार ने साल 2012 में एक कानून लागू किया था। इस कानून में ओबीसी वर्ग के लिए सरकारी नौकरियों में आरक्षण का प्रावधान था। कोर्ट ने 2012 के उस कानून के प्रावधान को भी रद्द कर किया। दरअसल, पश्चिम बंगाल में ओबीसी आरक्षण की पूरी कहानी पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के कार्यकाल में गठित सच्चर कमेटी की रिपोर्ट पर आधारित है। उस रिपोर्ट में देश में मुस्लिम समुदाय की स्थिति के बारे में विस्तृत बातें की गई थीं। रिपोर्ट में कहा गया था कि पश्चिम बंगाल सरकार के कर्मचारियों में केवल 3.5 फीसदी ही मुस्लिम थे। इसी को आधार बनाकर 2010 में पश्चिम बंगाल की वाम मोर्चा सरकार ने 53 जातियों को ओबीसी की श्रेणी में डाल दिया और ओबीसी आरक्षण सात फीसदी से बढ़ाकर 17 फीसदी कर दिया। इस तरह उस वक्त करीब 87.1 फीसदी मुस्लिम आबादी आरक्षण के दायरे में आ गई। लेकिन, 2011 में वाम मोर्चा की सरकार सत्ता से बाहर हो गई और उसका यह फैसला कानून नहीं बन सका। बाद में ममता बनर्जी ने इसे अमलीजामा पहनाय। बंगाल सरकार के अल्पसंख्यक विभाग की रिपोर्ट में कहा गया था कि 2011 से 2015 के बीच पश्चिम बंगाल सर्विस कमिशन की भर्तियों में 9.01 फीसदी अल्पसंख्यकों का चयन हुआ. इस अवधि में पश्चिम बंगाल कर्मचारी चयन आयोग की भर्तियों में 15 फीसदी अल्पसंख्यक चयनित हुए. ठीक इसी तरह पश्चिम बंगाल म्युनिसिपल सर्विस कमिशन की भर्तियों में 12.5 फीसदी अल्पसंख्यक चयनित हुए. राज्य में मुस्लिम समुदाय के लोगों की आबादी 2.47 करोड़ यानी 27 फीसदी के करीब है।

संविधान पर चर्चा पर रोक के मायने

शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट ने उस याचिका को खारिज कर दिया जिसमें 48 घंटे के भीतर मतदान के आंकड़े जारी करने की मांग की गई थी। याचिका निरस्त होने से सबसे ज्यादा राहत की सांस चुनाव आयोग ने ही ली है। चुनाव आयोग ने दो दिन पहले ही कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्षों को मर्यादा बनाए रखने की सलाह दी थी। ही दोनों पार्टियों के स्टार प्रचारकों को धार्मिक व सांप्रदायिक बयानबाजी नहीं करने का निर्देश दिया है। बीजेपी को उन भाषणों को रोकने को कहा , जिनसे समाज दो टुकड़ों में बंट सकता है। इसके बाद भी बंगाल का ओबीसी आरक्षण धार्मिक रंग में रंग गया। चुनाव आयोग ने कांग्रेस पार्टी से कहा कि वह भारत के संविधान को लेकर गलत बयानबाजी न करें। जैसे संविधान खत्म किया जा सकता है। इसके अलावा अग्निवीर योजना पर चुनाव आयोग ने कांग्रेस से सुरक्षाबलों का राजनीतिकरण नहीं करने और रक्षा बलों की सामाजिक-आर्थिक संरचना के बारे में विभाजनकारी बयान नहीं देने को कहा है। आयोग की इस नसीहत के पीछे भी कहीं न कहीं भाजपा की रणनीति ही दिखाई देती है। अग्निवीर और संविधान संशोधन के जरिए आरक्षण समाप्त करने का मुद्दा राजनीतिक लिहाज से कांग्रेस का मजबूत हथियार माने जा रहे थे। चुनाव के आखिरी चरण में इस पर रोक से ज्यादा अंतर नहीं आना है।

भोपाल के कोलार इलाके में 3 घरों के ताले टूटे

बर्थडे सेलिब्रेशन में गया था परिवार, नकदी-जेवरात ले भागे चोर

भोपाल (नप्र)। भोपाल के दानिश हिल्स व्यू कॉलोनी में शनिवार रात चोरों ने 3 घरों में धावा बोल दिया। दो घरों से चोर नकदी और जेवरात लेकर चंपत हो गए। एक मकान से आरोपी खाली हाथ लौट गए। कोलार पुलिस ने फुटेज के आधार पर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। कोलार थाने के एसआई माधव सिंह ने बताया- दानिश हिल्स व्यू कवर्ड कॉलोनी की रहने वाली सीमा राठौर के घर चोरी की वारदात हुई है। उनके पति मुंबई में एक ऑयल रिफाइनरी फर्म में जॉब करते हैं। सीमा ने पुलिस को बताया कि उनकी कॉलोनी में रहने वाली फ्रेंड के बच्चे का शनिवार को बर्थडे था। जिसका सेलिब्रेशन सहेली के घर में ही था, देर रात तक पार्टी चली। ऐसे में हम उन्हीं के घर रुक गए। सुबह जब अपने घर लौटी तो देखा की मैन गेट का ताला टूटा था। अंदर रखा सामान बिखरा हुआ था। अलमारी में रखी 25 हजार की नकदी गायब थी। चोर लॉकर तोड़ने में नाकाम हो गए थे। जिसमें कीमती जेवरात रखे थे।

दो और मकान में की वारदात: सीमा के पड़ोस में रहने वाले अविनाश राय के घर से बदमाश चांदी के जेवरात, सिक्के और सोने के कड़े ले गए। इसी के साथ विकास खंडेलवाल के मेन गेट का ताला तोड़ने के बाद बदमाश अंदर दाखिल होने में नाकाम होकर यहां से खाली हाथ लौट गए।

ओंकारेश्वर में श्रद्धालुओं ने की नारेबाजी-हंगामा

पुजारी 300-300 रुपए लेकर करा रहे थे दर्शन; भक्त भड़के, बोले- वीआईपी दर्शन बंद करो

खंडवा (नप्र)। ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर में रविवार सुबह दर्शन की कतार में लगे श्रद्धालुओं का गुस्सा फूट पड़ा। उन्होंने वीआईपी दर्शन के खिलाफ नारेबाजी कर दी। करीब एक घंटे तक हंगामे का माहौल रहा। मंदिर प्रशासन के जल्द दर्शन के आश्वासन के बाद मामला शांत हुआ। छुट्?टी वाला दिन होने की वजह से यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे थे। लंबी कतारें लगी थीं। 2-3 घंटे में दर्शन हो पा रहे थे। दूसरी तरफ, मंदिर के पंडे-पुजारी 300 रुपए प्रति व्यक्ति लेकर वीआईपी दर्शन करवा रहे थे। प्रशासन ने वीआईपी दर्शन पर प्रतिबंध लगा रखा है। इसके बावजूद अवैध वसूली जारी है।

पैसे लेकर अलग रास्ते से करवा रहे थे दर्शन

सुबह 10 बजे मंदिर प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी शुरू हो गई। लोगों ने 'वीआईपी दर्शन बंद करो, बंद करो' के नारे लगाए। कतार में लगे खंडवा के मूंदी निवासी तरुण गुप्ता का कहना है कि मंदिर के पुजारी श्रद्धालुओं से पैसे लेकर अलग रास्ते से ले जाकर दर्शन करवा रहे थे। वे चिल्ला रहे थे, 300 रुपए में दर्शन कर लो। तरुण ने इसका वीडियो भी बनाया।

5 सदस्यीय परिवार से दर्शन के 1500 रुपए लिए

तरुण के मुताबिक, पांच सदस्यीय एक परिवार ने कहा कि 1 हजार रुपए लेकर उन्हें दर्शन करवा दो लेकिन पुजारियों ने 1 रुपए भी कम नहीं किया। वे प्रति श्रद्धालु 300 रुपए में दर्शन करा रहे थे। उस परिवार से 1500 रुपए लिए और दर्शन करवाए।

दोपहर 12 बजे तक चालू थे वीआईपी काउंटर

ओंकारेश्वर मंदिर ट्रस्ट के सीईओ व पुनासा एसडीएम शिवम प्रजापत ने कहा, मंदिर में वीआईपी दर्शन की व्यवस्था है। हालांकि, रविवार को यह प्रतिबंधित रहती है लेकिन आज दोपहर 12 बजे तक वीआईपी काउंटर चालू था। जो लोग लाइन में खड़े रहते हैं, उन्हें लगता है कि नारेबाजी कर समस्या का हल हो जाएगा इसलिए वे ऐसा करते हैं। रही बात दलाली की तो प्रशासन ने पूर्व में एक दलाल को जेल भिजवाया था। लोग शिकायत करें तो हम एक्शन जरूर लेंगे। कलेक्टर अनूप सिंह का कहना है कि वे मामले की जांच करवाकर कार्रवाई करेंगे।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

कयासों का बाजार गर्म,चार जून का इंतजार

छत्तीसगढ़ में आसमानी तापमान बढ़ने के साथ ही राजनीतिक तापमान भी ऊंचाई पर है। भाजपा लोकसभा की सभी 11 सीटें जीतने का दावा कर रही है तो कांग्रेस भी चार-पांच सीटों पर ताल ठोंक रही है। दावों और प्रतिदावों का खुलासा तो चार जून को मतगणना के बाद होगा। लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद कई चीजों का खुलासा भी होगा। कयास लगाया जा रहा है कि लोकसभा चुनाव के बाद साय मंत्रिमंडल का विस्तार या फेरबदल होगा। साय मंत्रिमंडल में अभी एक स्थान रिक्त है। शिक्षा मंत्री बृजमोहन अगवाल के केंद्र की राजनीति में जाने के बाद एक मंत्री पद और खाली हो जाएगा। इस कारण कइयों के मंत्री बनने की आस जगी है। मंत्री बनने की दौड़ में नए और पुराने विधायक शामिल हैं। अब देखते हैं किसका भाग्य खुलता है। कहा जा रहा है कि लोकसभा चुनाव के बाद मंत्रालय से लेकर जिला स्तर पर प्रशासनिक फेरबदल होगा। कई जिलों के कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक बदले जाएंगे। कुछ भाजपा नेताओं को निगम-मंडल की रेवड़ी भी मिल सकती है। चार जून के बाद प्रशासनिक कामकाज में भी तेजी आएगी। इसलिए सबको इंतजार है चार जून का। लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद देश में सरकार की स्थिति भी साफ़ हो जाएगी।

कौन होंगे लघु वनोपज संघ के नए एमडी ?

माना जा रहा है कि छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज संघ के नए प्रबंध संचालक का फैसला चार जून के बाद ही होगा। राज्य लघु वनोपज संघ के वर्तमान प्रबंध संचालक अनिल राय 31 मई को रिटायर होने वाले हैं। 1990 बैच के आईएफएस अनिल साहू राज्य लघु वनोपज संघ के एमडी बनने की कोशिश कर सकते हैं। अनिल साहू अभी राज्य अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं जलवायु परिवर्तन में प्रधान मुख्य वन संरक्षक हैं। 1990 बैच के आईएफएस वी. श्रीनिवास राव अभी वन विभाग के मुखिया हैं। भाजपा राज में तेंदूपत्ता संग्राहकों को बढ़ी हुई राशि मिलेगी। माना जाता है भाजपा शासनकाल में लघु वनोपज संघ की गतिविधियां बढ़ जाती है। वैसे भी पिछले कुछ वर्षों में वनोपज संघ के काम काफी बढ़े हैं और वह चर्चा में भी है। ऐसे में सरकार किसी अनुभवी आईएफएस अफसर को यहां पोस्ट करना चाहेगी। कहा जा रहा है कि संघ में नई नियुक्ति तक अपर प्रबंध संचालक बी आनंद बाबू को कार्यभार सौंपा जा सकता है। आनंद बाबू काफी दिनों से राज्य लघु वनोपज संघ में पदस्थ हैं। 1992 बैच के आईएफएस आनंद बाबू पीसीसीएफ पद पर पदोन्नति की कतार में भी हैं। अनिल राय के रिटायरमेंट के बाद रिक्त पद पर डीपीसी होने पर आनंद बाबू पीसीसीएफ बन सकते हैं।

दक्षिण में दावेदारों की भरमार

यह तय माना जा रहा है कि बृजमोहन अग्रवाल रायपुर लोकसभा सीट जीतेंगे, ऐसे में रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट रिक्त हो जाएगी। इस कारण अभी से दावेदारों की फेहरिस्त तैयार हो गई है। कहते हैं सांसद सुनील सोनी समेत एक पूर्व विधायक और भाजपा के कई पदाधिकारियों की नजर रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट पर है। कई दावेदार ओड़िसा और झारखंड में इन दिनों चुनाव प्रचार में भी लगे हैं, जिससे पार्टी के बड़े नेताओं की नजरें इनायत हो,झ्र लेकिन लोगों का मानना है कि दक्षिण सीट पर उम्मीदवार का फैसला बृजमोहन के रुख पर निर्भर करेगा। बृजमोहन अग्रवाल 1990 से इस सीट से विधायक हैं। 2023 के विधानसभा चुनाव में इस सीट से प्रदेश में सर्वाधिक मतों से जीते भी हैं। क्या अपनी परंपरागत सीट को किसी को भी सौंप देंगे या फिर अपने परिवार या अपने खास के सुपुर्द करेंगे। इसको लेकर कयासों का बाजार गर्म है।

चुनाव बाद पीएचक्यू में उलटफेर

लोकसभा चुनाव के बाद पुलिस में क्या उलटफेर होता है, उस पर सभी की निगाहें हैं। भूपेश सरकार में प्राइम पोस्टिंग वाले अफसर अभी भी बिना काम के हैं, तो कुछ पुलिस अफसर लंबे समय से एक ही विभाग देख रहे हैं। डीजीपी अशोक जुनेजा को बदले जाने की ख़बरें सुर्खियों में आ जाती हैं। वैसे अशोक जुनेजा का कार्यकाल अगस्त तक ही है। पुलिस विभाग में डीजी पद के लिए डीपीसी भी लंबे समय से पेंडिग है। इस बीच 1994 बैच के आईपीएस जीपी सिंह की बहाली और चुनाव नतीजों के बाद पोस्टिंग की चर्चा होने लगी है। कहते हैं जी पी सिंह की बहाली के लिए कागज दौड़ने लगा है। जी पी सिंह को भूपेश बघेल सरकार में बर्खास्त कर दिया गया था। कैट से उन्हें न्याय मिल गया है। जी पी सिंह बहाल होते हैं, तो डीजी स्तर का पद मिलेगा, क्योंकि जीपी सिंह से अशोक जुनेजा के बाद अरुण देव गौतम और पवन देव ही वरिष्ठ हैं। 1994 बैच के हिमांशु गुप्ता और एस आर पी कल्लूरी भी हैं।

सिरसा का दांवपेंच

2023 के विधानसभा चुनाव के वक्त छत्तीसगढ़ कांग्रेस की प्रभारी महासचिव रही कुमारी सैलजा सिरसा से कांग्रेस प्रत्याशी हैं। सैलजा को डेंट करने के लिए भाजपा ने भगवाधारी पुराने कांग्रेसियों को वहां भेजा। जोश-जोश में नए भगवाधरियों ने सैलजा के खिलाफ आवाज बुलंद की, पर सैलजा की मानहानि नोटिस से मामला पलटी खा गया। इस बीच पूर्व मंत्री शिवकुमार डहरिया ने भगवाधारी पुराने कांग्रेसियों पर तंज कसकर छत्तीसगढ़ की राजनीति को गरमा दिया। भाजपा के लोगों ने डहरिया पर ही वार शुरू कर दिया। सिरसा से शुरू राजनीति के दांवपेंच का बवंडर छत्तीसगढ़ में क्या उथल-पुथल मचाता है, अब देखना है।

दो महिला आईएएस के भरोसे वन विभाग

सरकार ने पिछले दिनों ही 1994 बैच की आईएएस ऋचा शर्मा को वन विभाग का अपर मुख्य सचिव बनाया है। 2008 बैच की आईएएस शिखा राजपूत तिवारी वन विभाग की सचिव हैं। सरकार ने शिखा राजपूत तिवारी को सरगुजा संभाग के कमिश्नर के पद से हटाकर वन विभाग के सचिव के पद पर पदस्थ किया था। अब सरकार दोनों महिला आईएएस को वन विभाग में बनाए रखती है या फिर कुछ बदलाव, इस पर लोगों की नजर है। भाजपा की सरकार ने 2001 की आईएएस शहला निगार को कृषि सचिव बनाने के साथ 2016 बैच की चंदन त्रिपाठी को संचालक कृषि की जिम्मेदारी सौंपी थी, लेकिन कुछ महीने बाद चंदन त्रिपाठी को हटाकर सारांश मित्तर को संचालक कृषि बना दिया गया।

चर्चा में डाक्टर

आजकल रायपुर के एक डाक्टर बड़े चर्चे में हैं। चर्चा उनके प्रोफेशनल उपलब्धियों को लेकर नहीं है, बल्कि नए उद्यम को लेकर है। कहते हैं डाक्टर साहब रायपुर में एक पांच सितारा होटल बना रहे हैं। ये उस इलाके में होटल बना रहे हैं, जिस तरफ शहर बढ़ रहा है। डाक्टर साहब का शहर में एक बड़ा अस्पताल भी है। वैसे तो कोरोनाकाल भले लोगों के लिए आफ़तकाल था, लेकिन छोटे-बड़े कई अस्पतालों को उबार गया। होटल-धर्मशाला को अस्पताल में तब्दील कर कई नामी-गिरामी डाक्टरों ने चांदी काटी। अब डाक्टर अस्पताल के मुनाफे से दूसरे धंधे में हाथ आजमाएंगे ही। इसमें बुराई भी नहीं, पर कुछ अफसरों की भागीदारी की खबर ने डाक्टर साहब के नए उद्यम को सुर्ख़ियों में ला दिया है।